Vol.24, Issue 12 | Annual Subscription ₹ 480

अक्टूबर 2025

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

Rotary

लाइफटाइम अचीवमेंट का जश्न

ऊपर: पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, रो ई निदेशक के पी नागेश (बाएँ) और एम मुरुगानंदम के साथ।

ऊपर: तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन, पीएसएनए संस्थान के प्रो-चेयरमैन आर एस के रघुराम को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड भेंट करते हुए, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो चित्र में शामिल है।

बाएँ: राज्यसभा सांसद और अभिनेता कमल हासन को रो ई निदेशक मुरुगानंदम सम्मानित करते हुए, अध्यक्ष अरेज़ो और उनकी पत्नी आना मारिया भी चित्र में उपस्थित हैं।

अध्यक्ष अरेज़ो कावेरी हॉस्पिटल्स के संस्थापक डॉ एस चंद्र कुमार को अवॉर्ड भेंट करते हुए। (बाएँ से) रो ई निदेशक नागेश, तमिलनाडु के शिक्षा मंत्री अन्बिल महेश पोय्यामोळी, रो ई निदेशक मुरुगानंदम और तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन भी चित्र में शामिल हैं।

विषयसूची

12

भारत में रोटरी सेवा सबसे अधिक है: रो ई अध्यक्ष

22

रोटरी,आशा की जीवनरेखा

36

शिक्षा: सफलता की सीढ़ी

38

एंड पोलियो शो ने अरेज़ो को आश्चर्यचकित कर दिया

60

चलो सीखें कचरा प्रबंधन

72

जोधपुर के रोटेरियन ने किलीमंजारो शिखर पर लहराया रोटरी ध्वज

80

एक दिन में 50,000 पेड़ लगाना

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

ई-संस्करण अपनाएं। पर्यावरण बचाएं।

ई-संस्करण दर हुई कम

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता

₹420 से संशोधित कर

₹324 कर दी गई हैं।

प्रकृति से प्रेरित एक कथा

कवर स्टोरी हरी-भरी धरती के हमसफ़र ने मुझे गहराई से प्रेरित किया। इसमें कोटी नाटी परियोजना की झलक दिखती है, जिसका लक्ष्य पूरे भारत में एक करोड़ पौधे लगाना है। अब तक 48.2 लाख पौधे लगाए जा चुके हैं जिससे न केवल यहाँ का परिदृश्य हरा-भरा हो रहा है बल्कि एक हरित भविष्य की उम्मीद भी जग रही है। डीजीई रविशंकर डाकोजू, नील जोसेफ और उनकी पूरी टीम के अथक प्रयासों के लिए दिल से सराहना। उनके इस महत्त्वपूर्ण कार्य ने कोलार क्षेत्र में धूल, फेफड़ों के कैंसर, दमा आदि में उल्लेखनीय कमी लाकर वहाँ के लोगों के स्वास्थ्य में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। यह वास्तव में धरती माँ की रक्षा की दिशा में एक महान पहल है।

कर्नल (सेवानिवृत्त) विजयकुमार
रोटरी क्लब अलेप्पी ग्रेटर - मंडल 3211

कवर स्टोरी शानदार थी! सतत विकास और हरित ग्रह रोटरी की एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता है। ग्लोबल वॉर्मिंग आज का एक ज्वलंत मुद्दा है और यह परियोजना निश्चित रूप से अन्य रोटेरियनों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। हमारे डीजीई रविशंकर डाकोजू के उदार योगदान के लिए हार्दिक आभार, जिन्हें सही मायनों में 'प्रकृति पुरुष' कहा जाता है। इस प्रेरणादायक प्रयास को शब्दों में पिरोने के लिए रशीदा को दिल से बधाई।

अकील रस्साई
रोटरी क्लब बैंगलोर - मंडल 3191

हरित योद्धाओं – डाकोजू और जोसेफ – को हार्दिक बधाई! पोलियोप्लस अभियान के बाद रो ई की अगली बड़ी परियोजना धरती माँ को हराभरा बनाना होनी चाहिए। ताकि आज से 30 साल बाद हमारे बच्चे हमें पेड़ न लगाने के लिए दोष न दें। रोटेरियन अपने जन्मदिनों या विवाह वर्षगाँठ पर इस नेक कार्य में योगदान देकर एक नई परंपरा बना सकते हैं। इसके लिए एक बैंक खाता विवरण दिया जा सकता है ताकि लोग सीधे दान देकर इस हरित मिशन का हिस्सा बन सकें।

रमेश चारी
रोटरी क्लब बैंगलोर ऑरचर्ड्स - मंडल 3191

रो ई निदेशक मुरुगनंदम का 1:2:3 सूत्र एक सरल और प्रभावी रणनीति है जिससे 1.2 मिलियन सदस्यता की सीमा पार की जा सकती है। वह कहते हैं, ''हर एक रोटेरियन के लिए, आइए हम दो रोटारेक्टरों और तीन इंटरेक्टरों को हमारे क्लबों से जोड़ें।''

आर मुरली कृष्णा
रोटरी क्लब बेरहामपुर - मंडल 3262

जैसा कि संपादक के संदेश में उल्लेख है हमें भोजन को बर्बादी से बचाना चाहिए। विश्व भर के रोटेरियन जो ऐसा भोजन इकट्ठा करके भूखों तक पहुंचा रहे हैं, वे हम सभी के लिए प्रेरणा हैं।

अरुण कुमार दाश
रोटरी क्लब बरीपदा - मंडल 3262

संपादकीय को पढ़ने के बाद मुझे पता चला कि हम बर्बाद होने वाले भोजन के साथ ही सब्जियां, फल और मांस इकट्ठा करके जरूरतमंदों को दे सकते हैं। खाद्य अपव्यय पर जागरूकता फैलाने के लिए *रोटरी न्यूज़* का धन्यवाद। लेकिन रोटरी कार्यक्रमों में भी बहुत सारा भोजन बर्बाद होता है।

शिवा पेरूमल सुब्रमणी
रोटरी क्लब वालाजपेट
मंडल 3231

धन्यवाद रोटरी न्यूज़

आभार के साथ रोटरी क्लब मालदा की ओर से मैं *रोटरी न्यूज़* और जयश्री का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने कटहल के पौधें वितरित करने के हमारे छोटे से पर्यावरणीय प्रयास *प्रोजेक्ट ग्रीन अर्थ* को इतने सुंदर रूप से प्रस्तुत किया। पोषण सुरक्षा, सतत आजीविका और पर्यावरणीय पुनरुद्धार सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कटहल के 10,000 पौधे लगाने के हमारे संकल्प पर प्रकाश डालकर आपने इसकी पहुँच भावुक ग्राम पंचायत के हरे-भरे गाँवों से कहीं आगे तक पहुँचा दी है।

भास्कर पॉल
रोटरी क्लब मालदा - मंडल 3240

सुब्रतो बागची द्वारा लिखित पुस्तक *द डे द चैरीअट मूव्ड* पर एक सुंदर समीक्षा प्रस्तुत की गई है। यह किताब रोटेरियनों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है क्योंकि इसमें हमारे देश के कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। प्रत्येक गवर्नर को युवाओं को रोज़गारोन्मुख कौशल प्रदान करने के लिए एक कार्यक्रम तैयार करना चाहिए। रशीदा भगत द्वारा ऐसे और भी किताब-समीक्षा लेखों की प्रतीक्षा रहेगी।

राधेश्याम मोदी
रोटरी क्लब अकोला - मंडल 3030

हमारे अनुभव को प्रकाशित करने के लिए मैं किरण ज़हरा का धन्यवाद करता हूँ। खूबसूरती से लिखा गया लेख *दोस्ती से दुनिया बदल सकती है* न केवल हमारे सदर्न कैलिफ़ोर्निया की यात्रा की आत्मा को दर्शाता है बल्कि रोटरी के मूल्यों - मित्रता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सीमाओं से परे सेवा - को भी उजागर करता है। ऐसे सहयोग रोटरी के वैश्विक प्रभाव को और मजबूत करते हैं।

पीडीजी संजीव गुप्ता - मंडल 3040

हमारे क्लब की एंटी-डेंगू मुहिम, मत्तकुमरन द्वारा की गई रिपोर्टिंग की वजह से बहुत आगे निकल गई - इसने रोटरी क्लब मणिपाल हिल्स के सदस्यों की भावना, समर्पण और सेवा में मिलने वाले आनंद को सजीव रूप से दर्शाया।

एक अद्भुत पत्रिका

महीने दर महीने *रोटरी न्यूज़* एक नया रूप ले रही है, जिसमें पढ़ने के लिए ढेर सारी रोचक जानकारियाँ और लेख शामिल होते हैं। ऐसा ही एक लेख ‛महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त गांवों को मिला नया जीवन’ (अगस्त अंक) पाठकों को अपने उल्लेखनीय विषयवस्तु से आकर्षित करता है। हम रोटरी क्लब हिरानंदानी एस्टेट द्वारा की गई इस अत्यंत आवश्यक परियोजना की सराहना करते हैं। 12 बांधों के निर्माण ने पानी की कमी झेल रहे जव्हार-मोखाडा क्षेत्र के 3,000 ग्रामीणों को पानी उपलब्ध कराया। इस क्लब के सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई!

परमेश देव चौधरी

रोटरी क्लब गौहाटी साउथ - मंडल 3240

हाल ही में आपके कार्यालय की हमारी यात्रा ने हमें एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया, जब हमने *रोटरी न्यूज़* को प्रकाशित करने में लगी समर्पित मेहनत को नज़दीक से देखा। यह केवल समाचार प्रकाशित करने की बात नहीं है बल्कि रोटरी की आत्मा को संजोकर उसे दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का कार्य है। हम इस पत्रिका को बड़े आनंदपूर्वक पढ़ते हैं लेकिन इस यात्रा ने हमें यह दिखाया कि इसे जीवंत बनाने के लिए कितनी प्रतिबद्धता, धैर्य और टीमवर्क की आवश्यकता होती है।

नागेश केंजिगे

रोटरी क्लब चिकमगलूर कॉफ़ी लैंड

मंडल 3182

आपके द्वारा संपादित की गई इतनी सुंदर और संतुलित पत्रिका के लिए मेरी बधाई; यह हमें वर्तमान में चल रही परियोजनाओं, RFE कार्यक्रम जैसे अवसरों और वर्तमान डीजी व आने वाले वरिष्ठ रो ई नेताओं की झलक प्रदान करती है। सिर्फ एक या दो घंटे में हम रोटरी भारत में हो रही गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं - और यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं है! एक छोटा सुझाव है: कृपया इस पत्रिका को ऑनलाइन एक्सेस करने के लिए एक QR कोड भी प्रदान करें।

डॉ प्रवीण सारदा

रोटरी क्लब अहमदाबाद मेट्रो

मंडल 3055

आपकी सराहना के लिए धन्यवाद। QR कोड पहले से ही पृष्ठ 10 और 11 पर उपलब्ध है, जहाँ न्यासी प्रमुख और न्यासी के संदेश प्रकाशित किए गए हैं।

संपादक

पत्रों के संदर्भ में, तीन रोटेरियनों जिनमें पीडीजी वी आर मुत्तु (रो ई मंडल 3212) भी शामिल हैं - ने रोटरी क्लब कोडैकनाल के राजकुमार रमन की निःस्वार्थ सेवा की सराहना की है। उन्होंने हिल स्टेशन के पास 14 आदिवासी परिवारों के लिए पक्के मकान बनाए हैं। अगस्त अंक में इस सेवा परियोजना को संपादक द्वारा दी गई कवरेज से प्रेरित होकर पीडीजी मत्तु ने इन घरों में बिजली की व्यवस्था हेतु धनराशि की कमी को पूरा करने के लिए ₹1 लाख का दान भी दिया। ऐसी नवीन परियोजनाओं को अन्य रोटरी क्लबों और रोटेरियनों तक पहुँचाने के लिए बधाई क्योंकि यह निश्चित रूप से उन्हें अपने स्तर पर ऐसे ही कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।

आर श्रीनिवासन,

रोटरी क्लब बेंगलुरू जे पी नगर - मंडल 3191

जीवंत चित्रों के साथ प्रकाशित यह लेख सभी रोटेरियनों तक हमारा संदेश पहुँचाने में सफल रहा, जिससे हमारा मनोबल बढ़ा और हमें नई ऊर्जा मिली।

सुपर्णा शेट्टी

रोटरी क्लब मणिपाल हिल्स

मंडल 3182

अगस्त अंक के कवर पर एक महिला की मुस्कुराती तस्वीर ने मेरा ध्यान खींचा और मुझे आदिवासियों के लिए बनाए गए घरों की अद्भुत कहानी पढ़ने के लिए प्रेरित किया। मुझे ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण पर आधारित लेख बहुत पसंद आया क्योंकि ऐसी महिलाएं समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती हैं।

आत्माराम गुप्ता

रोटरी क्लब महाराजगंज

मंडल 3120

अगस्त अंक में कोडाई आदिवासियों के लिए बनाए गए घरों पर लेख देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। रोटरी पूरी दुनिया में बेहतर समुदायों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जो हिंदू दर्शन *सर्वे जना सुखिनो भवन्तु* के अनुरूप है।

सुरेश कुमार डी

रोटरी क्लब रायचोटी - मंडल 3160

अगस्त अंक में प्रकाशित संपादकीय संदेश *दान की महिमा* शानदार था। रो ई निदेशक मुरुगानंदम का संदेश *जब भलाई हो उद्देश्य तो रोटरी को कहें हाँ* रोटेरियनों को प्रेरित करता हैं।

डेनियल चित्तीलापिल्ली

रोटरी क्लब कलूर

मंडल 3205

रोटरी क्लब तिनसुकिया द्वारा आयोजित कृत्रिम अंग शिविर ने युवाओं को सशक्त बनाने, वरिष्ठ नागरिकों का आत्मसम्मान लौटाने और बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाने के साथ वंचितों को आशा देने का कार्य किया है। लाभार्थियों के चेहरों पर झलकती खुशी ही सब कुछ बयां कर देती है।

कलपेश मोदी

रोटरी क्लब पालनपुर डायमंड सिटी

मंडल 3055

कवर पर: रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो और उनकी पत्नी आना मारिया।

चित्र: रशीदा भगत

अध्यक्ष की जुबानी

समुदाय-आधारित विकास की झलक

अक्टूबर रोटरी का सामुदायिक आर्थिक विकास माह है। यह वह समय है जब हम समुदायों को समृद्ध और टिकाऊ भविष्य बनाने में मदद करने के अपने प्रयासों पर प्रकाश डालते हैं। यह आयोजन रोटरी के नेतृत्व के मूल मूल्य के बिल्कुल अनुरूप है।

नेतृत्व का अर्थ है लोगों को अपनी प्रगति का मार्गदर्शन करने के लिए सशक्त बनाना। रोटरी की आर्थिक विकास परियोजनाएँ इसी उद्देश्य को पूरा करती हैं।

उदाहरण के लिए, दक्षिण भारत में हाल ही में हुई एक पहल को ही लीजिए, जिसमें रोटरी सदस्यों ने आदिवासी समूहों की महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण देकर उनकी आजीविका कमाने और सामाजिक समावेशिता पुनः प्राप्त करने की शक्ति को उजागर किया। ऐतिहासिक रूप से, इस क्षेत्र में विधवाओं और परित्यक्त महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा कम हो जाती है और समाज उन्हें बहिष्कृत कर देता है या उनके दुर्भाग्य के लिए उन्हें दोषी ठहराया जाता है। स्वयं का भरण-पोषण करने या प्रशिक्षण प्राप्त करने के अवसर बहुत कम हैं।

इस वर्ष, रोटरी क्लब विंडसर रोज़लैंड, ओंटारियो ने भारत के मंडल 3203 और 3234 के क्लबों और भारतीय संगठन सेवालय ट्रस्ट के साथ मिलकर 80 आदिवासी महिलाओं को सिलाई मशीनें और प्रशिक्षण प्रदान किया। इन महिलाओं ने साड़ी ब्लाउज़, कुर्ता ट्यूनिक और सलवार सूट सिलना सीखा, जिससे वे अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें। कार्यक्रम पूरा करने पर प्रत्येक महिला को प्रमाण पत्र दिया गया और सिलाई मशीन प्रदाता ने मशीनों के दीर्घकालिक रखरखाव की निःशुल्क सुविधा प्रदान की। इस परियोजना ने विधवा होने के कारण समाज से बहिष्कृत महिलाओं को महत्वपूर्ण आय और सम्मान प्रदान किया।

यह कहानी रोटरी नेतृत्व के क्रियाशील स्वरूप का एक उदाहरण है: जहाँ स्थानीय लोग अपनी सामुदायिक आवश्यकताओं के अनुसार समाधान सुझा रहे हैं। हमारी भूमिका दान देना या बाहरी मॉडल थोपना नहीं है, बल्कि नेतृत्व, कौशल और स्थायी उद्यम में निवेश करके आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना है।

इस अक्टूबर, मैं दुनिया भर के रोटरी सदस्यों को अपने समुदायों में आर्थिक नेतृत्व पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता हूँ। स्थानीय आर्थिक पहलों का नेतृत्व करने के लिए कौन आगे बढ़ रहा है? ऐसी कौन सी अप्रयुक्त प्रतिभा है जिसे प्रशिक्षण या मार्गदर्शन से निखारा जा सकता है? और आपका क्लब स्थानीय व्यवसायों, व्यावसायिक स्कूलों या बचत समूहों के साथ साझेदारी करके अवसरों को कैसे उत्प्रेरित कर सकता है?

नेतृत्व का मतलब हमेशा दिखाई देना नहीं होता। कभी-कभी इसका मतलब दूसरों की बात सुनना, मिलकर काम करना और उनकी आवाज़ को बुलंद करना होता है। यही दृष्टिकोण रोटरी के दर्शन और आर्थिक विकास पर हमारे स्थायी प्रभाव का मूल है।

क्षमता निर्माण करके - चाहे माइक्रोक्रेडिट समूहों के माध्यम से, व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं के माध्यम से, या उद्यमिता कार्यक्रमों के माध्यम से - हम समुदायों को अपने परिवर्तन का नेतृत्व स्वयं करने में सक्षम बनाते हैं। जब लोग अपनी प्रगति की ज़िम्मेदारी लेते हैं, तो परिवर्तन स्थायी हो जाता है।

क्षमता निर्माण के माध्यम से - चाहे माइक्रोक्रेडिट समूह हों, व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यशालाएँ हों या उद्यमिता कार्यक्रम - हम समुदायों को अपने परिवर्तन का नेतृत्व स्वयं करने में सक्षम बनाते हैं। जब लोग अपनी प्रगति की ज़िम्मेदारी स्वयं उठाते हैं, तो परिवर्तन स्थायी हो जाता है।

साथ मिलकर, हम ऐसी अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन कर सकते हैं जो सभी के लिए काम करती हैं और ऐसी सामुदायिक विकास परियोजनाएं लागू कर सकते हैं जो टिकाऊ हों।

फ्रांसेस्को अरेज़ो

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

अलविदा... सनडांस किड

पिछले कुछ हफ्तों में हृदय विदारक खबरें मिली हैं; पहली दुखद खबर थी सांगकू यून के निधन की, जिन्हें रो ई के अध्यक्ष पद के लिए नामित किया गया था, लेकिन एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या के कारण उन्हें यह पद छोड़ना पड़ा। उनके निधन के बाद उन्हें इस अंक में दो पूर्व रो ई अध्यक्षों - के आर रविंद्रन और शेखर मेहता - द्वारा लिखे गए भावुक और दिल से निकली श्रद्धांजलियों के माध्यम से याद किया गया है, जो उन्हें भली-भांति जानते थे।

एक और गहरी त्रासदी थी हॉलीवुड के दिलों की धड़कन, रॉबर्ट रेडफोर्ड का निधन। वह एक ऐसी शख्सियत थे जिन पर बीते ज़माने की लगभग हर महिला फ़िदा थी - अपनी जादुई मुस्कान के साथ जब वह सिल्वर स्क्रीन पर आते थे तो सबके दिल थम जाते थे। और लगभग हर पुरुष उनकी सराहना करता और कभी-कभी उनसे जलता भी था। कौन भूल सकता है उस आकर्षक 'सनडांस किड' को जब उन्होंने हॉलीवुड के एक और महान कलाकार पॉल न्यूमैन के साथ 1969 की फ़िल्म *Butch Cassidy and the Sundance Kid* में स्क्रीन साझा की थी?

रेडफोर्ड में एक शांत आकर्षण और स्वाभाविक गरिमा थी। हॉलीवुड के एक मशहूर सितारे होने के बावजूद, उनके मित्रों का कहना था कि उन्होंने हमेशा अपने व्यवहार में विनम्रता दिखाई। फ़िल्म *The Way We Were* में उनकी सह-अभिनेत्री बारबरा स्ट्राइसंड, जो उनकी तरफ बहुत आकर्षक थी, ने उन्हें इस तरह वर्णित किया: एक बुद्धिमान, निजी स्वभाव के शर्मीले लेकिन आत्मविश्वासी बौद्धिक कलाकार जिनका अभिनय बहुत भावुक, संयमित और कलात्मक रूप से बेहद प्रभावशाली था। लेकिन आने वाले समय में उन्हें केवल एक बेहद आकर्षक और प्रतिभाशाली अभिनेता के रूप में नहीं बल्कि इससे कहीं ज्यादा के लिए याद किया जाएगा। क्योंकि वह वाक़ई इससे बहुत अधिक थे।

वह एक उत्सुक श्रोता, प्रगतिशील विचारक, प्रकृति के लिए समर्पित पर्यावरणविद् और विविधता के प्रबल समर्थक भी थे। अधिकांश सफल सितारों के विपरीत उन्होंने कभी अपनी सफलता में डूबकर भव्य और विलासितापूर्ण जीवन को नहीं अपनाया। वर्ष 1981 में उन्होंने सनडांस इंस्टीट्यूट की स्थापना की ताकि नए और संघर्षरत कलाकारों को अपने हुनर को निखारने और साहसिक, स्वतंत्र और नई सोच से भरपूर अभिव्यक्ति को आकार देने हेतु एक मंच मिल सके। जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा था, ''हर रंग-रूप और सोच के कलाकारों को यह स्वतंत्रता मिलनी चाहिए कि वे मानव जीवन की दशा, जीवन की जटिलताओं और हमारे चारों ओर की दुनिया के बारे में अपनी कहानी अपनी तरह से कह सकें।''

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि एक प्रभावशाली सेलिब्रिटी होने के नाते रेडफोर्ड ने हमेशा सही बात के लिए अपनी आवाज़ उठाई - यह बात हमारे बॉलीवुड और अन्य भारतीय फिल्म इंडस्ट्री के दिग्गजों से बिल्कुल विपरीत है, जो शायद रीढ़ की हड्डी का मतलब भूल चुके हैं। रेडफोर्ड ने कभी तीखे या शोरगुल वाले अंदाज़ में नहीं बल्कि हमेशा शांत, संतुलित और गरिमापूर्ण तरीके से अपने विचार रखे। 2002 में जब उन्हें लाइफटाइम अचीवमेंट ऑस्कर से सम्मानित किया गया, तब उन्होंने दर्शकों में मौजूद अपने साथियों - जिनमें कई दिग्गज अभिनेता और निर्देशक शामिल थे - को संबोधित करते हुए उस ''मजबूत और स्वस्थ'' फिल्म इंडस्ट्री की बात की, जिसे वे सभी साझा करते थे। लेकिन साथ ही उन्होंने यह चेतावनी भी दी कि आने वाले वर्षों में, ''हमें सिर्फ सुरक्षित विकल्प ही नहीं बल्कि जोखिम भरी चीज़ों को भी अपनाना होगा। यह ज़रूरी है कि हमारी कलात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को संजोया जाए और जीवित रखा जाए क्योंकि मेरा मानना है कि विविधता को जीवित रखने से हमारी इंडस्ट्री को जीवित रखने में मदद मिलेगी।''

इसके बाद उन्होंने उस बड़े बदलाव के प्रति अपनी चिंता व्यक्त की जिससे उस समय की दुनिया गुजर रही थी। उन्होंने कहा, ''और जब हम सभी इस बदलती दुनिया में अपनी राह तलाशने, इस अराजकता, विनाश और त्रासदी के बीच कोई अर्थ तलाशने की कोशिश कर रहे हैं - तो एक शब्द उभरकर सामने आता है और वह है 'स्वतंत्रता' इसकी महत्ता, इसकी दुर्लभता और यह कि हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास यह है। ऐसी स्वतंत्रता एक उपहार है - इसे हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। कला की महिमा सिर्फ यही नहीं है कि वह बदलावों के बावजूद जीवित रहती है बल्कि यह भी है कि वह बदलाव का नेतृत्व कर सकती है।''

ठहर कर सोचिए - उन शब्दों के बारे में और उस प्रभावशाली स्थान के बारे में जो रॉबर्ट रेडफोर्ड ने कला की दुनिया में तब संभाला हुआ था, जब उन्होंने ये बातें कहीं। ये किसी आम व्यक्ति के नहीं बल्कि एक विचारक, एक मार्गदर्शक के शब्द हैं इन बातों को कहे हुए दो दशक से अधिक समय बीत चुका है लेकिन आज जब हमारी दुनिया और भी तेज़ी से अराजकता, विनाश और अंधकार की ओर बढ़ रही है - ये शब्द पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गए हैं...

रशीदा भगत

Rotary PEOPLE OF ACTION

कचरा स्थान से सामुदायिक हरित आश्रय तक

जयश्री

जो जगह कभी कूड़े-कचरे और मलबे से भरी हुई थी, वह आज एक हरे-भरे आश्रय में बदल गई है - श्रीकाकुलम का *रोटरी वनम।* नागवल्ली नदी के किनारे 1.3 एकड़ में फैले, कभी उपेक्षित रहे इस कम्पोस्ट यार्ड को श्रीकाकुलम के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3020 ने पूरी तरह से बदल दिया है।

2017 में, शहर के नगर निगम ने क्लब को बंजर भूमि आवंटित की थी। पूर्व अध्यक्ष शिवशंकर देवरसेट्टी याद करते हैं, ''यह हर तरह के कचरे से भरी हुई थी - प्लास्टिक, पुराने कपड़े, निर्माण सामग्री, शराब की बोतलें... जो सोचें, सब मौजूद था।'' हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी के पास स्थित होने के कारण, यह जगह और भी चिंताजनक हो गई थी। बदलाव लाने के लिए दृढ़ संकल्पित, रोटेरियन्स ने कृषि रसायन निर्माता एनएसीएल इंडस्ट्रीज के सहयोग से आठ महीने लंबा सफाई अभियान शुरू किया। ज़मीन को साफ़ किया गया और तीन फीट ताज़ी नदी की रेत से ढक दिया गया, ताकि उसे नए जीवन के लिए तैयार किया जा सके।

आंध्र प्रदेश वन विभाग ने क्लब को उस जगह पर लगाने के लिए 500 पौधे उपलब्ध कराए, और इसी से *रोटरी वनम* का निर्माण हुआ। चूंकि यह स्थान पहले एक कम्पोस्ट यार्ड था, इसलिए क्लब ने फलदार पेड़ लगाने से परहेज किया। शुरुआत में पानी देना एक चुनौती थी, लेकिन नगर निगम ने आगे आकर एक समर्पित जल कनेक्शन प्रदान किया।

पूर्व गवर्नर एम सी दास और गुड्डुती विश्वनाथ के सहयोग से, क्लब ने एक वॉकिंग ट्रैक, ओपन-एयर जिम और एक कंपाउंड वॉल का निर्माण कराया, जिससे यह जगह एक सच्चे सामुदायिक पार्क का रूप ले सका। इसकी देखभाल सुनिश्चित करने के लिए एक माली और चौकीदार नियुक्त किए गए, वहीं क्लब के सदस्य हरियाली के बीच अपनी रविवार की बैठकें आयोजित करने लगे।

देवरसेट्टी गर्व से कहते हैं, ''इस पार्क ने रोटरी की सार्वजनिक छवि को काफ़ी निखारा है। यह जगह अब शहर का गौरव बन गई है, पैदल चलने वालों, फ़िटनेस के शौकीनों, बच्चों और शांति व ताज़ी हवा की चाहत रखने वालों के लिए एक रमणीय स्थल।''

रोटरी वनम की सफलता से प्रेरित होकर, क्लब अब एक व्यापक अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली शुरू करने की तैयारी कर रहा है।■

रोटरी क्लब श्रीकाकुलम के सदस्य रोटरी वनम में अपनी क्लब बैठक करते हुए।

निदेशक का संदेश

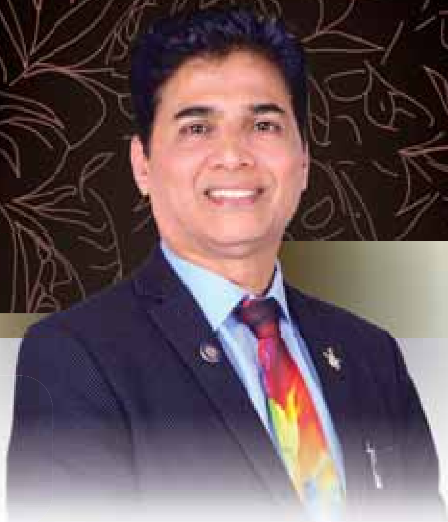

अब, पहले से कहीं अधिक, दुनिया को रोटरी की आवश्यकता है

प्रिय रोटरी मित्रों,

समय तेज़ी से बीत रहा है, और हम अक्टूबर में पहुँच चुके हैं-रोटरी वर्ष का एक-चौथाई हिस्सा पूरा हो चुका है। अक्टूबर हमेशा एक सार्थक महीना रहा है। रोटरी में, यह आर्थिक और सामुदायिक विकास माह है, और इसी महीने हम 24 अक्टूबर को विश्व पोलियो दिवस भी मनाते हैं।

1985 से रोटरी मानवता के सबसे असाधारण मिशनों में से एक, पोलियो उन्मूलन की लड़ाई के केंद्र में रही है। प्रतिदिन 1,000 मामलों से लेकर आज उन्मूलन के कगार पर पहुँचने तक पहुँचना हमारी अद्भुत यात्रा का प्रमाण है। हमने 2.5 मिलियन से ज़्यादा बच्चों का टीकाकरण किया है, 2.7 बिलियन डॉलर का योगदान दिया है, और विशेष रूप से बिल एंड मेलिंडा गेट्स फ़ाउंडेशन के साथ मज़बूत साझेदारियाँ स्थापित की हैं। लेकिन यह वादा अभी पूरा नहीं हुआ है। इस विश्व पोलियो दिवस पर, मैं अपने ज़ोन के प्रत्येक रोटेरियन को पोलियोप्लस में 50 डॉलर का योगदान देने के लिए आमंत्रित करता हूँ। गेट्स फ़ाउंडेशन के 2-फॉर-1 योगदान के साथ, आपका दान 150 डॉलर हो जाता है, और हमें इस ऐतिहासिक कार्य की सफलता के और करीब ले जाता है।

हम यह भी जानते हैं कि हमारे क्षेत्र और दुनिया के सामने आर्थिक और विकास संबंधी चुनौतियाँ हैं, जिससे विकास धीमा हो रहा है। बढ़ती जीवन-यापन लागत, गरीबी, युवा बेरोजगारी और असमानता का भारी बोझ बना हुआ है। लेकिन रोटरी इन चुनौतियों का सामना करने के लिए अद्वितीय स्थिति में है। आजीविका का सृजन करके, महिलाओं और युवाओं को सशक्त बनाकर, शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार करके और स्थायी परियोजनाओं का विकास करके, हम चुनौतियों को अवसरों में बदल सकते हैं। सेवा का प्रत्येक कार्य, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, हमारे समुदायों की प्रगति में योगदान देता है और सतत विकास लक्ष्यों को आगे बढ़ाता है।

इस वर्ष की पहली तिमाही पहले से ही प्रेरणादायक रही है। हमारे सभी क्षेत्रों में, हमने लगभग 12,000 नए रोटेरियनों का स्वागत किया है, जिससे भारत में रोटेरियनों की संख्या लगभग 180,000 हो गई है। रोटरेक्ट 38,357 सदस्यों के साथ निरंतर प्रगति कर रहा है। और साथ मिलकर, हमने रोटरी फ़ाउंडेशन को 3 मिलियन डॉलर से ज़्यादा का योगदान दिया है। ये उपलब्धियाँ हमें याद दिलाती हैं कि जब हम उद्देश्यपूर्ण होकर कार्य करते हैं, तो असंभव भी संभव हो जाता है।

आगे का रास्ता इस गति को बनाए रखने का है - अपने सदस्यों को गहराई से जोड़कर, अपने समुदायों की पूरे दिल से सेवा करके, और अपनी पहुंच तथा प्रभाव को बढ़ाने के लिए सी एस आर भागीदारों के साथ मिलकर काम करके।

दुनिया को रोटरी की ज़रूरत है - और उसे अभी हमारी ज़रूरत है। आइए हम और मज़बूत बनें, और ज़्यादा उदारता से दान करें, और नए उद्देश्य के साथ सेवा करें। हम सचमुच *अच्छाई के लिए एकजुट* हो सकते हैं।

आप हमें हर दिन गर्व महसूस कराते हैं।

के पी नागेश

रो ई निदेशक, 2025-27

युवा आवाज़ें मंच की रौशनी में

युवा रोटेरियन्स और रोटरेक्टर्स रोटरी सम्मेलनों में नेतृत्व की भूमिका निभा रहे हैं-वे मंच पर भाषण देते हैं, परियोजनाओं का मार्गदर्शन करते हैं, और कार्यक्रम के समग्र माहौल को प्रभावित करते हैं। कैलगरी इसका एक उदाहरण था, और वे इसे फिर से ताइपे में 13-17 जून को करेंगे।

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981	लियोन जे
RID 2982	शिवसुंदरम पी
RID 3000	कार्तिक जे
RID 3011	रविंदर गुगनानी
RID 3012	अमिता अनिल मोहिंदरू
RID 3020	कल्याण चक्रवर्ती वाई
RID 3030	ज्ञानेश्वर शेवाळे
RID 3040	सुशील मल्होत्रा
RID 3053	निशा शेखावत
RID 3055	निगमकुमार एल चौधरी
RID 3056	प्रज्ञा मेहता
RID 3060	अमरदीप सिंह बुनेत
RID 3070	रोहित ओबेरॉय
RID 3080	रवि प्रकाश
RID 3090	भूपेश मेहता
RID 3100	नितिन कुमार अग्रवाल
RID 3110	राजेन विद्यार्थी
RID 3120	अशुतोष अग्रवाल
RID 3131	संतोष मधुकर मराठे
RID 3132	सुधीर वी लातुरे
RID 3141	मनीष मोटवानी
RID 3142	हर्ष वीरेंद्र मकोल
RID 3150	राम प्रसाद एस वी
RID 3160	रविंद्र एम के
RID 3170	अरुण डैनियल भांडारे
RID 3181	रामकृष्ण पी कन्नन
RID 3182	पलक्शा के
RID 3191	श्रीधर बी आर
RID 3192	एलिज़ाबेथ चेरियन परमेश
RID 3203	धनासेकर बी
RID 3204	बिजोश मैनुअल
RID 3205	रमेश जी एन
RID 3206	चेल्ला के राघवेन्द्रन
RID 3211	टीना एंटनी कुन्नुमकल
RID 3212	जे धिनेश बाबू
RID 3231	वी सुरेश
RID 3233	डी देवेंद्रन
RID 3234	विनोद कुमार सराओगी
RID 3240	कामेश्वर सिंह एलांगबम
RID 3250	नम्रता
RID 3261	अमित जायसवाल
RID 3262	मनोज कुमार त्रिपाठी
RID 3291	रामेन्दु होमचौधुरी

प्रकाशक एवं मुद्रक **पी टी प्रभाकर**, 15 शिवास्वामी स्ट्रीट, मायलापोर, चेन्नई - 600004, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600014 से मुद्रित एवं रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट, दुगड़ टावरस, 3rd फ्लोर, 34 मार्शलस रोड, एग्मोर, चेन्नई - 600008 से प्रकाशित।
संपादक: **रशीदा भगत**

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

एम मुरुगानंदम RID 3000
रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट

के पी नागेश RID 3191
रो ई निदेशक

डॉ भरत पांड्या RID 3141
टीआरएफ ट्रस्टी

राजेंद्र के साबू RID 3080
कल्याण बेनर्जी RID 3060
शेखर मेहता RID 3291
अशोक महाजन RID 3141
पी टी प्रभाकर RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई RID 3060
सी भास्कर RID 3000
कमल संघवी RID 3250
डॉ महेश कोटबागी RID 3131
ए एस वेंकटेश RID 3234
राजु सुब्रमण्यन RID 3141
अनिरुधा रॉयचौधरी RID 3291
गुलाम ए वाहनवती RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2025-26)

रोहित ओबेरॉय RID 3070
अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

ज्ञानेश्वर शेवाळे RID 3030
वाईस चेयरमेन, गवर्नर्स काउंसिल

एम के रविंद्र RID 3160
सचिव, गवर्नर्स काउंसिल

चेल्ला के राघवेन्द्रन RID 3206
कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

दोस्ती का वरदान

रोटरी में दोस्ती अक्सर ऐसे फल देती है जो दुनिया को बदल सकते हैं। जब मैं रोटरी का अध्यक्ष निर्वाचित था, तब मैंने निदेशक मंडल में नाइजीरिया के तत्कालीन उपाध्यक्ष ओलायिंका 'यिंका' हकीम बाबालोला के साथ कार्य किया। मेरी पत्नी सुज़ैन ने यिंका की पत्नी प्रेबा 'प्रेसी' बाबालोला के साथ समय बिताया। यिंका और प्रेसी मद रोटरी फाउंडेशनफ का समर्थन करते हैं - न केवल आर्च क्लम्फ सोसायटी के सदस्य, लाभार्थी और प्रमुख दानकर्ताओं के रूप में बल्कि ऐसे रोटरी सदस्यों के रूप में भी जो फाउंडेशन की परियोजनाओं में गहराई से जुड़े हुए हैं।

सुज़ैन और प्रेसी की दोस्ती ने उनके क्लबों को एक साथ मिलकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। अक्टूबर माह को रोटरी मसामुदायिक आर्थिक विकास माहफ के रूप में मनाता है, तब मुझे लगा कि इस सहयोग के प्रभाव को सबसे बेहतर ढंग से प्रेसी बाबालोला खुद अपने शब्दों में बयां कर सकती हैं।

ओबुआमा, नाइजीरिया को कोविड-19 ने बुरी तरह प्रभावित किया। अनेक परिवारों, विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं को स्थिर आय और अवसरों से वंचित होना पड़ा। इस समुदाय को तत्काल व्यावहारिक सहायता और दीर्घकालिक समाधान की सख्त आवश्यकता थी।

मेरे क्लब - रोटरी क्लब पोर्ट हारकोर्ट पासपोर्ट - ने इसपर प्रतिक्रिया देने का निर्णय लिया। हमने रोटरी ई-क्लब ऑफ हैम्बर्ग-कनेक्ट और अपने मंडलों के साथ साझेदारी की और एक वैश्विक अनुदान परियोजना की शुरुआत की जिसका उद्देश्य लोगों को ऐसे कौशल प्रदान करना था जो उन्हें आशा और सम्मान के साथ पुनः स्थापित कर सकें।

250 से अधिक महिलाओं और युवाओं को मछली पालन, मुर्गी पालन, घोंघा पालन और मनके (बीड) बनाने जैसे कार्यों में प्रशिक्षण दिया गया। स्थानीय प्रशिक्षकों ने व्यावहारिक कार्यशालाओं का नेतृत्व किया जिनके माध्यम से प्रतिभागियों को अपने उद्यम शुरू करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किए गए।

अब परिवार आय अर्जित कर रहे हैं और माताएँ अपने बच्चों को स्कूल भेज सकती हैं। युवा न केवल कमाई कर रहे हैं बल्कि दूसरों को भी सिखा रहे हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था में सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

जो महिलाएं कभी ठहर सी गई थीं, वे अब अपने व्यवसाय चला रही हैं, दूसरों को प्रशिक्षण दे रही हैं और जीवन में एक नया उद्देश्य प्राप्त कर रही हैं। यह परियोजना अब अपना प्रभाव दिखा रही है - केवल रोज़गार ही नहीं बल्कि आत्मविश्वासी सामुदायिक नेताओं का निर्माण भी कर रही है।

जब समर्पित रोटेरियन एकजुट होकर द रोटरी फाउंडेशन के समर्थन से कार्य करते हैं तो परिवर्तन ऐसा ही दिखाई देता है।

सामुदायिक आर्थिक विकास रोटरी के सबसे प्रभावशाली क्षेत्रों में से एक है और इसके कई कारण हैं। हमारे क्लबों में ऐसे विशेषज्ञ मौजूद हैं जो यह जानते हैं कि व्यवसायों के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को कैसे मजबूत किया जा सकता है। इस प्रकार की परियोजनाओं को लगभग हर स्थान के अनुसार ढाला जा सकता है और इनमें अक्सर शुरूआती सफलता के संकेत भी दिखाई देते हैं।

हमारा फाउंडेशन भी सक्रिय पेशेवर कर्मचारियों और तकनीकी सलाहकारों के समूह की विशेषज्ञता प्रदान करता है।

एक रात्रिभोज की वार्तालाप के दौरान जो शुरू हुआ वह एक जीवन परिवर्तक वैश्विक अनुदान में बदल गया। क्या यह अद्भुत नहीं है कि रोटरी में जो मित्रताएं हम करते हैं, वे ऐसे अवसरों को जन्म देती हैं जो पीढ़ियों तक के लिए जीवन परिवर्तक साबित हो सकते हैं?

होल्गर नेक
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

भारत में रोटरी सेवा सबसे अधिक है: रो ई अध्यक्ष

रशीदा भगत

रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो और उनकी पत्नी आना मारिया।

रशीदा भगत

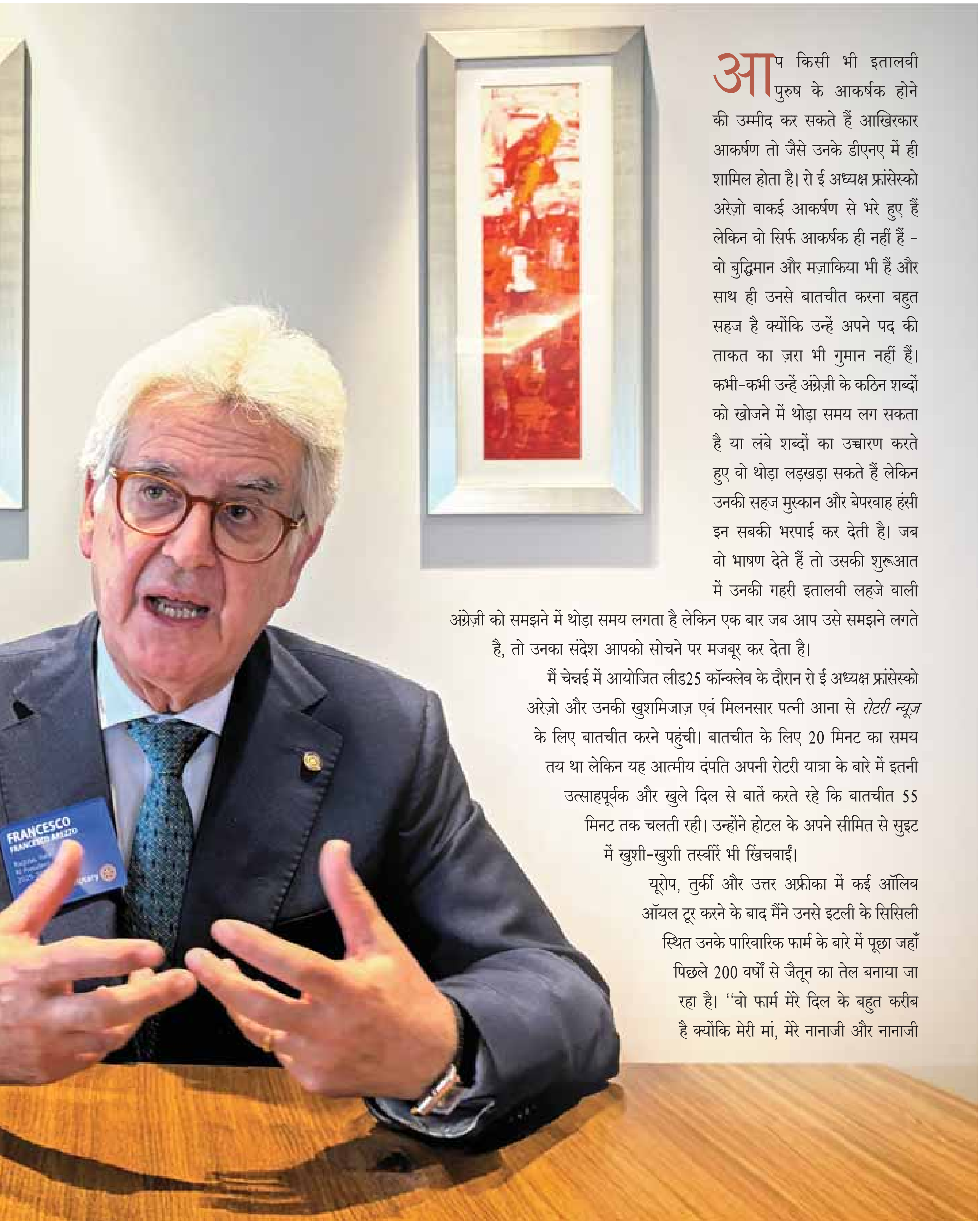

आप किसी भी इतालवी पुरुष के आकर्षक होने की उम्मीद कर सकते हैं आखिरकार आकर्षण तो जैसे उनके डीएनए में ही शामिल होता है। रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो वाकई आकर्षण से भरे हुए हैं लेकिन वो सिर्फ आकर्षक ही नहीं हैं – वो बुद्धिमान और मज़ाकिया भी हैं और साथ ही उनसे बातचीत करना बहुत सहज है क्योंकि उन्हें अपने पद की ताकत का ज़रा भी गुमान नहीं हैं। कभी-कभी उन्हें अंग्रेज़ी के कठिन शब्दों को खोजने में थोड़ा समय लग सकता है या लंबे शब्दों का उच्चारण करते हुए वो थोड़ा लड़खड़ा सकते हैं लेकिन उनकी सहज मुस्कान और बेपरवाह हंसी इन सबकी भरपाई कर देती है। जब वो भाषण देते हैं तो उसकी शुरूआत में उनकी गहरी इतालवी लहजे वाली अंग्रेज़ी को समझने में थोड़ा समय लगता है लेकिन एक बार जब आप उसे समझने लगते है, तो उनका संदेश आपको सोचने पर मजबूर कर देता है।

मैं चेन्नई में आयोजित लीड25 कॉन्क्लेव के दौरान रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो और उनकी खुशमिजाज़ एवं मिलनसार पत्नी आना से *रोटरी न्यूज़* के लिए बातचीत करने पहुंची। बातचीत के लिए 20 मिनट का समय तय था लेकिन यह आत्मीय दंपति अपनी रोटरी यात्रा के बारे में इतनी उत्साहपूर्वक और खुले दिल से बातें करते रहे कि बातचीत 55 मिनट तक चलती रही। उन्होंने होटल के अपने सीमित से सुइट में खुशी-खुशी तस्वीरें भी खिंचवाईं।

यूरोप, तुर्की और उत्तर अफ्रीका में कई ऑलिव ऑयल टूर करने के बाद मैंने उनसे इटली के सिसिली स्थित उनके पारिवारिक फार्म के बारे में पूछा जहाँ पिछले 200 वर्षों से जैतून का तेल बनाया जा रहा है। ''वो फार्म मेरे दिल के बहुत करीब है क्योंकि मेरी मां, मेरे नानाजी और नानाजी

के पिताजी... सभी उस उत्पादन से जुड़े रहे हैं। लेकिन आज, मुझसे भी ज़्यादा मेहनत आना करती है।''

अरेज़ो का बचपन सिसिली में बीता जहाँ उनका परिवार पिछले 800-900 वर्षों से रह रहा है। ''हम पूरी तरह से सिसिलियन हैं। मैं एक छोटे से शहर में पैदा हुआ जहाँ की आबादी मात्र 70,000 थी आपके लिए तो यह बहुत ही छोटा शहर होगा। मेरा बचपन बहुत अच्छा था; 1960 और 70 का दशक इटली में रहने का एक शानदार समय था।''

अरेज़ो ने 10 वर्ष की उम्र में ही अपने रेडियोलॉजिस्ट पिता को खो दिया था और फिर वह अपनी मां के साथ बड़े हुए। इटली की किसी जगह से डेंटिस्ट का प्रशिक्षण पूरा करने के बाद उन्होंने अपने गृहनगर लौटकर एक डेंटल क्लिनिक शुरू किया। मैंने उनसे पूछा - आना से आपकी मुलाक़ात कब और कैसे हुई? वो मुस्कराते हुए कहते हैं, ''मैं आना से तब मिला था जब मैं सिर्फ़ दो साल का था। हमारे परिवार बहुत क़रीबी हैं; मैं उसके माता-पिता को अंकल और आंटी कहकर बुलाता था! हम दोनों साथ में ही बड़े हुए हैं!''

तो फिर प्रपोज़ किसने किया? आंखों में शरारत भरी चमक के साथ मुस्कराते हुए अरेज़ो कहते है, ''अब मैं क्या कहूँ... आना ने तो बहुत ज़ोरदार अभियान चलाया था!'' दोनों की शादी अक्टूबर 1979 में हुई। आज उनकी दो बेटियां हैं और दो नाति-नातिन, जिनमें से

चेन्नई में लीड25 सम्मेलन में।

2017 में एक फूड बैंक परियोजना में मदद करते हुए।

बाएँः आना (दाएँ) और अध्यक्ष अरेज़ो, रोटरी क्लब माल्टा के हैंड्स-ऑन डे पर दिव्यांगों के लिए परियोजना में काम करते हुए।

लीड25 सम्मेलन में एचओएफ स्टॉल पर अपने अध्यक्षीय सहायक जॉन डी जॉर्जियो और उनकी पत्नी मोनिक चेम्बर्स के साथ।

रश्मि भगत

एक का नाम अरेज़ो के नाम पर और दूसरे का नाम आना के नाम पर रखा गया है। ''बिल्कुल वैसे जैसे आप भारत में करते हैं,'' आना हंसते हुए कहती हैं।

हाँ वाकई भारत और इटली के बीच काफी समानताएं हैं - जैसे पारिवारिक आत्मीयता, रेस्तरां में साथ मिलकर खाना खाना आदि, मैंने टिप्पणी की। अरेज़ो सहमति में सिर हिलाते हुए आगे कहते हैं, दोनों देशों का इतिहास और संस्कृति बहुत समृद्ध है इसलिए हम एक-दूसरे से काफी मिलते-जुलते हैं लेकिन कुछ पहलुओं में हम एक-दूसरे से बहुत अलग भी हैं।

जब उनसे पूछा गया कि वह रोटरी से कब और कैसे जुड़े तो अरेज़ो ने कहा कि अपनी पढ़ाई पूरी करके घर लौटने के कुछ समय बाद, उनके पिता के मित्र, जो रोटरी क्लब रागूसा के सदस्य थे, ने 1989 में उनका नाम प्रस्तावित किया। वह मुस्कराते हुए कहते है, ''सच कहूं तो जब मैं रोटरी से जुड़ा तो मुझे ठीक से पता भी नहीं था कि रोटरी क्या है। लेकिन चूंकि मेरे पिता के सभी दोस्त और शहर के कई जाने-माने लोग उस क्लब के सदस्य थे इसलिए जब मेरा नाम प्रस्तावित किया गया तो मुझे लगा कि यह बढ़िया जगह है और मैं भी इससे जुड़ गया। लेकिन सामान्य तौर पर रोटरी के असली अर्थ को आप तभी समझते हैं जब आप क्लब के अध्यक्ष बनते हैं। तब पता चलता है कि रोटरी कितनी जटिल, सुंदर और समाज के लिए कितनी उपयोगी संस्था है।''

उन्हें क्लब अध्यक्ष बनने में 10 साल लगे और गवर्नर बनने में और 10 साल। इस दौरान उनका ''धीरे-धीरे सिसिली, इटली और फिर पूरी दुनिया में एक नेटवर्क बनता चला गया। मैंने बहुत से लोगों से मुलाकात की - जो बेहद रोचक, उत्साही और दिल के बहुत करीब थे! आज मेरे कई सबसे अच्छे मित्र रोटरी से ही हैं।'' फिर वो मजाकिया अंदाज़ में लंबी सांस भरते हुए आगे कहते हैं, ''लेकिन एक ही चीज़ गलत हो गई; मेरी मुलाकात जॉन (डे जॉर्जियो) से हो गई,'' वह कमरे में बैठे अपने सहयोगी की ओर इशारा करते हुए कहते हैं।

मैंने मुस्कराते हुए बात को आगे बढ़ाया - तो क्या वह आपको परेशान करते हैं या फिर डराते-धमकाते हैं? अरेज़ो हँसते हुए जवाब देते हैं, ''ओह हाँ, वह रोज़ कोशिश करता है!'' फिर वह आगे बताते हैं, ''जब मैं

एक नज़र में

क्या आप खाने के शौक़ीन है? आपका पसंदीदा व्यंजन कौन सा है।

यह बहुत ही सरल है। आपको वही खाना सबसे अधिक पसंद आता है, जो आपने बचपन में खाया हो। इसलिए मुझे इटली का नहीं बल्कि सिसिली का खाना पसंद है... बेशक, पास्ता। हम बहुत मछली खाते हैं और कई पारंपरिक व्यंजन भी। इटली में एक अद्भुत बात यह है कि हर त्यौहार या अवसर के लिए हमारे पास एक पारंपरिक डिश होती है – क्रिसमस, सेंट जॉन (जो हमारे शहर के

रशीदा भगत

संरक्षक संत हैं), ईस्टर... और भी कई। और मुझे ये सारे व्यंजन बेहद पसंद हैं!

क्या आप खाना बनाते है, क्या आप खाना बना सकते है?

अरेज़ो के पास बैठी आना पीछे की ओर झुकती हैं और ज़ोर से सिर हिलाकर कहती हैं: 'ओह प्लीज़!! यह तो रसोई में तहलका मचा देते हैं इन्हें खाना बनाना बहुत पसंद है लेकिन बाद में सारी सफाई मुझे ही करनी पड़ती है!' जॉन दे जॉर्जियो मुस्कराते हुए मज़ाक में आगे कहते है: यह एक अच्छे बावर्ची से ज्यादा बेहतर अध्यक्ष हैं!

भारतीय व्यंजन और मसालों के बारे में पूछे जाने पर अरेज़ो कहते हैं: मुझे भारतीय खाना पसंद है। मुझे मसालेदार खाना भी अच्छा लगता है... बस ज़्यादा तीखा न हो!

धर्म के बारे में पूछने पर अरेज़ो कहते हैं: मैं कैथोलिक हूँ और हर रविवार चर्च जाता हूँ। लेकिन मुझे अन्य धर्मों के बारे में पढ़ना अच्छा लगता है। आपकी धार्मिक पुस्तकों – जैसे *भगवद गीता* – के बारे में मैंने थोड़ा बहुत पढ़ा है।

पढ़ने की आदत और पसंदीदा लेखकों के बारे में पूछे जाने पर अरेज़ो उत्साह से कहते हैं: मुझे पढ़ना बहुत पसंद है मैंने सिसिली के लेखक पिरान्देल्लो के लेख बहुत पढ़े है। इसके अलावा, मुझे तुर्की के लेखक ओरहान पामुक (जिन्हें 2006 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला) और रूसी लेखक अन्तोन चेखव को पढ़ना भी बेहद पसंद है। मेरे घर में पामुक की सारी किताबें हैं; *माय नेम इस रेड* मेरी पसंदीदा किताबों में से एक है... थोड़ी अजीब है लेकिन बेहद खूबसूरत।

संगीत: मुझे ओपेरा बहुत पसंद है। साथ ही क्लासिकल म्यूज़िक भी अच्छा लगता है।

संगीत वाद्य यंत्र: ओह नहीं! लेकिन मेरे परिवार में मेरी माँ, नानी और आंटी पियानो बजाती थीं और मेरा भाई तो सब कुछ बजा लेता है – ट्रंपेट, गिटार जो कहो वो! मैं तो बस घर की घंटी बजा सकता हूँ! (खिलखिलाकर हँसते है)

पसंदीदा यात्रा स्थल: बीच (समुद्र तट) नहीं क्योंकि समुद्र तट तो मेरे घर के पास ही है! मुझे ऐसे स्थानों की यात्रा पसंद है जो इतिहास और संस्कृति से भरपूर हो। भारत में मुझे मंदिरों की यात्रा पसंद है क्योंकि वहाँ जाकर उस स्थान की संस्कृति को समझा जा सकता है। भारत की तुलना में सिसिली बहुत छोटा है लेकिन सांस्कृतिक दृष्टि से यह किसी महाद्वीप से कम नहीं है। यहाँ आपको यूनानी, रोमन, अरब, बीजान्टिन और नॉर्मन सभ्यताओं के अवशेष मिलते हैं। आप शहर में चलते हुए ही पूरा इतिहास पढ़ सकते हैं।

दुनिया का सबसे पसंदीदा शहर: नेपल्स; यह एक बहुत ही शानदार शहर है... यह एक बड़ा शहर है, ज़्यादा समृद्ध नहीं है, थोड़ा उपेक्षित भी है लेकिन इसकी खूबसूरती इसकी प्राचीनता में है... इसका जो माहौल है, वही इसकी खासियत है। साथ ही, यहाँ के लोग बहुत दोस्ताना और पसंद आने योग्य हैं। यहाँ का खाना बहुत स्वादिष्ट है; पिज़्ज़ा की शुरुआत भी यहीं से हुई थी और नेपल्स का संगीत भी शानदार है। इटली की खूबसूरती ऐसी है कि यहाँ किसी भी ऐसे शहर में, जिसे कोई जानता न हो, एक सुंदर चर्च मिल जाएगा! यहाँ खूबसूरती पूरे देश में फैली हुई है... यह किसी एक जगह पर केंद्रित नहीं है जैसे कि फ्रांस की सारी खूबसूरती पेरिस में सिमटी हुई लगती है।

रोटरी के लिए आपका सपना: मेरा सपना बहुत साधारण है पोलियो उन्मूलन अभियान को पूरी तरह समाप्त करना और नोबेल पुरस्कार प्रक्रिया में भाग लेना... जीतना तो बहुत मुश्किल है, लेकिन कम से कम उस प्रक्रिया का हिस्सा बनना ही अपने आप में एक बहुत बड़ी बात होगी।

पोलियो के बाद क्या? मैंने आपको बताया था कि मुझे नेपल्स बहुत पसंद है। नेपल्स के लोग बहुत अंधविश्वासी होते हैं इसलिए पोलियो के बाद क्या करना है, इसके बारे में अभी सोचना अपशकुन माना जाता है! ■

गवर्नर था, तब मेरी मुलाकात जॉन डे जॉर्जियो से हुई थी। वह उस समय रोटरी क्लब माल्टा के अध्यक्ष थे, जो हमारे ही रो ई मंडल का हिस्सा है। हम बहुत जल्दी अच्छे दोस्त बन गए!''

मैंने अरेज़ो से पूछा कि इतने कम समय में तैयारी का मौका न मिलने के बावजूद रो ई अध्यक्ष के रूप में उनकी क्या प्राथमिकताएँ और दृष्टिकोण हैं। वह कहते हैं, ''मेरे पास अध्यक्ष बनने से पहले बस कुछ ही दिन बचे थे... तैयारी के लिए बहुत ही कम समय मिला। रोटरी के लिए कुछ चीज़ें बेहद अहम हैं और उनमें से दो तो ऐतिहासिक महत्व की हैं। पहली – पोलियो का उन्मूलन। यह हमारे संगठन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत ने इस दिशा में शानदार काम करते हुए पोलियो को जड़ से खत्म कर दिया – ऐसा काम जिसे दुनिया भर में नामुमकिन कहा जाता था! यह वाकई बहुत महान उपलब्धि थी एक अद्भुत कार्य।''

लेकिन अब रोटरी को इस काम को पूरी तरह समाप्त करना होगा ''क्योंकि पोलियो के मामले अभी भी दो देशों में बाकी हैं – अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान – जहाँ रोटरी पूरी तरह से सक्रिय है। हमें यह काम हर हाल में पूरा करना है।''

दूसरी बड़ी चुनौती – सदस्यता की है। ''जिसे शायद आप (भारत) नज़रअंदाज़ कर देते हैं क्योंकि यहाँ सदस्यता लगातार बढ़ रही है। कल (चेन्नई में लीड25 सम्मेलन में) 250 नए क्लबों को प्रस्तुत किया जाएगा जो यूरोप में तो लगभग असंभव है। दुनिया भर में रोटरी की सदस्यता एक बड़ी चुनौती बनी हुई है और यही मेरी दूसरी प्राथमिकता है।''

उनकी एक और प्राथमिकता या कहें चिंता है ''युद्ध के कारण होने वाली क्षति। युद्ध में शामिल किसी भी दो देशों के बीच शांति स्थापित करना हमारे लिए आसान नहीं है लेकिन मेरा उद्देश्य शांति के लिए काम करना है।'' और यह कार्य रोटरी कई तरीकों से कर सकती है; हम तब शांति के लिए कार्य करते हैं जब हम लोगों को स्वच्छ जल, स्वच्छता, एक अच्छा और स्वच्छ वातावरण, शिक्षा प्रदान करते हैं ये सभी चीजें शांति की ओर छोटे लेकिन सार्थक कदम हैं। एक साथ मिलकर हम एक ऐसा महान तंत्र बना सकते

अध्यक्ष अरेज़ो और उनका परिवार। सामने की पंक्ति (बाएँ से): अरेज़ो, पोते फ्रांसेस्को को गोद में लिए हुए; और आना, पोती आना मारिया को गोद में लिए हुए। खड़े (बाएँ से): अरेज़ो की बेटी एलेना; दामाद मैथ्रस; और बेटी राफाएला।

हैं और बना भी रहे हैं जिसमें रोटरी सदस्य पूरी दुनिया में लोगों के बीच बेहतर समझ को बढ़ावा दे सकते हैं।

रो ई अध्यक्ष अपने भारत दौरे का उदाहरण देते हैं, जहाँ उन्होंने न केवल पुराने मित्रों से मुलाकात की बल्कि नए मित्र भी बनाए। ''मेरे लिए भारत वो देश है जहाँ मेरे मित्र रहते हैं। यदि हमारे पास दुनिया भर में ऐसे लाखों लोग हों जो उनके आसपास के अन्य देशों के लोगों की भावनाओं, समस्याओं और चुनौतियों को समझ सकें तो यह शांति की ओर एक लेकिन ठोस कदम होगा। हमें लोगों के बीच समझ को बढ़ावा देना होगा। यही मेरा उद्देश्य है... कि हम जो कर सकते हैं उसमें सुधार करें और देशों के बीच शांतिपूर्ण संवाद को प्रोत्साहित करें।''

जब उनसे इज़राइल और फिलीस्तीन के मुद्दे पर पूछा गया तो अरेज़ो गंभीर स्वर में कहते हैं: ''हाँ, यह भी एक बहुत बड़ी समस्या है। हम शायद युद्ध तो रोक नहीं सकते लेकिन हम लोगों को आपस में जुड़ने, एक-दूसरे से संवाद करने और एक बेहतर समझ विकसित करने में मदद कर सकते हैं। क्योंकि अक्सर युद्ध का कारण डर होता है और डर का कारण होता है अज्ञानता। जब मैं किसी देश या उसके लोगों के बारे में अनजान होता हूँ, तो मुझे उनसे डर लगने लगता है।

लेकिन अगर हम एक-दूसरे को जान सकें, एक-दूसरे से जुड़ सकें, तो हमें एहसास होगा कि उनके भी वही सपने हैं, वही समस्याएं हैं और वही भावना है जो हमारे अंदर है। अगर हम मिलकर और एक साथ बैठकर बात करें तो हम एक-दूसरे को बेहतर समझ सकते हैं। हम बहुत बड़ा कुछ न भी कर पाएं पर छोटे प्रयास तो कर ही सकते हैं और हमें उन्हें ज़रूर करना चाहिए।''

अगर दुनिया भर के लाखों लोग पड़ोसी देशों के लोगों की भावनाओं, समस्याओं और चुनौतियों को समझ सकें, तो यह शांति की ओर एक और छोटा कदम है।

ये तीन उद्देश्य - पोलियो उन्मूलन, सदस्यता वृद्धि और शांति स्थापना - इस वर्ष के लिए उनकी प्रमुख प्राथमिकताएं हैं... ''या यूँ कहूँ कि बचे हुए कुछ महीनों के लिए! क्योंकि एक रो ई अध्यक्ष को आमतौर पर डेढ़ साल की तैयारी का समय मिलता है लेकिन मुझे दो महीने तो यह समझने में ही लग गए कि मुझे क्या करना चाहिए!''

मैंने पूछा - तो क्या उन्हें कम समय मिलने की वजह से कोई दबाव या असहजता महसूस हुई? उनका जवाब यह स्पष्ट कर देता है कि वे रो ई के सर्वोच्च पद पर क्यों हैं। ''नहीं, मैं तो वास्तव में उत्साहित था... और जब आपके सामने कोई अधिक कठिन काम होता है तो आप अधिक उत्साहित होते है।''

हालाँकि अरेज़ो ईमानदारी से स्वीकार करते हैं: अब जब मेरा कार्यकाल शुरू हो चुका है, तो समझ

रोटरेकटरों के लिए अध्यक्ष का सम्बोधन

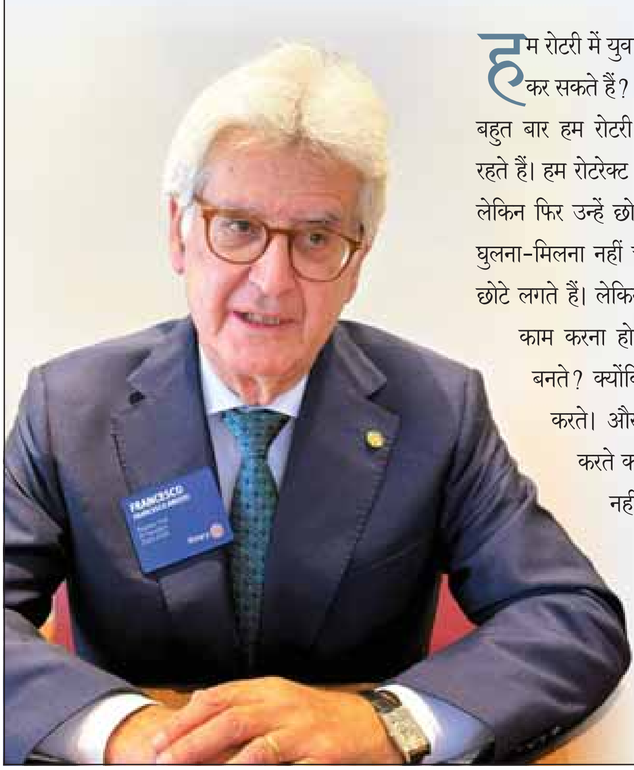
रशीदा भगत

हम रोटरी में युवा सदस्यों को कैसे आकर्षित कर सकते हैं? यूरोप का उदाहरण लीजिए; बहुत बार हम रोटरी में एक-दूसरे से कटे हुए रहते हैं। हम रोटरेक्ट क्लब का गठन तो करते है लेकिन फिर उन्हें छोड़ देते हैं। हम उनके साथ घुलना-मिलना नहीं चाहते क्योंकि वे हमें बहुत छोटे लगते हैं। लेकिन हमें उनके साथ मिलकर काम करना होगा। वे रोटेरियन क्यों नहीं बनते? क्योंकि वे रोटरी में विश्वास नहीं करते। और वो हम पर विश्वास नहीं करते क्योंकि हम उनके साथ काम नहीं करते, हम एक-दूसरे को जानते तक नहीं हैं। अगर हम एक-दूसरे की सराहना करें, समझें और मिलकर काम करें, तो ज़्यादा से ज़्यादा रोटरेकटर रोटेरियन बन सकते हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि वे हमारी हर परियोजना में हमारे साथ काम करें - और आज से अधिक सक्रिय रूप से। और यही बात इंटरेकटरों के लिए भी लागू होती है।

उदाहरण के लिए जैसे मुझे बताया गया है कि मैं कल 2,000 रोटरेकटरों से मिलने वाला हूँ; सोचिए, इतने सारे रोटरेकटर एक ही कमरे में! हमारे पास तो पूरे यूरोप में भी इतने रोटरेकटर नहीं हैं और यहाँ आपके पास एक ही कमरे में इतने रोटरेकटरों का होना वाकई अविश्वसनीय है! लेकिन साथ ही, हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि हम उन्हें अपने साथ शामिल करें और उन्हें रोटरी का हिस्सा महसूस कराएं। केवल रोटरेक्ट को उन्नत दर्जा देना ही काफी नहीं है - हमें उन्हें साथ लेकर चलना होगा, उन्हें जोड़ना होगा और मिलकर काम करना होगा। ■

में आता है कि अगर मुझे तैयारी के लिए एक साल का समय मिला होता तो ज्यादा अच्छा होता। लेकिन अब जो कर सकता हूँ, वो मुझे करना है।

क्या इस छोटे कार्यकाल ने उनकी ज़िम्मेदारी को और कठिन बना दिया है? ''इसका अर्थ है ज़्यादा घंटे काम! किसी भी रो ई अध्यक्ष का जीवन बहुत व्यस्त होता है; आपको दुनिया भर में यात्रा करनी होती है, रोटेरियनों के साथ ढेर सारी तस्वीरें खिंचवानी होती हैं! (ज़ोर से हँसते हैं!) यह भी अध्यक्ष की एक मुख्य ज़िम्मेदारी है! मैंने रो ई निदेशक नागेश और एमएमएम से कहा कि मैं यहाँ रोटेरियनों के लिए आया हूँ, उनसे मिलने, उनसे बात करने और उनके साथ तस्वीरें खिंचवाने के लिए! मुझे उन्हें प्रेरित करना है इसलिए मैं उनके लिए हमेशा उपलब्ध हूँ। मुझे रोटरी परिवार के लोगों से मिलकर बहुत खुशी होती है।''

यह आना और अरेज़ो की भारत की तीसरी यात्रा थी; उनकी पहली यात्रा तब हुई थी जब अरेज़ो लखनऊ में आयोजित एक सम्मेलन में रो ई अध्यक्ष के प्रतिनिधि के रूप में आए थे और दूसरी बार कोलकाता में रोटरी के शताब्दी वर्ष के उत्सव के दौरान। स्वाभाविक रूप से आना इस बार थोड़ी निराश थीं - क्योंकि उन्हें शॉपिंग के लिए बिल्कुल समय नहीं मिला! ''हम दोनों को भारत की संस्कृति, इतिहास और खान-पान से बेहद लगाव है। और उम्मीद है कि इस बार नवंबर में जब हम ज़ोन इंस्टिट्यूट के लिए दोबारा आएंगे तो हमें इन सबका आनंद लेने के लिए थोड़ा समय ज़रूर मिलेगा,'' वह कहते है।

आना दृढ़ता से कहती हैं, ''ओह हाँ, मुझे भारत में शॉपिंग करना बहुत पसंद है और मैंने इनसे साफ़ कह दिया है कि अगली बार जब हम आएं, तो मुझे शॉपिंग के लिए थोड़ा वक्त ज़रूर चाहिए!''

भारत में रोटरी और यहाँ के रोटेरियनों द्वारा की जा रही सामुदायिक सेवा परियोजनाओं पर बात करते हुए अरेज़ो कहते हैं: सबसे अच्छी बात - बल्कि यूँ कहूं कि सबसे अद्भुत बात - वो थी जो हमने आज सुबह देखी इतने सारी परियोजनाओं की एक साथ शुरुआत हुई और वो भी अलग-अलग क्षेत्रों में। हमने महिलाओं के लिए 100 मपिंक ऑटोफ देखें इसके ज़रिए आप 100

रोटरेक्टर्स रोटेरियन क्यों नहीं बनते? क्योंकि वे रोटरी पर विश्वास नहीं करते। वे हम पर विश्वास नहीं करते, क्योंकि हम साथ काम नहीं करते और एक-दूसरे को नहीं जानते।

अरेज़ो की रोटरी यात्रा में आना की भूमिका

जब उनसे पूछा गया कि आना की उनके रोटरी सफ़र में क्या भूमिका रही और क्या उन्हें कभी इस बात की नाराज़गी हुई कि रोटरी ने उनके पति के समय का बहुत बड़ा हिस्सा ले लिया - तो अध्यक्ष अरेज़ो कहते है: रो ई का इतना प्रभावी अध्यक्ष बनना और इस पद तक पहुँचना, बिना अपने जीवनसाथी और परिवार के समर्थन के असंभव है। यह एक बहुत बड़ा दायित्व है जिसके लिए बहुत सारा समय देना पड़ता है। इसलिए मुझे कई-कई तरीकों से आना के सहयोग की आवश्यकता होती है और मुझे वह सहयोग हमेशा मिलता है।

आना हँसते हुए आगे कहती हैं, ''मैं उनके सामान की पैकिंग करती हूँ।'' इस पर अरेज़ो जवाब देते हैं: मुझे यहाँ-वहाँ जाना पड़ता है और ये वाकई हैरानी वाली बात है कि आना एक छोटे से सूटकेस में इतनी सारी चीज़ें कैसे रख देती हैं। और जब मुझे लौटते समय वही बैग दोबारा पैक करना होता है तो मुझे समझ ही नहीं आता कि उसने इतना सब कुछ उसमें कैसे रख दिया था - ये तो नामुमकिन सा लगता है!

क्या आना को कभी इस बात का अफ़सोस हुआ कि अरेज़ो रोटरी को इतना समय देते है? ''हाँ, बिल्कुल! क्योंकि मैं घर पर अकेली होती हूँ और कभी-कभी सब कुछ संभालना मुश्किल हो जाता है। औपचारिक रूप से मेरा कोई करियर नहीं है, लेकिन मैं वास्तव में बहुत काम करती हूँ - मैं पूरे परिवार के लिए काम करती हूँ।'' इस पर अरेज़ो हँसते हुए आगे कहते हैं: मैं हमेशा कहता हूँ कि मैं एक ऑलिव ऑयल (जैतून का तेल) उत्पादक हूँ, लेकिन सच्चाई यह है कि असली उत्पादक आना हैं क्योंकि मुझे तो फार्म देखने का समय ही नहीं होता। हमारे पास एक छोटा सा होटल भी है; और फिर वही कि मेरे पास समय नहीं होता। आना ही हैं जो होटल चलाती हैं। वह बहुत सारे काम करती हैं।

अब जब अरेज़ो रोटरी के सर्वोच्च पद पर पहुँच गए हैं तो क्या आना खुश हैं? ''हाँ, मैं बहुत खुश हूँ... लेकिन इस वक्त मैं थोड़ी उलझन में भी हूँ। बहुत सारे काम है करने के लिए, कई कार्यक्रमों में भाग लेना है... सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि हमें तैयारी का समय ही नहीं मिला,'' आना गहरी साँस लेते हुए कहती हैं।

अरेज़ो आगे कहते हैं: हमें अपना घर, अपना फ़ार्म और मेरा दफ़्तर छोड़ना पड़ा और ये सब कुछ बहुत तेज़ी से हुआ। हाँ, हमारे पास बिल्कुल भी समय नहीं था खुद को तैयार करने के लिए। सौभाग्य से, दफ़्तर में मेरी बड़ी बेटी है - वो भी डेंटिस्ट है और मेरे साथ ही काम करती है जब मैंने उसे बताया कि मैं रो ई अध्यक्ष के लिए चुना गया हूँ... तो वो रोने लगी। मैंने पूछा, खुशी से: हाँ, वो खुश तो थी... मगर थोड़ी चिंतित भी थी क्योंकि अब उसे पूरा दफ़्तर अकेले ही संभालना पड़ेगा!

आख़िरी शब्द उनके सहयोगी जॉर्जियो के थे, जो अरेज़ो को इन शब्दों में वर्णित करते हैं: वे एक बहुत ही मानवीय व्यक्ति हैं। लोगों से उनका संबंध बहुत अच्छा है और रोटेरियन इस बात की बहुत सराहना करते हैं। साथ ही वह बहुत विनम्र स्वभाव के हैं इन गुणों का एक बेहद खूबसूरत संगम।

''हम 15 सालों से दोस्त हैं और हमारी एक जैसी ही 'समस्या' है - हमारी दो बेटियाँ हैं और वो भी एक ही उम्र की,'' अरेज़ों मुस्कराते हुए कहते है। ■

महिलाओं को न सिर्फ़ रोज़गार का अवसर दे रहे हैं बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी प्रदान कर रहे हैं। यह एक उत्कृष्ट एवं भावुक कर देने वाली परियोजना थी। हाउस ऑफ़ फ्रेंडशिप में स्वास्थ्य, जल, स्वच्छता जैसे विषयों पर कई प्रभावशाली परियोजनाएं प्रदर्शित की गई। भारत में रोटेरियनों द्वारा किए जा रहे सेवा कार्य शायद दुनिया भर में सबसे अधिक है। यह वाकई अद्भुत है।

दूसरी चीज़ है भारत में रोटेरियनों द्वारा रोटरी फाउंडेशन को दिया जाने वाला योगदान; यह वाकई बहुत बड़ा है। कल हमारे साथ 29 नए ए के एस सदस्य जुड़े - यह अद्भुत है! ऐसा शायद केवल अमेरिका में संभव हो सकता है। लेकिन यह दुनिया के बाकी हिस्सों में लगभग असंभव है। यूरोप में तो यह पूरी तरह असंभव है।

तो यह वास्तव में अद्भुत है। भारत में रोटरी बहुत जीवंत है - यहाँ अनेक शानदार परियोजनाएं हो रही हैं और यहाँ रोटेरियनों में ज़बर्दस्त उत्साह और जुनून है।

रशीदा भगत

आना, अध्यक्ष अरेज़ो और डी जॉर्जियो।

हाल के वर्षों में कुछ पूर्व रो ई अध्यक्षों द्वारा उठाए गए नकारात्मक पहलुओं पर पूछे गए सवाल पर अरेज़ो बिना किसी संकोच के जवाब देते हैं: भारत में बुरा क्या है? कुछ स्थानों पर रोटेरियन आपस में लड़ते हैं। जब हम बोर्ड मीटिंग्स में होते हैं तो हमें चुनावों को लेकर बहुत सारी शिकायतें मिलती हैं। इवेंस्टन में अगर कुल 10 शिकायतें आती हैं तो उनमें से 8 भारत से होती हैं। यह एक गंभीर समस्या है। वे निराशा जताते हुए कहते हैं: भारत में रोटरी के भीतर जो आंतरिक संघर्ष है उसे कम करने का कोई न कोई रास्ता हमें खोजना होगा। यह वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि यहाँ के रोटेरियन इतने सक्रिय, उत्साही और समर्पित हैं।

जब उनसे इस समस्या का कोई संभावित समाधान पूछा गया तो अरेज़ो कंधे उचकाते हुए ईमानदारी से कहते हैं: मुझे नहीं पता। इसका हल खोजना आसान नहीं है। यह एक सांस्कृतिक समस्या है और हमें रोटेरियनों के साथ मिलकर काम करना होगा और उन्हें यह समझाना होगा कि रोटरी में हर किसी के लिए जगह है। अगर आप इस साल क्लब अध्यक्ष या गवर्नर नहीं बन पाए, तो आप इंतज़ार कर सकते हैं। यह कोई इतनी बड़ी बात नहीं है। लेकिन समाधान खोजना आसान नहीं है। इसका इकलौता रास्ता यही है कि रोटेरियनों से बात करके उन्हें समझाया जाए!

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रोटरी, आशा की जीवनरेखा

रशीदा भगत

रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए, (बाएँ से) शिक्षा मंत्री अन्बिल महेश पोय्यामोळी, पीडीजी आई एस ए के नज़र और सम्मेलन संयोजक रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम चित्र में शामिल हैं।

बचपन से ही मैं रोटरी द्वारा की जा रही सेवा को देखता आ रहा हूँ और इससे बहुत प्रभावित और प्रशंसित रहा हूँ। जिस तरह रोटेरियन वंचित परिवारों के लोगों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं, वह कोई साधारण बात नहीं है। आपको बधाई हो,'' तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन ने चेन्नई में रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम द्वारा आयोजित लीड 25 कॉन्क्लेव का उद्घाटन करते हुए कहा।

एक वर्ष में पूरी की जाने वाली **250 करोड़** की विशाल सामुदायिक सेवा परियोजनाओं की शुरुआत करते हुए - जिनमें से कुछ तमिलनाडु सरकार के साथ साझेदारी में की जाएंगी - उन्होंने कहा कि उन्हें सबसे अधिक खुशी उस विशेष परियोजना की थी जिसका उद्घाटन उन्होंने उसी सुबह किया था और जो महिलाओं के सशक्तिकरण से संबंधित थी। ''आज हमने महिलाओं के लिए 100 पिंक ऑटो शुरू किए जो महिलाओं के सशक्तिकरण का एक शानदार उदाहरण है। साथ ही, 250 नए रोटरी क्लबों का गठन होते देखना बहुत ही आनंददायक है। ये सभी उपलब्धियाँ रोटरी की प्रगति के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।''

रोटरी का इतिहास प्रभावशाली और प्रेरणादायक रहा है। 1905 में शिकागो में स्थापित होने के बाद से यह एक वैश्विक परिवार में परिवर्तित हो चुका है, जिसमें आज 220 देशों में 1.4 मिलियन सदस्य हैं। ''लगभग 10,000 प्रतिभागियों से खचाखच भरे इस सभागार में खड़े होकर मैं रोटरी की सेवा, उत्साह, समर्पण और सौहार्द की भावना को महसूस कर सकता हूँ - और देख सकता हूँ कि रोटरी की वैश्विक भावना *नम्मा चेन्नई* तक पहुँच चुकी है। मैं समाज के प्रति रोटरी द्वारा किए जा रहे सेवाभाव की वास्तव में सराहना करता हूँ। शिक्षा, स्वास्थ्य से लेकर सामुदायिक विकास तक - आप जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं।''

रोटरी की भरपूर प्रशंसा करते हुए उदयनिधि ने कहा कि ''मानवता के लिए रोटरी का सबसे बड़ा योगदान पोलियो उन्मूलन कार्य था। 1980 के दशक से ही रोटरी ने पोलियो उन्मूलन अभियान में अग्रणी भूमिका निभाई और इस कार्य के लिए 2.7 बिलियन डॉलर का निवेश किया और लाखों घंटे स्वयंसेवी सेवा में लगाए। रोटरी सदस्यों ने दुनिया भर में पोलियो

के मामलों को 99.9 प्रतिशत तक घटाने में मदद की है – यह एक असाधारण उपलब्धि है। भारत के पोलियो-मुक्त होने की कहानी रोटरी की भूमिका को स्वीकार किए बिना अधूरी है, उन्होंने आगे कहा।

उन्होंने गर्व के साथ याद किया कि कैसे उनके दादा और तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री एम करुणानिधि ने पोलियो उन्मूलन अभियान में रोटरी के साथ मिलकर कार्य किया था। ''तमिलनाडु सरकार और राज्य के रोटेरियनों द्वारा उठाए गए ठोस कदमों के कारण तमिलनाडु पोलियो-मुक्त होने वाला भारत का पहला राज्य बना। इसके लिए पूरा श्रेय रोटरी को जाता है। कोविड महामारी के दौरान भी चिकित्सीय उपकरण, आवश्यक सामग्री और तमिलनाडु सरकार को पूरा सहयोग देने में रोटरी का योगदान उल्लेखनीय रहा। मुझे व्यक्तिगत रूप से रोटरी के साथ उस समय मिलकर कार्य करने का अनुभव है, जब हमने TRF के साथ मिलकर मास्क, सैनिटेशन किटें और अन्य चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराई थी।''

बाएँ से: *शिक्षा मंत्री पोय्यामोळी, पीडीजी नज़र, अध्यक्ष अरेज़ो, तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन और रो ई निदेशक मुरुगानंदम।*

रोटरी द्वारा प्रदान की जा रही अन्य सेवाओं में पिछड़े क्षेत्रों के स्कूलों को सहायता प्रदान करना और डायलिसिस केंद्रों की स्थापना करना शामिल है, जिनसे हजारों लोगों और उनके परिवारों को लाभ मिलता है। ''जितनी सेवा रोटरी कर रही है उसके आधार पर रोटरी केवल एक सेवा संगठन नहीं बल्कि उम्मीद की एक किरण है,'' उन्होंने आगे कहा।

उपमुख्यमंत्री ने बताया कि रो ई निदेशक मुरुगनंदम ने तमिलनाडु सरकार के साथ सहयोग के कुछ प्रस्ताव साझा किए। ''आज हमने *नम्मा स्कूल्स, नम्मा ऊरु पळ्ळि* पहल और पूरे राज्य में महिलाओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा हेतु सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूकता और टीकाकरण अभियान के लिए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करके इसकी शुरुआत की।'' उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि उत्कृष्ट रोटेरियनों को राज्य स्तर पर सामाजिक सेवा पुरस्कार दिए जाएँ। ''मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी सरकार ने इन सभी प्रस्तावों को गंभीरता से संज्ञान में लिया है और हम इन्हें आगे बढ़ाने के हर संभावित तरीकों की खोज करेंगे।''

उदयनिधि ने आगे कहा कि वर्तमान तमिलनाडु सरकार ''खेलों के विकास के लिए भी प्रतिबद्ध है और हम युवाओं के सशक्तिकरण हेतु खेलों के क्षेत्र में रोटरी के साथ मिलकर काम करने और सहयोग करने के लिए उत्सुक हैं।''

उन्होंने अपने संबोधन का समापन करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन ''सच्चे नेतृत्व की परिभाषा हैं, जो केवल पद या शक्ति से नहीं बल्कि सेवा, त्याग और जिम्मेदारी से जुड़ा होता है। हम सरकार में भी रोटरी के समान मूल्यों के साथ कार्य कर रहे हैं ताकि एक ऐसा समाज बना सकें जो सामाजिक समानता और लैंगिक न्याय पर आधारित हो। रोटरी जैसे साझेदारों के साथ हम और भी व्यापक प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं।''

तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन पिंक ऑटो *परियोजना के लाभार्थियों के साथ।*

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए तमिलनाडु के स्कूल शिक्षा मंत्री अन्बिल महेश पोय्यमोळी ने *नम्मा स्कूल, नम्मा ऊरु पळ्ळि* पहल के अंतर्गत 1,000 सरकारी स्कूलों के बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने के लिए तमिलनाडु सरकार और रोटरी के बीच हुए समझौता ज्ञापन का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि यह योजना तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन द्वारा दिसंबर 2022 में शुरू की गई ताकि सरकारी स्कूलों के बुनियादी ढांचे और सुविधाओं को उन्नत बनाया जा सके। ''मुख्यमंत्री ने इस योजना में सबसे पहले ₹5 लाख का योगदान दिया था। आज यह योजना ₹ 800 करोड़ तक पहुँच चुकी है और पूरी पारदर्शिता के साथ चलाई जा रही है। आपको इन स्कूलों का हाल इनके उन्नयन से पहले और बाद में देखना चाहिए - फर्क साफ नज़र आता है।''

उन्होंने 1,000 और स्कूलों के नवीनीकरण के लिए रोटरी के साथ किए गए इस सहयोग की सराहना करते हुए रोटरी को धन्यवाद दिया और मुरुगानंदम को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए बधाई दी। ''वह अपने पद की वजह से विशेष नहीं हैं बल्कि इसलिए है कि वह एक ऐसे रोटेरियन हैं जो वंचितों, दलितों और दिव्यांगों का दर्द समझते हैं। यदि आपके कार्य दूसरों को अधिक करने, अधिक बनने, अधिक सीखने और बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित करते है तो आप एक सच्चे और प्रभावशाली नेता हैं।''

उन्होंने कहा कि तमिलनाडु सरकार शिक्षा को अत्यधिक महत्व देती है और ऐसे में 1,000 स्कूलों में स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं को बेहतर बनाने में रोटरी का सहयोग अत्यंत सराहनीय है। महात्मा गांधी के कथन ''शिक्षा जीवन के लिए है'' का उद्धरण देते हुए उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने हाल ही में टी एन स्पार्क पहल की शुरुआत की है जिसके अंतर्गत छात्रों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), रोबोटिक्स, कंप्यूटर विज्ञान की मूल बातें और अन्य ऑनलाइन टूल्स के उपयोग की शिक्षा हाई-टेक लैब्स के माध्यम से दी जाएगी - और वह भी कम उम्र से ही।

''सरकार का उद्देश्य यह है कि स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद सभी बच्चे - न केवल

PRIP कल्याण बेनर्जी का सम्मान

तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड भेंट करते हुए। (बाएँ से) रो ई निदेशक मुरुगानंदम, अध्यक्ष अरेज़ो, पीआरआईडी सी भास्कर और सम्मेलन अध्यक्ष पीडीजी जॉन डेनियल चित्र में शामिल हैं।

पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी को लीड25 के उद्घाटन सत्र में सम्मानित किया गया। उनका परिचय कराते हुए PRID सी भास्कर ने कहा कि उन्हें यह सम्मान रोटरी में 1972 से अब तक के 50 वर्षों की उनकी उत्कृष्ट सेवा और नेतृत्व के लिए दिया जा रहा है, इसमें टीआरएफ के शताब्दी वर्ष में उनका न्यासी अध्यक्ष बनने का कार्यकाल भी शामिल है।

''हम सभी रोटरी और इसके मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता से प्रभावित हैं, उन्होंने कहा और एक व्यक्तिगत अनुभव साझा किया जिसमें उन्होंने यह महसूस किया कि सामूहिक इच्छाशक्ति और करुणामय नेतृत्व के माध्यम से चमत्कार संभव हैं।''

जब 2018 में केरल और कर्नाटक में आई भीषण बाढ़ के कारण हज़ारों घर तबाह हो गए, उस समय सी भास्कर रो ई निदेशक थे। चेन्नई में आयोजित रोटरी इंस्टीट्यूट के दौरान जब प्रभावित मंडलों के डीजीयों ने तत्काल सहायता की माँग की तो एक पहल शुरू की गई जिसका उद्देश्य था - रोटरी क्लबों और उदार दाताओं से तुरंत फंड जुटाकर गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों के घरों और जीवन को बहाल करना। इस पहल के नेतृत्व की ज़िम्मेदारी बैनर्जी को सौंपी गई। उन्होंने त्वरित रूप से सक्रिय होकर प्रत्येक बैठक में भाग लिया... वे हमें मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देते रहे और यह सुनिश्चित किया कि यह परियोजना ट्रैक पर रहे और समय पर पूरी हो। परिणामस्वरूप रिकॉर्ड समय में 60 घर लाभार्थियों को सौंप दिए गए।

अपने संबोधन में कल्याण बेनर्जी ने इस सम्मान के लिए आयोजकों को धन्यवाद दिया और कहा कि पिछले पचास वर्षों से रोटरी उनके जीवन का एक अभिन्न हिस्सा रही है - जैसे सुबह का नाश्ता और शाम की चाय। ''पिछले 50 वर्ष बेहद महत्वपूर्ण रहे हैं... आज जब मैं पीछे मुड़कर इस आधी सदी को देखता हूँ, तो अक्सर सोचता हूँ - क्या हमने सही काम किए? क्या हम अपने शहर, अपने समुदाय, अपने संगठन और इस दुनिया के लिए वास्तव में कुछ लाभकारी कर रहे हैं? क्या लोग जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं और रोटरी किस लिए है?''

एक उदासीन स्वर में उन्होंने कहा कि उन्हें ये पंक्तियाँ याद आ रही हैं (अंग्रेज़ी कवि वाल्टर सेवेज लैंडोर की कविता *Dying Speech of an Old Philosopher* से): I strove with none, for none was worth my strife./ Nature I loved and, next to Nature, Art (and Rotary's motto of doing, giving, serving)/ I warm'd both hands before the fire of life./ It sinks, and I am ready to depart. ■

सेवा परियोजनाएं एवं समझौता ज्ञापन

अध्यक्ष अरेज़ो हाउस ऑफ फ्रेंडशिप में प्रोजेक्ट ऑरेंज स्टॉल पर नेत्र जांच कराते हुए। उनकी पत्नी आना मारिया, रो ई निदेशक मुरुगानंदम और के पी नागेश भी चित्र में शामिल हैं।

लीड25 सम्मेलन में पूरे भारत में ₹250 करोड़ मूल्य की सेवा परियोजनाएं शुरू की गई और विभिन्न कारणों के लिए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

इन समझौता ज्ञापनों में निम्नलिखित प्रमुख पहलें शामिल हैं: तमिलनाडु सरकार के साथ *नम्मा स्कूल नम्मा ऊरु पल्लि* पहल के अंतर्गत राज्य भर के 1,000 सरकारी स्कूलों के बुनियादी ढांचों का रोटरी क्लबों द्वारा उन्नत किया जाना। मार्टिन चैरिटेबल ट्रस्ट के साथ तीन साल की साझेदारी जिसके अंतर्गत 'मियावाकी वन' पद्धति से हरित आवरण बढ़ाने और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्स्थापित करने के लिए राज्य के पांच स्थानों पर हरित क्षेत्र विकसित किए जाएंगे। एल्लुप्पालयम आरुमुगम ट्रस्ट के साथ तीन साल की साझेदारी के अंतर्गत 50,000 पेड़ लगाए जाएंगे। कावेरी ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के साथ एक वर्ष की साझेदारी के अंतर्गत बच्चों के हृदय रोगों के इलाज में सहयोग किया जाएगा। *कमल पन्पाट्टु मैय्यम* के साथ एक वर्ष की साझेदारी के अंतर्गत युवाओं को नेतृत्व, नागरिक जिम्मेदारी और व्यावसायिक कौशल प्रदान किए जाएंगे। साथ ही नवाचार, उद्यमिता और पर्यावरणीय जागरूकता को भी बढ़ावा दिया जाएगा।

इस कार्यक्रम में जिन सेवा परियोजनाओं की शुरुआत की गई, उनमें शामिल हैं: स्कूलों के बुनियादी ढांचों का उन्नयन, वयस्क साक्षरता के लिए मोबाइल कक्षा, स्कूलों में डिजिटल कक्षाओं की स्थापना; डायलिसिस केंद्रों की स्थापना, ब्लड बैंक, मोबाइल क्लिनिक और एम्बुलेंस सेवाएँ, विशेष रूप से आदिवासी और दूरदराज़ के गाँवों के लिए, टीबी और कैंसर देखभाल सेवाएँ, मानव दूध बैंक, दृष्टिहीनों को स्मार्ट ग्लास उपलब्ध कराना; कम लागत वाले घरों का निर्माण, समुदायों के लिए चेक डैम और शौचालयों का निर्माण, श्मशान घाट, वृद्धाश्रम और कौशल विकास केंद्रों की स्थापना; पर्यावरण संरक्षण पहल के अंतर्गत कचरा पुनर्चक्रण संयंत्र, झीलों का पुनरुद्धार और मियावाकी वन का निर्माण। ■

***बाएँ से:** रो ई मंडल 3234 के डीजी विनोद सरावगी, अध्यक्ष अरेज़ो, आना, रो ई निदेशक मुरुगानंदम, मोनिक चेम्बर्स (अध्यक्ष के सहायक जॉन डी जोर्जियो की पत्नी) और रो ई निदेशक नागेश पिंक ऑटो लाभार्थियों के साथ।*

विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के, बल्कि ऑटो रिक्शा चालकों और समाज के अन्य वंचित वर्गों के बच्चे भी - देश के सर्वश्रेष्ठ कॉलेजों में दाखिला लें जिनमें IITs, IIMs और लॉ यूनिवर्सिटी जैसी प्रतिष्ठित संस्थान शामिल है।''

लीड25 सम्मेलन के संयोजक मुरुगानंदम ने कहा कि यह सम्मेलन विशेष रूप से रोटारेक्टरों और इंटरेक्टरों सहित सभी रोटेरियनों को इस तरह के रोटरी आयोजनों में भाग लेने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है। उन्होंने बताया कि इस दो-दिवसीय कार्यक्रम में ₹250 करोड़ की लागत से रिकॉर्ड संख्या में सेवा परियोजनाओं की शुरुआत की जा रही है और इसके लिए अनेक साझेदारियों व समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जा रहे हैं। (बॉक्स देखें) उन्होंने मुख्य अतिथि - तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री - से स्कूलों में RYLA कार्यक्रम शुरू करने का अनुरोध किया और इंटरेक्टरों एवं रोटरेक्टरों को भी उसी तरह अंक व लाभ दिए जाएँ जैसे एनसीसी और एनएसएस कैडेट्स को दिए जाते हैं।

रो ई निदेशक ने यह भी अनुरोध किया कि तमिलनाडु सरकार स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर उत्कृष्ट रोटेरियनों को सम्मानित करने के लिए राज्य स्तरीय समाज सेवा पुरस्कार शुरू करे। ''हम आपसे यह भी निवेदन करते हैं कि चेन्नई या त्रिची में रोटरी को एक 'रोटरी डिजास्टर रिलीफ एंड कम्युनिटी सेंटर' स्थापित करने हेतु भूमि आवंटित की जाए,'' उन्होंने आगे कहा।

बाएँ से: अध्यक्ष अरेज़ो, आना, रो ई निदेशक क्रिस्टीन ब्यूरिंग और टीआरएफ न्यासी भरत पांड्या।

रो ई अध्यक्ष अरेज़ो और उनकी पत्नी आना के अलावा इस कार्यक्रम में सह-संयोजक और रो ई निदेशक के पी नागेश, जर्मनी से रो ई निदेशक क्रिस्टीन बुएरिंग, टीआरएफ न्यासी भरत पांड्या, पूर्व रो ई निदेशक अशोक महाजन, पी टी प्रभाकर, सी भास्कर, ए एस वेंकटेश, राजू सुब्रमणियन और अनिरुद्धा रॉयचौधरी ने भी भाग लिया।

सम्मेलन के अध्यक्ष जॉन डेनियल ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया और कार्यक्रम सचिव वाई कुमनन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, अभिनेता व सांसद कमल हासन, कावेरी ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के संस्थापक डॉ एस चंद्रकुमार और पीएसएनए कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, चेन्नई के प्रो-चेयरमैन आर एस के रघुराम को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

रो ई निदेशक मुरुगनंदम, तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन और राज्य के शिक्षा मंत्री पोय्यामोळी के साथ।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी में दान एक उत्सव है

वी मुत्तुकुमारन

भारत में उदारता रोज़मर्रा की ज़िंदगी में रची-बसी है। ज़रूरतमंदों को भोजन कराने वाले अन्नदान से लेकर गुरुद्वारों की विशाल सामुदायिक रसोई तक, रोज़मर्रा की दयालुता के ये कार्य लोगों को एक साथ लाते हैं, ऐसा रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो ने चेन्नई में रोटरी इंडिया लीडरशिप कॉन्क्लेव से पहले आयोजित प्रीलीड कार्यक्रम में कहा।

भारतीय रोटरी नेताओं, भारत, श्रीलंका और नेपाल ज़ोन के गवर्नर्स काउंसिल, ए के एस और एंडोमेंट फंड दानदाताओं को संबोधित करते हुए, अरेज़ो ने कहा कि टीआरएफ को दिया गया दान कोई 'अमूर्त दान' नहीं है क्योंकि "आप दुनिया भर के 46,000 क्लबों के 1.4 मिलियन रोटेरियन के नेटवर्क को जोड़ रहे हैं और उदारता को स्थायी, उच्च-प्रभाव वाली परियोजनाओं में बदल रहे हैं, जो स्थायी परिवर्तन लाती हैं। देने के कई कारण हैं - नैतिक कर्तव्य, धार्मिक शिक्षा या सामाजिक ज़िम्मेदारी - लेकिन शायद सबसे सुंदर कारण सबसे सरल है: देने से अच्छा लगता है। ए के एस सदस्य

बाएँ मेज़ पर: रो ई निदेशक नागेश, पीआरआईपी के आर रवीन्द्रन, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, न्यासी पांड्या, पीआरआईडी गण राजू सुब्रमणियन और अशोक महाजन, पीडीजी राजा सीनीवासन और लीड25 सचिव पीडीजी वाई कुमनन। दाएँ मेज़ पर (दाएँ से): पीआरआईडी ए एस वेंकटेश, रो ई निदेशक मुरुगानंधम, सुमति, माला, पीआरआईडी सी भास्कर, रो ई अध्यक्ष के सहायक जॉन डी जोर्जियो, उनकी पत्नी मोनिक चेम्बर्स, आना मारिया और रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो।

सम्मेलन सह-संयोजक रो ई निदेशक के पी नागेश और रो ई निदेशक क्रिस्टीन ब्यूरिंग दीप प्रज्वलित करते हुए, (दाएँ से) टीआरएफ न्यासी भरत पांड्या, आना मारिया, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, सम्मेलन संयोजक रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, सुमति और प्री-लीड25 अध्यक्ष पीडीजी जे श्रीधर भी चित्र में शामिल हैं।

होना न केवल सम्मान की बात है, बल्कि मानवता की सेवा के लिए रोटेरियनों की 'असीम करुणा और अटूट प्रतिबद्धता' का एक उज्ज्वल प्रमाण भी है।

पिछले रोटरी वर्ष (2024-25) में, भारत ने फाउंडेशन के लिए **38.2 मिलियन डॉलर** से अधिक जुटाए, और इस वर्ष, भारतीय क्लबों ने अपने धन उगाहने के लक्ष्यों को पार करने की प्रतिबद्धता जताई है, अरेज़ो ने बताया। पिछले वर्ष भारत क्षेत्र में रिकॉर्ड तोड़ **47 ए के एस सदस्य** बने और पहली बार, **13 रो ई मंडलों ने टीआरएफ-दान में 1 मिलियन डॉलर** का आंकड़ा पार किया है। सबसे अधिक ए के एस सदस्यों वाला वैश्विक नेता होने के नाते रो ई मंडल 3141 ''आशा की किरण है, जो हम सभी के लिए आगे का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।'' ए के एस सदस्यों की संख्या के मामले में भारत तीसरे स्थान पर है।

आधुनिक शोध का हवाला देते हुए, अरेज़ो ने बताया कि दूसरों की मदद करने से व्यक्ति अधिक खुश रहता है, यह बात भारतीय ऋषियों ने सदियों पहले कही थी। ''उदारता हमारा मनोबल बढ़ाती है, हमें दूसरों से जोड़ती है, और हमें याद दिलाती है कि वास्तव में क्या मायने रखता है।''

उपकारक से भागीदार

जब रोटेरियन न केवल अपने संसाधन, बल्कि ''अपना समय, ध्यान और प्रयास भी देते हैं, तब हम उपकारक नहीं, बल्कि भागीदार बन जाते हैं।'' उन्होंने कहा कि ''अक्सर हमें जो उपहार मिलता है, वह हमारे द्वारा दिए गए उपहार से कहीं अधिक बड़ा होता है।''

रो ई अध्यक्ष ने कहा कि यह रोटेरियनों पर भी लागू होता है, जो न केवल छात्रवृत्तियों के लिए धन मुहैया कराते हैं, बल्कि अपने छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं और उन्हें नौकरी पाने में मदद भी करते हैं; पोलियो टीकाकरण अभियान पर भी लागू होती है, जब दानकर्ता अपनी आस्तीनें चढ़ाकर उन बहुमूल्य टीके की बूंदों को पिलाते हैं, यह जानते हुए कि वे इतिहास का हिस्सा बन रहे हैं।

''अब बड़े पैमाने पर कार्यक्रम भारतीय किसानों को बेहतर फसल काटने में मदद कर रहे हैं, एक किसान जो साल में एक बार बोता था, अब दो बार फसल काटता है; एक माँ जो पानी लाने के लिए घंटों पैदल चलती थी, अब कक्षाओं में जाती है या बाज़ार जाती है; एक गाँव जो पहले बारिश का इंतज़ार करता था, अब पानी इकट्ठा करना और बाँटना सीख रहा है। उन्होंने कहा कि ऋषियों के अनुसार, सच्चा आनंद (संस्कृत में *आनंदा*) वह है जब हम प्रेम, करुणा और सेवा के कार्य में खुद को भूल जाते हैं। यह वही देने का आनंद है जो जितना हम बाँटते हैं, उतना ही बढ़ता जाता है। रोटरी में देना केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि एक उत्सव है।''

लीड कॉन्क्लेव को भारत के 1.75 लाख रोटेरियनों के लिए एक मिनी रो ई कन्वेंशन के रूप में तैयार किया गया था, विशेषकर उनके लिए जो विभिन्न कारणों से रोटरी कन्वेंशन में शामिल नहीं हो पाए थे। रो ई के निदेशक एम मुरुगानंदम ने कहा, हमारा उद्देश्य देशभर के सभी रोटेरियनों को एक ही परिवार की तरह एक ही मंच पर एकत्र करना है। हालाँकि भारत सदस्यता और टीआरएफ-दान में दूसरे स्थान पर है, ''हमने चालू वर्ष के लिए 50 मिलियन डॉलर का लक्ष्य रखा है। इसके साथ ही 100 नए ए के एस सदस्य और 100 एंडोमेंट दानदाताओं को जोड़ने का भी संकल्प लिया है।'' उन्होंने कहा,

16 साल की उम्र में रोटरेक्टर के रूप में रोटरी में शामिल होने के बाद, ''मैं निस्वार्थ सेवा में अपनी 36 साल की यात्रा का आनंद ले रहा हूँ।''

निदेशक के रूप में अपने नामांकन के बाद पिछले 18 महीनों को याद करते हुए, रो ई के निदेशक के पी नागेश ने लंबी चर्चा के बाद कहा, ''मुरुगानंदम और मैंने लक्ष्य-निर्धारण के लिए 10 कार्यक्रमों की योजना बनाई थी, लेकिन समय के साथ, अब यह संख्या बढ़कर 16 हो गई है।'' कुछ उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि 1:2:3 फॉर्मूला और रेड-एम्बर-ग्रीन रणनीति भारत में रोटरी के लिए चमत्कार साबित होगी। उन्होंने आगे कहा, ''हमारा लक्ष्य इस साल के अंत तक भारत में 2,00,000 सदस्यों तक पहुँचना है। सी एस आर अनुदानों का लाभ उठाने के लिए, चार क्षेत्रों में रोटरी-सी एस आर राष्ट्रीय पुरस्कार दिए जाएँगे, जिसके बाद दिल्ली स्थित रोटरी संस्थान में अंतिम कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।''

नागेश ने बताया कि प्रीलीड का उद्देश्य पूर्व मंडल गवर्नरों को निदेशकों का मार्गदर्शन करने और उनके कार्यों में सहयोग करने के लिए प्रेरित करना था। ''हमने उनसे नए रोटरेक्ट और इंटरेक्ट क्लब शुरू करने में मदद करने का आग्रह किया। इसके परिणाम पहले ही दिखाई देने लगे हैं, एक महीने से भी कम समय में 1,000 इंटरेक्ट क्लब बन गए हैं और हमारे ज़ोन में 400 रोटरेक्ट क्लब चार्टर की प्रक्रिया में हैं।''

ट्रस्टी भरत पांड्या ने कहा, ''अगर रोटेरियन रोटरी का दिल हैं, तो टीआरएफ इसकी रीढ़ है और बाहरी दुनिया की वह खिड़की है जहाँ हम ज़िंदगी को छू रहे हैं और उन्हें बदल रहे हैं। अमेरिका के नोट्रे डेम विश्वविद्यालय की साइंस ऑफ जेनरोसिटी परियोजना ने पाया है कि हमारा समय, प्रतिभा और धन सहित, मुफ़्त और प्रचुर मात्रा में दिया गया कोई भी दान मानवता के लिए बहुत लाभकारी होगा।'' उन्होंने कहा कि मधुकोशों की तरह, रोटेरियन दुनिया में भलाई के लिए बार-बार देते रहेंगे।

टीआरएफ अपने शांति विद्वानों के माध्यम से एक शांतिपूर्ण विश्व के लिए भी काम करता है, और सिम्बायोसिस विश्वविद्यालय, पुणे को जनवरी-फरवरी 2026 तक अगला रोटरी शांति केंद्र मिल जाएगा, जिसके बाद वहाँ नए बैच शुरू हो जाएँगे, उन्होंने कहा। ''टीआरएफ हमारे और उनके बच्चों के लिए एक निवेश है, ठीक वैसे ही जैसे हम आज उन पेड़ों के फलों का आनंद लेते हैं, जिन्हें हमारे पूर्वजों ने लगाया था।''

जर्मनी से रो ई निदेशक क्रिस्टीन ब्यूरिंग ने ए के ''एस दानदाताओं को हमारे फाउंडेशन पर भरोसा करने के लिए धन्यवाद दिया, ''जो दुनिया भर में जीवन बदल रहा है।''

अरेज़ो ने प्रीलीड में 29 नए ए के एस सदस्यों और 31 नए एंडोमेंट फंड दानदाताओं को सम्मानित किया। इस प्रीलीड में भारत क्षेत्र से 475 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। दो दिवसीय लीड कॉन्क्लेव में चेन्नई क्षेत्र के रो ई मंडल 3233 और 3234 से 10,000 से अधिक रोटेरियन और 2,850 रोटरेक्टर्स ने पंजीकरण कराया था। पीडीजी जे श्रीधर (रो ई निदेशक 3234) कार्यक्रम के अध्यक्ष और पीडीजी राजशेखर श्रीनिवासन (रो ई निदेशक 3201) सचिव थे।■

ओलायिंका हकीम बाबालोला 2026-27 के रो ई अध्यक्ष

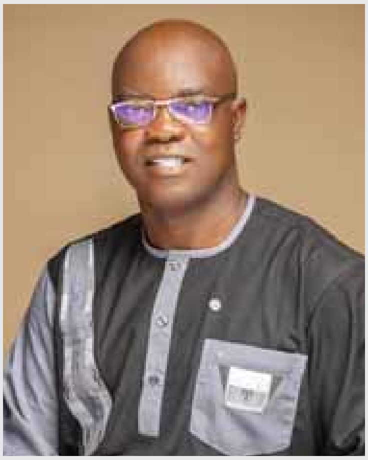

RIPE ओलायिंका हकीम बाबालोला

नाइजीरिया के ट्रांस अमाडी रोटरी क्लब के सदस्य ओलायिंका हकीम बाबालोला को निदेशक मंडल द्वारा 2026-27 के लिए रो ई अध्यक्ष चुना गया हैं। उनका कार्यकाल 1 जुलाई 2026 से शुरू होगा।

रो ई नियमों के अनुसार निदेशक मंडल ने एक विशेष सत्र आयोजित किया ताकि संगठन के नए नेता का चयन किया जा सके। यह निर्णय तब लिया गया जब रो ई के निर्वाचित अध्यक्ष सांगकू यून ने हाल ही में अपने कैंसर उपचार के बाद अपने स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए रोटरी की जिम्मेदारियों से पीछे हटने का फैसला किया। (सांगकू का निधन 5 सितम्बर को हुआ)।

बाबालोला ने 1984 में एक रोटारेक्टर के रूप में अपनी रोटरी यात्रा शुरू की थी। उन्होंने दस साल बाद अपने क्लब की सदस्यता ली। उनकी नेतृत्व भूमिकाओं में डीजी (2011-12), रो ई के उपाध्यक्ष (2019-20) और 2018-20 के दौरान रो ई मंडल के सदस्य के रूप में सेवा देना शामिल है। इसके अलावा वह रो ई की विभिन्न समितियों में भी सक्रिय नेतृत्वकर्ता और भागीदार रहे हैं, जैसे कि एंड पोलियो नाउ: काउंटडाउन टू हिस्ट्री अभियान समिति (2017-23) और नाइजीरिया नेशनल पोलियोप्लस समिति (2013 से वर्तमान तक; 2016 से सलाहकार के रूप में)।

बाबालोला ने 1988 में इंजीनियरिंग में विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने तेल और गैस उद्योग में 25 वर्षों तक कार्य किया जहाँ उन्होंने शेल पीएलसी में वरिष्ठ पदों पर जिम्मेदारी निभाई। वे दो कंपनियों के संस्थापक भी हैं: रिवेरा टेक्निकल सर्विसेज लिमिटेड - जो एक तेल और गैस इन्फ्रास्ट्रक्चर डिलीवरी कंपनी है। लेड एंड चेंज कंसल्टिंग - जो एक एग्जीक्यूटिव कोचिंग और संगठनात्मक प्रदर्शन सलाहकार समूह है।

बाबालोला अपनी पत्नी प्रेबा के साथ पोर्ट हार्कोर्ट शहर में रहते हैं। वह एक नामित अक्षय निधि और आर्च क्लम्प सोसाइटी के एक सदस्य के रूप में टीआरएफ का समर्थन करते हैं। वह शेल्टरबॉक्स यूके के एक न्यासी भी हैं। उन्हें अफ्रीका सेंटेनियल हीरोज़ अवार्ड, पोलियो-मुक्त विश्व के लिए क्षेत्रीय सेवा पुरस्कार, रोई का स्वयं से ऊपर सेवा पुरस्कार, द रोटरी फाउंडेशन मेरिटोरियस सर्विस सम्मान जैसे कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए हैं।

Rotary.org

एक STEM लैब छात्रों को सशक्त बनाती है

टीम रोटरी न्यूज़

चेन्नई के विद्योदय गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल में अब छात्र ड्रोन उड़ा सकते हैं, रोबोट प्रोग्राम कर सकते हैं और 3D प्रिंटर से अपने विचारों को हकीकत में बदलते देख सकते हैं। यह संभव हो पाया है रोटरी क्लब चेन्नई हॉलमार्क, रो ई मंडल 3234 द्वारा स्कूल में स्थापित रोटरी हॉलमार्क सृष्टि STEM लैब के कारण।

PDG जे श्रीधर (दाएँ से दूसरे) रोटरी क्लब चेन्नई हॉलमार्क के IPP अनिल कुमार (बाएँ से दूसरे) और प्रोजेक्ट चेयर एस रामा (दाएँ) के साथ STEM लैब के उद्घाटन समारोह में शामिल हैं।

जून में पीडीजी जे श्रीधर द्वारा उद्घाटन की गई यह हाई-टेक लैब, एसटीईएम, रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ड्रोन और 3D प्रिंटिंग जैसी सुविधाओं से सुसज्जित है। क्लब के आईपीपी एस अनिल कुमार कहते हैं कि इस पहल के माध्यम से, क्लब का उद्देश्य कम उम्र से ही छात्रों में वैज्ञानिक सोच को जगाना और उन्हें भविष्य के नवप्रवर्तक, इंजीनियर और शोधकर्ता बनने के लिए तैयार करना है।

हमारा मानना है कि नवाचार की शुरुआत कक्षाओं से ही होनी चाहिए। बच्चों को कम उम्र में ही वास्तविक दुनिया की नई तकनीकों से परिचित कराकर, हम उन्हें अलग तरह से सोचने और समस्याओं को रचनात्मक रूप से हल करने का आत्मविश्वास दे रहे हैं, क्लब की चार्टर अध्यक्ष एस. रामा कहती हैं, जिन्होंने इन STEM लैब परियोजनाओं की परिकल्पना की और उन्हें हकीकत में बदला। यह क्लब द्वारा स्थापित दूसरी STEM लैब है, और योजना है कि इस परियोजना को आगे बढ़ाकर अधिक स्कूलों तक पहुँचाया जाए।

छात्र लैब में विभिन्न अध्ययन मॉडलों का अनुभव करते हुए।

इस पहल को इंपीरियल ग्रेनाइट्स और सिंगापुर के एन शंकर का समर्थन मिला। चेन्नई स्थित कलविशाला इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड स्किल डेवलपमेंट एलएलपी ने प्रयोगशाला के बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षण संसाधनों की स्थापना में मदद की।

रोबोटिक किट पर काम करते और अपने पहले मॉडल प्रिंट करते हुए छात्रों के चेहरों पर उत्साह साफ़ झलक रहा था। कक्षा 9 के एक छात्र ने कहा, ''मुझे नहीं पता था कि मैं ऐसा कुछ बना सकता हूँ। अब मैं और सीखना चाहता हूँ और कुछ उपयोगी बनाना चाहता हूँ।''

मुस्कुराते हुए अनिल कुमार कहते हैं, *हॉलमार्क सृष्टि* जैसी परियोजनाओं के माध्यम से रोटरी सिर्फ उपकरण दान नहीं कर रही, बल्कि सपनों को साकार कर रही है। ■

रोटरी को अब पूर्व की ओर देखना होगा: रो ई अध्यक्ष

रशीदा भगत

बाइबिल की एक घटना को याद करते हुए जब पैगंबर "बरूख मनिर्वासन और निराशा की स्थिति में थे तो उन्होंने अपने लोगों से कुछ असामान्य करने... पूर्व की ओर देखने को कहा", रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो ने चेन्नई में लीड25 सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा, "मुझे लगता है कि रोटरी भी इस समय हमें पूर्व की ओर देखने की वजह देती है - केवल कहने के लिए नहीं बल्कि वास्तविक अर्थों में भी।"

उन्होंने यह बात इसलिए कही क्योंकि "हाल के वर्षों में रोटरी की सबसे सशक्त और ऊर्जावान सदस्यता वृद्धि एशिया से हुई है - और विशेष रूप से भारत में हम कुछ असाधारण देख रहे हैं। यह केवल संख्या की वृद्धि नहीं है बल्कि समुदाय की सेवा में उद्देश्य और स्पष्टता की बढ़ोत्तरी भी है।"

सदस्यता और सदस्यों को बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि "रो ई केवल क्लबों या परियोजनाओं के लिए नहीं है - यह लोगों से बनी है। और लोग यहाँ तब तक जुड़े रहते हैं जब उन्हें केवल कर्तव्य नहीं बल्कि उससे अधिक गहरा जुड़ाव महसूस हो वे तब तक जुड़े रहते हैं जब उनका जुड़ाव केवल क्लब से नहीं बल्कि एक-दूसरे से भी होता है।"

रो ई अध्यक्ष ने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले पूरे दशक के दौरान, "हर साल हम दुनिया भर से दसियों हज़ार लोगों का स्वागत करते हैं लेकिन लगभग उतनी ही संख्या में लोग रोटरी छोड़ भी देते हैं। साल दर साल यही होता आ रहा है।"

रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो

सदस्यता वृद्धि और सदस्यता छोड़ने के बीच का यह तनाव केवल रोटरी की समस्या नहीं है बल्कि उस दुनिया का प्रतिबिंब है जिसमें हम रहते हैं। ''लोग अपने जीवन में अर्थ तलाशते है लेकिन उन्हें वह हमेशा नहीं मिलता। वे रोटरी से इसलिए जुड़ते हैं क्योंकि वे उसके मूल्यों की प्रशंसा करते हैं लेकिन वे तब उसे छोड़ देते हैं जब रोटरी केवल एक ढांचा बनकर रह जाती है - जहाँ समय तो व्यतीत होता है मगर कुछ सार्थक नहीं होता।''

इसलिए उन्होंने कहा इस वर्ष का आह्वान यूनाइट फॉर गुड अर्थात *अच्छाई के लिए एकजुट,* ''सिर्फ एक नारा नहीं है हम अच्छे कार्यों के लिए एकजुट होते हैं ताकि हर सदस्य को यह महसूस हो कि वह हमारे संगठन का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न हिस्सा है और उसमें उनकी भागीदारी और जुड़ाव बना रहे।''

''हम अच्छाई के लिए एकजुट तब होते हैं जब हम अपने समुदायों में योगदान करते हैं और एक-दूसरे से यह सीखते हैं कि स्थायी बदलाव कैसे लाया जाए। हम तब भी अच्छाई के लिए एकजुट होते हैं जब हम शांति की नींव रखते हैं, विश्वास अर्जित करते हैं और मित्रता के अवसर प्रदान करते हैं। यह अवसर केवल रोटरी या रोटरेक्ट क्लब ही दे सकते हैं।''

लगभग 12,000 प्रतिभागियों की इस विशाल सभा में क्लब नेताओं को संबोधित करते हुए अरेज़ो ने कहा, आपमें से कई लोग यहाँ मौजूद हैं। ''अपने सदस्यों से बातचीत करके यह समझने की कोशिश करें कि वे क्या चाहते हैं। उनके लक्ष्यों और इच्छाओं पर चर्चा शुरू करें और जितना हो सके उनसे व्यक्तिगत रूप से जुड़ने का प्रयास करें। अपने समुदाय के लोगों से संपर्क करें यह जानने के लिए कि आपके क्लब उनके लिए और क्या सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।''

जब वे ऐसा करेंगे तो उन्हें सेवा परियोजनाओं को करने का अवसर मिलेगा। सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करना और सार्थक संवाद व बातचीत करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

रो ई अध्यक्ष ने प्रतिनिधियों को यह सुझाव भी दिया कि वे ''रोटरी को शांति का एक माध्यम बनाएं क्योंकि यह एक ऐसा मंच है जो आपको उन लोगों से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है, जिनसे आप सामान्यतः कभी नहीं मिल पाते। यह सेवा का ऐसा माध्यम है जिससे आप अधिक एकजुट, स्वस्थ और शांतिपूर्ण समुदायों का निर्माण कर सकते हैं। आज के समय में शांति का महत्व और भी बढ़ गया है।''

अध्यक्ष अरेज़ो HoF में **प्रोजेक्ट ऑरेंज स्टॉल में।** *(बाएँ) रो ई निदेशक मुरुगानंदम और हाउस ऑफ फ्रेंडशिप के अध्यक्ष पीडीजी एस मुत्तुपलनियप्पन भी चित्र में शामिल हैं।*

उनका मानना है कि शांति का उद्देश्य लोगों को ''गरीबी, रोग और पर्यावरण विनाश से मुक्त करना है अशुद्ध जल, खराब स्वच्छता और शिक्षा के अवसरों की कमी को दूर करना है। चिकित्सा सेवाओं को उपलब्ध कराना और पोलियो जैसी बीमारियों से मुक्तिकरण भी शांति है। हम हर दिन और बेहतरीन तरीके से शांति स्थापित करने का कार्य करते हैं। किसी युवा छात्र को शांति केंद्र भेजना या युवा विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत किसी अन्य देश में भेजना भी शांति का कार्य है। इसी प्रकार रोगों की रोकथाम और उनका इलाज करना जहाँ स्वास्थ्य सेवाएं और स्वच्छता नहीं है वहाँ उन्हें उपलब्ध कराना भी शांति के लिए काम करना है। महिलाओं को एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करना ताकि वे अपने बच्चों की देखभाल कर सकें, शांति का कार्य है। जिस पर्यावरण में हम रहते हैं उसे बेहतर बनाना, लड़कियों को शिक्षित करना और आजीविका का समर्थन करना - ये सब भी शांति की दिशा में उठाए जाने वाले कदम हैं। रोटरी की सेवा दुनिया को हर दिन थोड़ा और स्वतंत्र बनाती है और शांति के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करती है,'' अरेज़ो ने आगे कहा।

गांधी जी ने कहा था कि अहिंसा ताकतवर लोगों का मार्ग है और संख्या में, करुणा में तथा प्रेम पर आधारित दुनिया में शक्ति होती है - न कि लालच में। ''मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप अच्छाई के लिए एकजुट हों ताकि हम अपने समुदायों और जिनकी हम सेवा करते हैं, उनके लिए प्रेम और मित्रता से भरी एक नई दुनिया बना सकें। हमें अपने मूल्यों के माध्यम से स्वयं को नया करना होगा क्योंकि केवल सेवा से शांतिपूर्ण दुनिया का निर्माण संभव नहीं है। हमें उदाहरण बनकर नेतृत्व करना होगा,'' उन्होंने कहा।

रो ई अध्यक्ष ने रोटेरियनों से विचार और आत्मचिंतन करने का विनम्र आग्रह करते हुए कहा कि आज रोटरी और रोटेरियन कई सवालों और चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ''ये सवाल केवल प्रशासनिक नहीं हैं बल्कि मानवीय हैं। चाहे बात दिल्ली की हो, मुंबई की हो या लंदन की - हर जगह डिजिटलीकरण और आधुनिकता की तेज़ प्रगति से जुड़ी चुनौतियाँ हैं। ऐसे समय में संस्थाएं कभी-कभी निष्प्राण सी लगने लगती हैं।''

लेकिन उन्हें इस बात की उम्मीद थी कि रोटरी इससे कहीं अधिक बन सकती है - एक ऐसा स्थान

जहाँ लोगों को उनकी उपलब्धियों से न आँका जाता हो या उनका शोषण न किया जाता हो बल्कि वहाँ उन्हें संवाद के लिए खुले दिल से स्वीकार किया जाए। ''परंतु इसके लिए हमें अपने कार्यों पर आत्मचिंतन करना होगा। अक्सर हम ऐसी परियोजनाएं करते हैं जो अध्यक्षों या गवर्नरों के कार्यकाल के साथ ही समाप्त हो जाती हैं; हमारा कैलेंडर ही यह तय करता है कि कार्यकाल के दौरान हमने क्या किया। हम सभी - क्लब अध्यक्ष, गवर्नर और यहाँ तक कि रो ई अध्यक्ष - अपने एक वर्ष के कार्यकाल में जितना संभव हो, करने की कोशिश करते हैं और फिर जिम्मेदारी आगे बढ़ा देते हैं। लेकिन वे कार्य जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं... जैसे कि शांति स्थापित करना, शिक्षा प्रदान करना या पर्यावरण की रक्षा करना - उनके लिए समय और निरंतरता की आवश्यकता होती है।''

रो ई अध्यक्ष ने क्लब के नेताओं को व्यक्तिगत रूप से नहीं बल्कि एक टीम के रूप में काम करने की सलाह दी। ''हमें सिर्फ तेज़ी से नहीं बल्कि सौम्यता और उद्देश्यपूर्ण ढंग से आगे बढ़ना चाहिए। और साथ ही अगले नेता को सफल होने में सहायता करने की तैयारी भी करनी चाहिए।''

दिशा और संतुलन की भावना होना भी बहुत महत्वपूर्ण है। लुईस कैरोल की प्रसिद्ध पुस्तक *ऐलिस इन वंडरलैंड* का उदाहरण देते हुए अरेज़ो ने कहा कि एक निश्चित स्थान पर पहुँचकर ऐलिस चेशायर कैट से पूछती है कि उसे किस दिशा में जाना चाहिए। इस पर वह बिल्ली जवाब देती है: 'यह इस पर निर्भर करता है कि आप कहाँ जाना चाहती हो।'

ऐलिस कहती है, 'ओह, मुझे ज़्यादा फर्क नहीं पड़ता कि मैं कहाँ जाऊँ।' इस पर बिल्ली जवाब देती है, 'तो फिर इससे भी ज़्यादा फर्क नहीं पड़ता कि आप किस दिशा में जाती हो।'

मैं आपसे किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में बात नहीं कर रहा हूँ जो भारत को गहराई से समझने का दावा करता है बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बात कर रहा हूँ जो इससे सीखता है। मैं आपकी अतिथि-सत्कार की भावना, नैतिक स्पष्टता और उदारता की सराहना करता हूँ।

यहाँ, अरेज़ो ने एक चेतावनी दी - ''अगर हमें यह ही नहीं पता कि हम कहाँ जाना चाहते हैं तो फिर कोई भी दिशा मायने नहीं रखेगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एक नेता के रूप में केवल अपने कार्यकाल के कैलेंडर तक सीमित न रहें बल्कि दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ नेतृत्व करें और जो लोग हमारे बाद आएँगे उनके लिए एक मजबूत नींव तैयार करें।''

भारतीय इतिहास, संस्कृति और दर्शन के स्पष्ट प्रशंसक रहे रो ई अध्यक्ष ने कहा, ''यहाँ एक जुनून की संस्कृति है... एक सभ्यतागत स्मृति जो निरंतरता के महत्व और मशाल को आगे बढ़ाने के मूल्य को समझती है। आपके रोटरी क्लब किसी लक्ष्य के पीछे अंधी दौड़ नहीं लगाते... वे एक दृष्टिकोण को बनाए रखते हैं। शायद यही कारण है कि यहाँ इतनी सहज सामंजस्यता है... निःस्वार्थ सेवा की वह भावना जो प्राचीन भारतीय दर्शन 'वसुधैव कुटुम्बकम' (एक संस्कृत वाक्य जिसका अर्थ है - 'सारा विश्व एक परिवार है') में झलकती है।''

अरेज़ो ने सहज भाव से कहा: ''मैं आपसे किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में बात नहीं कर रहा हूँ जो भारत को गहराई से समझने का दावा करता है बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बात कर रहा हूँ जो इससे सीखता है। मैं आपकी अतिथि-सत्कार की भावना, नैतिक स्पष्टता और उदारता की सराहना करता हूँ और आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ: हम नई पीढ़ी को कैसे जोड़ें... हम बिना भटके बदलाव कैसे लाएँ? यही वे प्रश्न हैं जो हमें पूरे रोटरी जगत से पूछने होंगे।''

टैगोर के शब्दों को उद्धृत करते हुए - ''मैं सोया और मैंने सपना देखा कि जीवन आनंद है। मैं जागा और देखा कि जीवन सेवा है। मैंने सेवा की... और देखा कि सेवा ही आनंद है,'' - अरेज़ो ने अपने भाषण का समापन करते हुए कहा: रोटरी में हम एक वादा करते हैं - कि हम एक साथ मिलकर विश्वसनीय और मानवीय बनेंगे। तो आइए, हम पूर्व की ओर देखें... न केवल पैगंबर बारुख के कारण, न केवल प्रतीकात्मक रूप से बल्कि पूरी तरह, हर्षपूर्वक और आध्यात्मिक रूप से। यदि हम अपने क्लबों को मजबूत बनाकर चार मार्ग परीक्षण को एक स्वाभाविक आदत की तरह अपनाकर लोगों को केवल सेवा के लिए ही नहीं बल्कि 'अपनापन' महसूस कराने के लिए रोटरी में आमंत्रित कर सकें - तो हम सदस्यों को जोड़ भी पाएंगे और बनाए भी रख पाएंगे। और तब हम एक प्रकाशस्तंभ बन सकते हैं - एक ऐसा स्थान जहाँ लोग एकत्र हों, जहाँ सब कुछ परिपूर्ण न हो पर विश्वास की नींव पर टिका हो। मेरे लिए यही इस वर्ष की थीम *यूनाइट फॉर गुड* (अच्छाई के लिए एकजुट हों) का सच्चा अर्थ है। ■

रोटरी क्लब अजमेर 80 की ओर अग्रसर

वी मुत्तुकुमारन

दशकों से यादगार परियोजनाओं की विरासत के साथ, जयपुर से 130 किलोमीटर दक्षिण में स्थित इस तीर्थ नगरी में 80 साल पुराना और सबसे लंबे समय से सेवा कर रहा क्लब, रोटरी क्लब अजमेर, रो ई मंडल 3053, अपनी उपलब्धियों पर यूँ ही आराम नहीं कर रहा है। क्लब के अध्यक्ष शलभ अग्रवाल कहते हैं, ''हमने अपनी 80 साल की सामाजिक सेवा पूरी होने के उपलक्ष्य में जुलाई में, इनाली फाउंडेशन और रोटरी क्लब पूना डाउनटर्न के साथ साझेदारी में, अपने रोटरी भवन में दो दिवसीय इलेक्ट्रॉनिक कृत्रिम हाथ फिटमेंट कैंप का आयोजन किया था।''

परियोजना अध्यक्ष राजीव तोषनीवाल के नेतृत्व में, अंग-आवरण शिविर से पहले काफ़ी योजनाएँ बनाई गईं और सोशल मीडिया पर अभियान चलाया गया। अग्रवाल कहते हैं, हमने सबसे पहले राज्य सरकार के समाज कल्याण विभाग से संपर्क किया, जिन्होंने हमें राजस्थान में हाथ-अंगों से विकलांग लोगों की पूरी सूची दी। 300 विकलांग लोगों के नाम प्राप्त होने के बाद, हमारी टीम ने उन सभी से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया और उनके खुले हुए स्टब्स के साथ उनकी तस्वीरें लीं। शिविर में 58 लाभार्थियों को 61 इलेक्ट्रॉनिक हाथ लगाए गए क्योंकि उनमें से तीन लाभार्थी दोनों हाथों से विकलांग थे। चूंकि प्रत्येक इनाली हाथ की लागत लगभग ₹30,000 होती है, इसलिए इस परियोजना को एनएचपीसी लिमिटेड से ₹25 लाख के सी एस आर अनुदान द्वारा वित्त पोषित किया गया था।

दूसरे, एक मैमोग्राफी वैन (सी एस आर अनुदान: ₹75 लाख) को हरी झंडी दिखाई जाएगी और यह अजमेर शहर के 100 किलोमीटर के दायरे में स्थित दूरदराज के गाँवों का दौरा करेगी और कम से कम 1,000 महिलाओं की स्तन कैंसर की जाँच करेगी। शहर के उपनगरों में अजमेर के डीएफओ द्वारा चिन्हित क्षेत्र में 5,000 पेड़ लगाकर एक 'ऑक्सीजन ज़ोन' बनाया जाएगा।

पुणे के रोटेरियन शेख हसन लाभार्थियों को प्रशिक्षण देते हुए, चित्र में (बाएँ से बैठे) रोटरी क्लब अजमेर के अध्यक्ष शलभ अग्रवाल, प्रोजेक्ट चेयर राजीव तोषनीवाल, सचिव मनोज डबराल और रो ई मंडल 3053 के डीजी निशा शेखावत भी शामिल हैं।

क्लब की सदस्य, डीजी निशा शेखावत कहती हैं, इससे पहले, क्लब ने ₹35 लाख का फ़र्नीचर दान किया है, सरकारी स्कूलों में आठ शौचालय ब्लॉक (₹15 लाख) का निर्माण कराया है; अजमेर के सरकारी जनाना अस्पताल को चिकित्सा उपकरण और डायग्नोस्टिक किट प्रदान किए हैं; और कोविड के दौरान एक वैश्विक अनुदान (₹27 लाख) भी दिया है जिसमें हमने अस्पताल को पीपीई किट, BiPAP मशीनें और छोटे इनक्यूबेटर दिए हैं। GG परियोजना को रोटरी क्लब बीकानेर और रोटरी क्लब डेनवर, अमेरिका के साथ मिलकर वैश्विक भागीदार के रूप में पूरा किया गया था।

चार्टर अध्यक्ष भागचंद सोनी, जिन्हें प्यार से 'नगर सेठ' (अजमेर के प्रथम नागरिक क्योंकि वे सबसे धनी व्यक्ति थे) के नाम से जाना जाता था, ने रोटरी क्लब अजमेर की स्थापना की पहल कीथी। क्लब को 18 जून, 1945 को चार्टर किया गया। एक अन्य प्रतिष्ठित सदस्य जे टी एम गिब्सन थे, जो अंग्रेजों द्वारा स्थापित 150 साल पुराने बोर्डिंग स्कूल, मेयो कॉलेज के प्रिंसिपल थे। ■

शिक्षा: सफलता की सीढ़ी

जयश्री

इंटरेक्ट और रोटरेक्ट में बिताए गए मेरे वर्षों ने मुझे यही सिखाया है कि सेवा केवल परियोजनाओं तक ही सीमित नहीं है। यह दिल खोलकर दान करने और उन लोगों के लिए खड़े होने की बात है जिन्हें इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है,'' लीड25 कॉन्क्लेव में मात्रम फ़ाउंडेशन के संस्थापक सुजीत कुमार ने कहा। उन्होंने आगे कहा कि ये प्रारंभिक अनुभव उनके जीवन की नींव बने जो विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए समर्पित है।

सेवा के साथ-साथ इंटरेक्ट और रोटरेक्ट में बिताए गए वर्षों ने सुजीत कुमार के जन-संवाद और मंच पर बोलने के कौशल को भी निखारा। इसका श्रेय उन्होंने तत्कालीन रो ई मंडल 3230 के पीडीजी सी एस रामचंद्रन को दिया। यही कौशल उन्हें कक्षाओं और सभागारों तक ले गया, जहाँ वे अक्सर कैरियर मार्गदर्शन पर निःशुल्क व्याख्यान देने लगे। ऐसा ही एक अवसर वर्ष 2013 में मदुरै में आया, जब उनकी मुलाक़ात मलार से हुई - वह लड़की जिसने उनका भाग्य बदल दिया। मलार सभागार के बाहर खड़ी थी और अंदर आने में झिझक रही थी। सुजीत स्वयं उससे मिलने बाहर आए और उसकी कहानी ने उन्हें भीतर तक झकझोर दिया। ''उस दिन मैंने खुद से कहा कि मैं अपनी कमाई से कम से कम एक बच्चे की पढ़ाई का खर्च तो उठा ही सकता हूँ। लेकिन तभी एक सवाल मेरे मन में उठा - उन सैकड़ों बच्चों का क्या जो उसकी तरह हैं?''

वही सवाल 'मात्रम फाउंडेशन' की प्रेरणा बना। सुजीत ने एक कॉलेज के अध्यक्ष से एक छात्र की शिक्षा में सहयोग देने का अनुरोध किया लेकिन उन्होंने इसके बदले हर वर्ष 20 निःशुल्क सीटें देने की पेशकश की। शुभचिंतकों की मदद से सुजीत ने उन सीटों को भरना शुरू किया - और जो एक छोटी-सी पहल के रूप में शुरू हुआ वो जल्द ही एक आंदोलन में बदल गया।

आज, मात्रम फाउंडेशन तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और बेंगलुरु की 52 संस्थाओं में 4,000 से अधिक छात्रों को समर्थन प्रदान कर रहा है। उन शुरुआती बच्चों में मलार थीं - जो अब सैन फ्रांसिस्को में अमेज़न में कार्यरत हैं, उन्होंने अपने परिवार के लिए घर बनाया और अपने भाई-बहनों की शिक्षा का जिम्मा उठाया। कुछ पूर्व छात्र अब फाउंडेशन की संचालन समिति में शामिल हैं; कुछ ने स्वयं के गैर सरकारी संगठन शुरू किए हैं। यही है 'लौटाने' का असली चक्र, उन्होंने बड़े गर्व से कहा।

फाउंडेशन अनाथ बच्चों, एकल माता-पिता के बच्चों, ट्रांसजेंडर विद्यार्थियों और दिव्यांग युवाओं को प्राथमिकता देता है। अपनी यात्रा के बारे में सुजीत कुमार कहते हैं - ''यह सफर संपत्ति से नहीं बल्कि संकल्प से आगे बढ़ा। लोग अक्सर कहते हैं - मैं पहले पढ़ूंगा, फिर कमाऊंगा और रिटायरमेंट के बाद जो बन पड़ेगा वापस लौटाऊंगा। लेकिन रोटरी ने मुझे कुछ और सिखाया कि आपको 60 की उम्र का इंतजार करने की ज़रूरत नहीं है। आप 25 की उम्र से ही लौटाना शुरू कर सकते हैं।''

उन्होंने अपनी इस सोच की जड़ें 9वीं कक्षा में इंटरेक्ट क्लब के अध्यक्ष के रूप में की गई अपनी पहली परियोजना से जोड़ीं। शुरुआत में उनका क्लब चाय और समोसे तक ही सीमित था। लेकिन यह सब तब बदला जब एक रोटेरियन ने उन्हें सामुदायिक सेवा का कोई कार्य करने के लिए प्रेरित किया। कांची शंकराचार्य की *पिडियारीसी तिट्टम* (मुट्ठी भर चावल आंदोलन) से प्रेरित होकर सुजीत और उनकी टीम ने घर-घर जाकर चावल माँगने की मुहिम शुरू की। लोगों ने दिल खोलकर साथ दिया और अंततः उन्होंने 232 बोरे चावल इकट्ठा कर लिए।

बाएँ से: आरआईडी क्रिस्टीन ब्यूरिंग, सुमती मुरुगानंदम, फिल्म कलाकार अभिरामी, उमा नागेश, मात्रम फाउंडेशन के संस्थापक सुजित कुमार और पीआरआईडी ए एस वेंकटेश।

सेवा, समावेशिता और रोटरी का भविष्य

पीआरआईडी ए एस वेंकटेश ने सुजीत कुमार, जर्मनी की पहली महिला रो ई निदेशक क्रिस्टीन ब्यूरिंग और फिल्म कलाकार अभिरामी के साथ एक प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लिया।

"अगर मैं अपने समुदाय की सेवा करना शुरू कर दूँ तो क्या मेरे खुद के संसाधन समाप्त नहीं हो जाएंगे? मैं सेवा और अपने भविष्य को सुरक्षित रखने के बीच संतुलन कैसे बनाऊं?" वेंकटेश ने पूछा। सुजीत ने उत्तर दिया: काम और सेवा दो अलग-अलग पहचानें हैं। अगर मैं इन्हें आपस में मिला दूं, तो दोनों में असफल हो जाऊंगा। उन्होंने फोर-बर्नर थ्योरी का उल्लेख किया जिसमें करियर, परिवार, स्वास्थ्य और सेवा - सभी एक ही गैस सिलेंडर से ऊर्जा लेते हैं। कभी-कभी आपका कप खाली होता है। आप हमेशा देने वाले नहीं बन सकते। ऐसे समय में आपको ङ्गनफ कहना आना चाहिए और उस पर ध्यान देना चाहिए जो वास्तव में महत्वपूर्ण है।

जब उनसे खुशी की परिभाषा पूछी गई तो उन्होंने कहा: अपने बच्चों को सफल होते देखना। यहाँ बच्चों से उनका आशय उन 4,000 छात्रों से था जिन्हें उनका फ़ाउंडेशन समर्थन करता है - जिनमें 99 प्रतिशत प्रथम पीढ़ी के स्नातक हैं, 80 प्रतिशत लड़कियाँ और लगभग एक हज़ार अनाथ है। उन्होंने दिल छू लेने वाली कुछ कहानियाँ साझा कीः एक लड़की का सपना सिर्फ इतना था कि उसके पास अपनी एक अलमारी हो। दूसरी ने खुशी से बताया कि अब वह खाने का ऑर्डर देते समय दाम नहीं देखती। आज इनमें से कई छात्र इन्फोसिस जैसी कंपनियों में काम कर रहे हैं जबकि उनके माता-पिता अभी भी घरेलू कार्य या सुरक्षा गार्ड की नौकरी करते हैं। अगर आप किसी की ज़िंदगी को एक चरण से दूसरे चरण तक पहुँचाने में मदद कर सकें तो वही असली खुशी है। सुजीत इन्फोसिस में एचआर के एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट हैं।

जब उनसे पूछा गया कि क्या उनके मॉडल को बड़े स्तर पर लागू किया जा सकता है, तो उन्होंने समझाया कि दानदाताओं पर निर्भर मॉडल कोविड जैसी आपदाओं में अक्सर विफल हो जाते हैं। इसके बजाय, वह ऐसे दीर्घकालिक सहयोग को प्राथमिकता देते हैं, जहाँ संस्थान पूरी तरह से प्रायोजित सीटें उपलब्ध कराते हैं। उन्होंने कहा: यह शून्य लागत वाला मॉडल है और आसानी से बड़े स्तर पर लागू किया जा सकता है।

शुरुआती सालों में बहुत कुछ सीखने को मिला। जब हॉस्टल बंद हो जाते है तो अनाथ बच्चे कहाँ जाए? लंबे समय तक, मेरे घर का तीसरा बेडरूम उन्हीं के लिए होता था। अब हम खुद हॉस्टल चलाते हैं। आज उनके फ़ाउंडेशन ने हर प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण कर लिया है, जिससे एक ऐसा प्लग-एंड-प्ले मॉडल तैयार हुआ जिसे अन्य गैर सरकारी संगठन भी अपना रहे हैं। उन्होंने बताया, हम देहरादून की कुछ संस्थाओं को भी परामर्श दे रहे हैं, जो इस मॉडल को दोहराना चाहती हैं।

बातचीत का रुख रोटरी में समावेशिता की ओर मुड़ा - विभिन्न पहचान वाले लोगों का स्वागत कैसे किया जाए। क्रिस्टीन ने कहा, व्यक्ति को देखिए न कि उसके लिंग को। लिंग एक व्यक्तिगत विषय है। जो मायने रखता है वह है व्यक्ति का मूल्य। उन्होंने क्लबों से आग्रह किया कि लोगों को समान रूप से देखें न कि दिखावा करें। कोई भी केवल दिखावे के लिए नहीं रहना चाहता बल्कि वह अपनापन चाहता है।

लिंग समानता पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि जर्मनी में रोटरी में महिलाओं की भागीदारी अभी भी केवल 14 प्रतिशत है। युद्ध के बाद पश्चिमी जर्मनी में यह अपेक्षा की गई कि महिलाएं घर संभालें जबकि पूर्वी जर्मनी ने ऐसी शिशु देखभाल प्रणाली स्थापित की जिससे महिलाएं करियर भी बना सकें। जब परिवार की देखभाल व्यवस्था बदलती है तभी समाज भी बदलता है। मेरे लिए, यही असली समानता है।

आगामी दस वर्षों में वह रोटरी को कहाँ देखती हैं? एक ऐसी दुनिया में जहाँ लोग संवाद करना भूल चुके हैं वहाँ रोटरी अब भी लोगों को एक साथ लाती है। हम एक नए समाज के उत्प्रेरक बन सकते हैं - एक ऐसा समाज जो विविधता, रचनात्मकता और सम्मान से भरा हुआ हो। रोटरी को विशेष बनाता है उसका मानवीय जुड़ाव। जब 10,000 लोग अब भी व्यक्तिगत रूप से मिलने का विकल्प चुनते हैं जबकि वे चाहें तो बस एक ज़ूम कॉल कर सकते हैं, तो यही हमारी ताकत है।

अभिरामी ने अपने करियर की योजना और उसके रास्ते में आने वाली चुनौतियों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य है, हर अनुभव से सीखते हुए खुद के प्रति सच्चे बने रहना और दूसरों को यह प्रेरणा देना कि सफलता केवल योजना से नहीं बल्कि धैर्य और विश्वास के साथ मिलती है।

जब उन्हें समझ नहीं आया कि जमा किया गया चावल कहाँ दान करें तो उन्होंने अपने रोटरी प्रायोजक की मदद ली जिन्होंने उन्हें एक कुष्ठ रोग आश्रम का सुझाव दिया। नौवीं कक्षा के एक बच्चे के लिए पट्टियों में लिपटे अंग और विकृत चेहरे देखना बहुत भारी था। मैं वहाँ से जल्दी लौट आया, उन्होंने कहा। कुछ हफ़्तों बाद एक कुष्ठ रोगी ने उन्हें ट्रैफिक सिग्नल पर पहचान लिया और उनके पिता से कहा, आपके बेटे और उसके दोस्तों की वजह से अब हम दिन में तीन बार खाना खा पाते हैं। सुजीत कहते हैं, उस आशीर्वाद ने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव छोड़ा। उसी पल मैंने सेवा की असली ताकत को समझा।

आज, मात्रम फाउंडेशन न केवल बालिकाओं की शिक्षा का समर्थन करता है बल्कि वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए भी सक्रिय रूप से कार्य करता है। सुजीत कुमार ने भारत की पहली ट्रांसजेंडर नर्सिंग छात्रा का उल्लेख किया जिसने नर्सिंग की पढ़ाई के अधिकार के लिए सात साल तक सुप्रीम कोर्ट तक कानूनी लड़ाई लड़ी। उसकी इस ऐतिहासिक जीत के बाद हर नर्सिंग कॉलेज को अब एक सीट ट्रांसजेंडर छात्र के लिए आरक्षित करनी पड़ती है। आज वह छात्रा अपना मास्टर्स कर रही है और सुजीत कहते हैं, वह इस बात का प्रतीक है कि शिक्षा में वह ताक़त है जो किसी की तक़दीर ही नहीं पूरी व्यवस्था को बदल सकती है।

उन्होंने श्रोताओं से आग्रह किया कि वे शिक्षा को सेवा के सबसे शक्तिशाली स्वरूपों में से एक के रूप में देखें। एक पेड़ लगाना ज़रूरी है - वह हमसे लंबा जिएगा। लेकिन जब आप एक बच्चे को शिक्षित करते हैं, तो आप एक पूरे परिवार में परिवर्तन ले आते हैं। शिक्षा का न कोई लिंग होता है न कोई सीमा। प्रतिभा का भी कोई लिंग नहीं होता। जब आप सबसे योग्य व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं तो चमत्कार होते हैं। ■

एंड पोलियो शो ने अरेज़ो को आश्चर्यचकित कर दिया

वी मुत्तुकुमारन

गिनीज़ बुक में दर्ज रो ई मंडल 3234 के 3,000 रोटरेकटर्स द्वारा *एंड पोलियो नाउ* लोगो निर्माण के अद्भुत नज़ारे ने रविवार की सुबह चेन्नई ट्रेड सेंटर में रो ई के अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने कहा, ''इतनी बड़ी संख्या में रोटरेकटर्स द्वारा ईपीएन निर्माण देखना बेहद प्रभावशाली है... केवल भारत में ही हम इतना जीवंत रोटरेक्ट देख सकते हैं।''

लीड कॉन्क्लेव के दौरान आयोजित ईपीएन प्रदर्शन ने अरेज़ो और उनकी पत्नी आना मारिया के चेहरे पर मुस्कान ला दी, जब उन्होंने रोटरी के पोलियो उन्मूलन अभियान के बारे में दुनिया भर में जागरूकता फैलाने के रिकॉर्ड बनाने वाले प्रयास में रोटरेकटर्स की लगभग 5,000 लोगों की भीड़ देखी। रो ई अध्यक्ष ने कहा कि पूरे इटली में 3,000 रोटरेकटर्स नहीं होंगे, जबकि भारत में एक रोटरेक्ट मंडल ने गिनीज रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया है। ''रोटरेक्टर्स परियोजनाओं को अंजाम देने के नए तरीके और विचार खोजते हैं, जो रोटेरियन के लिए असंभव लग सकते हैं।''

इस बात पर ज़ोर देते हुए कि रोटरी की एक समृद्ध विरासत, सिद्ध निष्ठा, नेतृत्व और भाईचारे के गुण हैं, जो रोटरेकटर्स को भी विरासत में मिलेंगे, उन्होंने युवा ब्रिगेड से आग्रह किया कि वे रोटरी को आगे का रास्ता दिखाएँ। उन्होंने कहा, मैं कामना करता हूँ कि सभी रोटरेकटर्स जल्द ही रोटरी क्लबों में शामिल हों।

युवा शक्ति

''युवा दुनिया बदल रहे हैं... सोशल मीडिया पर उनकी एक पोस्ट ही बड़ा बदलाव लाने के लिए काफी है। युवाओं की गति और शक्ति परिवर्तन ला रही है। मुझे रोटरी में काम करना इसलिए पसंद है क्योंकि मैंने अपनी यात्रा रोटेरेक्टर के रूप में शुरु की है,'' रो ई के निदेशक एम मुरुगानंदम ने कहा।

महात्मा गांधी के शब्दों का हवाला देते हुए, दुनिया में जो बदलाव आप देखना चाहते हैं, वो खुद बनें, उन्होंने कहा कि रोटरी व्हील को अगली सदी तक गतिशील बनाए रखने के लिए रोटरेकटर्स बेहद ज़रूरी हैं। ज़िम्मेदारी लेने से ही, ''एक व्यक्ति अपने परिवार में पिता और अपने समुदाय में नेता के रूप में सम्मानित होता है। रोटरेक्टर से, आपको रोटेरियन बनना होगा।'' युवाओं को अपने जीवन में बड़ी उपलब्धियाँ हासिल करने की शुभकामनाएँ देते हुए, उन्होंने राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का हवाला देते हुए कहा, ''आपके आगमन पर भले ही किसी का ध्यान न जाए, लेकिन आपके जाने को हमेशा याद रखा जाना चाहिए।''

रो ई निदेशक के पी नागेश ने कहा कि निदेशक मुरुगानंदम और उन्होंने मिलकर इस वर्ष भारत ज़ोन के लिए पोलियो फंड में 5 मिलियन डॉलर का लक्ष्य तय किया है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए सभी चार ज़ोनों में एक क्रिकेट टूर्नामेंट, रोटरी प्रीमियर लीग, धन संग्रहण के रूप में आयोजित किया जाएगा। उन्होंने मंडल रोटरेक्टर्स की प्रशंसा करते हुए कहा कि रो ई अध्यक्ष अरेज़ो के सामने शानदार प्रदर्शन कर भारतीय रोटरेक्ट क्लबों की ताक़त को प्रस्तुत किया। डीजी विनोद सरावगी ने कहा कि रो ई मंडल 3234 के लिए यह गर्व का

बाएँ से: रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, रो ई मंडल 3234 के डीजी विनोद सरावगी, रो ई निदेशक के पी नागेश और माल्टा रोटरी क्लब से अध्यक्ष अरेज़ो के सहयोगी जॉन डे जॉर्जियो।

आना मारिया अरेज़ो, उषा सरावगी, आरआईडी नागेश, डीजी सरावगी, डे जॉर्जियो, अध्यक्ष अरेज़ो, आरआईडी मुरुगानंदम, पीडीजी जे श्रीधर और डीआरआर सतीश कुमार **एंड पोलियो नाउ** *संरचना का उत्साह बढ़ाते हुए।*

क्षण था। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में ₹250 करोड़ के सेवा प्रोजेक्ट शुरू किए गए। इनमें से ₹40 करोड़ के प्रोजेक्ट रो ई मंडल 3234 द्वारा पूरे किए जाएंगे; इसमें प्रोजेक्ट पिंक ऑटो के तहत 100 महिलाओं को ऑटो रिक्शा भेंट करना भी शामिल है। इन महिलाओं को केवल ड्राइविंग कौशल में ही नहीं, बल्कि मार्शल आर्ट्स, संचार और व्यक्तित्व विकास में भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस परियोजना को सी एस आर अनुदान, क्लब योगदान और अन्य दानदाताओं के सहयोग से वित्तपोषित किया गया है।

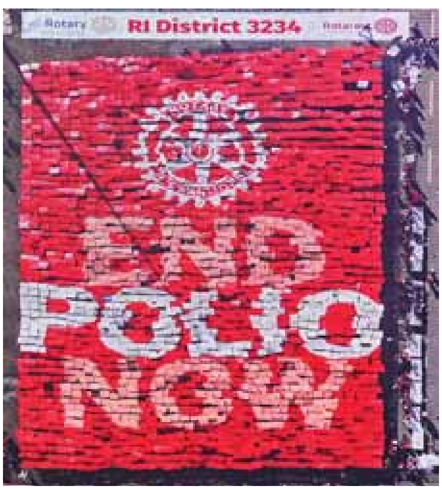

3000 रोटरेक्टरों द्वारा बनाई गई **एंड पोलियो नाउ** *मानव संरचना।*

1968 में उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय, चार्लोट (अमेरिका) में रोटरेक्ट क्लब के गठन के साथ रोटरेक्ट के जन्म को याद करते हुए, आईपीडीजी एन एस सरवनन, रो ई मंडल 3234, ने बताया, ''हम सभी अपने रोटरेक्टर्स की क्षमता और संभावनाओं को जानते हैं, वे रोटेरियन्स के लिए ऊर्जा वर्धक हैं। पिछले वर्ष (2024-25), मंडल के रोटरेक्ट क्लबों ने टीआरएफ को 30,500 डॉलर का योगदान दिया।''

पीआरआईडी सी भास्कर ने कहा, ''भारत की 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है, हमारा देश अपने युवाओं पर निर्भर है। हमारे रोटरेक्टर्स ने अपने 'एंड पोलियो' प्रदर्शन के माध्यम से एक बार फिर स्वामी विवेकानंद के उस विश्वास को दर्शाया है जो उन्होंने उन पर व्यक्त किया था, जब उन्होंने कहा था, 'मेरा विश्वास युवा पीढ़ी में है।' रोटरेक्ट की स्थापना रो ई द्वारा वैश्विक युवाओं के लिए सीखने, नेतृत्व करने और अपने समुदायों में बदलाव लाने के उद्देश्य से की गई थी।'' उन्होंने कहा, सबसे अधिक रोटरेकटर्स और रोटरेक्ट क्लबों वाला भारत रोटरी का भविष्य है।

डीआरआर सतीश कुमार ने कहा कि ''मंडल रोटरेकटर्स के लिए रो ई अध्यक्ष अरेज़ो के सामने प्रदर्शन करना जीवन में एक बार मिलने वाला अवसर था,'' और उन्होंने मानव संरचना के मंचन में उनके सहयोग के लिए डीजी सरावगी को धन्यवाद भी दिया।

ई पी एन लोगो निर्माण मंडल क्लबों के लिए एक ब्रांडिंग अभ्यास है और यह पोलियो उन्मूलन में रोटरी के वैश्विक प्रयासों के बारे में जागरूकता पैदा करेगा, ऐसा कहा श्रीनिवासन बालारामन, ई पी एन समन्वयक, रो ई निदेशक 3234 ने। ''पूरे आयोजन का एंकरिंग करना मेरे लिए एक शानदार अनुभव था,'' ब्रिट्टो मनोहर ने कहा, जिन्होंने रोटरेक्टर्स का मार्गदर्शन करके इस आयोजन का समन्वयन किया। रोटरेक्ट क्लब लोयोला कॉलेज के एक पूर्व सदस्य, उन्होंने इससे पहले रोटरेक्ट द्वारा दो गिनीज बुक प्रयासों का भी एंकरिंग कर चुके हैं - दुनिया की सबसे बड़ी मानव संरचना (7,000 सदस्य) और 'माय फ्लैग, माय इंडिया' प्रदर्शन (50,000 रोटरेकटर्स और जन स्वयंसेवक)।

अपने अनुभव साझा करते हुए, मीनम्बाक्कम स्थित ए एम जैन कॉलेज की संकाय समन्वयक डी मोनिका ने कहा, ''आज की युवा पीढ़ी कुछ हद तक स्व-केंद्रित है। लेकिन रोटरेक्ट द्वारा आयोजित एंड पोलियो डिस्प्ले जैसी घटनाएं उनमें मानवता, सेवा-दिमाग और नेतृत्व के गुणों को विकसित करती हैं।'' ■

चेन्नई में रोटरी मुख्यालय

वी मुत्तुकुमारन

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो और आना मारिया हाउस ऑफ फ्रेंडशिप की ए के एस गैलरी में।

दो दिवसीय लीड25 कॉन्क्लेव की एक उल्लेखनीय विशेषता यह थी कि हाउस ऑफ फ्रेंडशिप (एचओएफ) को इसके अग्रभाग पर वन रोटरी सेंटर के रूप में आकर्षक ढंग से डिजाइन किया गया था, जो इवान्स्टन, शिकागो में रोटरी मुख्यालय है।

एचओएफ का उद्घाटन करते हुए, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो ने रोटरी मुख्यालय के डिज़ाइन में किए गए प्रयासों की खूब प्रशंसा की, जिसमें हर बारीकी पर ध्यान दिया गया। रो ई के निदेशक एम मुरुगानंदम और के पी नागेश, तथा एचओएफ के अध्यक्ष एस मुत्तुपलनियप्पन के साथ रोटरी स्टॉल्स का दौरा करते हुए उन्होंने कहा, ''मैंने रो ई सम्मेलनों में कई एचओएफ देखे हैं... लेकिन यह उन सबसे बेहतरीन एचओएफ में से एक है।''

अध्यक्ष अरेज़ो और आना एक स्टॉल पर निदेशक एम मुरुगानंदम के साथ।

एचओएफ को दो मुख्य उद्देश्यों के साथ बनाया गया था – ''पहला, हमारे क्षेत्रों के रोटेरियनों को रोटरी मुख्यालय जैसा अनुभव कराना, और दूसरा, उन सदस्यों को यह प्रदर्शित करना कि रो ई सम्मेलनों में क्या होता है, जो विभिन्न कारणों से इस प्रमुख वैश्विक रोटरी शिखर सम्मेलन में भाग नहीं ले सके, पीडीजी मुत्तुपलनियप्पन ने बताया।''

वन रोटरी सेंटर की प्रतिकृति इसके अग्रभाग और रोटरी एक्शन एरिया से शुरू की गई, जहाँ प्राथमिकताओं और सामुदायिक पहलों को प्रदर्शित किया गया। उन्होंने बताया कि रूम 711 को उस पुराने युग की याद दिलाने के लिए पुनर्निर्मित किया गया था, जब रोटरी ने आकार लेना शुरू किया था। शिकागो शहर के यूनिटी बिल्डिंग के रूम 711 में, रोटरी के प्रसिद्ध चौकड़ी – इसके संस्थापक पॉल

हैरिस, गुस्तावस लोहर, सिल्वेस्टर शिएले और हीराम शोरी – ने 23 फ़रवरी, 1905 को मसबसे पहली रोटरी क्लब मीटिंगफ के लिए मुलाकात की थी। उस समय यह लोहर का कार्यालय भी था। 1980 में शिकागो में हुए सम्मेलन के दौरान, स्थानीय रोटेरियनों ने उसी कार्यालय की जगह किराए पर लेकर, साज-सज्जा का उपयोग करते हुए, 20वीं सदी के शुरुआती दौर के कार्यालय का पुनर्निर्माण किया।

1989 में यूनिटी बिल्डिंग को ध्वस्त कर दी गई थी, लेकिन रोटेरियन्स ने कमरा 711 को तोड़कर इवान्स्टन, इलिनोइस स्थित रो ई मुख्यालय में उसकी उसी तरह की व्यवस्था के साथ पुनर्निर्माण किया। वन रोटरी सेंटर आने वाले रोटेरियन्स कमरा 711 में प्रवेश कर सकते हैं और 1905 में आयोजित पहली रोटरी क्लब मीटिंग के माहौल का अनुभव कर सकते हैं।

रोटरी मुख्यालय में एचओएफ की एक विस्तृत ए के एस गैलरी ने उन वैश्विक दानदाताओं की एक झलक प्रस्तुत की, जिन्होंने दशकों से इस वैश्विक एनजीओ को सशक्त बनाया है। चारों क्षेत्रों के रो ई ज़ोन के 20 प्रोजेक्ट स्टॉल और 200 व्यावसायिक प्रदर्शनियों के साथ, एचओएफ एक लाख वर्ग फुट में फैला था और 10,500 आगंतुकों को आकर्षित किया। *प्रोजेक्ट ऑरेंज* स्टॉल ने 300 से ज़्यादा आगंतुकों की नेत्र विकारों की जाँच की और हमने लोगों की जाँच के लिए उपकरणों और गैजेट्स से युक्त एक ऑरेंज विजन सेंटर की प्रतिकृति प्रदर्शित की। *प्रोजेक्ट ऑरेंज,* मुत्तुपलनियप्पन की सोच का परिणाम है, जब वे 2020-21 में रो ई मंडल 3232 के डीजी थे। इसके 160 विजन सेंटर तमिलनाडु भर के 15 अस्पतालों द्वारा समर्थित हैं।

एचओएफ को चार क्षेत्रों में विभाजित किया गया था – रोटरी एक्शन एरिया, रोटरी प्रोजेक्ट ज़ोन, कमर्शियल एक्सपो और एंटरटेनमेंट ज़ोन, जहाँ लगातार नृत्य, संगीत, जादू और फ़ैशन शो आयोजित किए गए। एंड पोलियो गेमिंग क्षेत्र एक्शन से भरपूर था, जहाँ प्रतिनिधि और उनके परिवार बॉक्स क्रिकेट, फ़ूसबॉल और मिनी बॉलिंग जैसे खेलों का आनंद ले रहे थे। एक्सपो ने उन्हें अपनी मनचाही खरीदारी करने का एक बेहतरीन अवसर प्रदान किया। ■

महिला सशक्तिकरण को समर्पित एक प्रदर्शनी

टीम रोटरी न्यूज़

डीजी बी धनसेकर (बीच में), मंडल समन्वयक एस लोगनाथन (बाएँ से चौथे) और क्लब अध्यक्ष ए विवेकानंदन (दाएँ से दूसरे) प्रतिभागियों के साथ एक्सपो में।

रोटरी क्लब तिरुपुर पायनियर्स (रो ई मंडल 3203) ने तिरुपुर में दो दिवसीय महिला सशक्तिकरण मेले का आयोजन किया, जिसका नाम था – वॉव जॉय सर्विंग हैप्पीनेस।

इस कार्यक्रम में 100 से अधिक महिला उद्यमियों ने भाग लिया, जिनमें से अधिकांश पहली बार अपने उत्पाद प्रदर्शित कर रही थीं। इनके लिए विशेष रूप से तैयार किए गए स्टॉल्स के माध्यम से उन्होंने अपने उत्पादों की प्रदर्शनी की। प्रदर्शनी के साथ-साथ एक मोबाइल कार्डियक केयर क्लिनिक ने 50 आगंतुकों की हृदय और शुगर के लिए नि:शुल्क जांच की जबकि मविज़न ऑन व्हील्सफ नेत्र जांच शिविर में 500 लोगों की नेत्र जांच करके चश्मे वितरित किए गए।

छह महिला उद्यमियों को 'पायनियर मंगई अवॉर्ड्स' से सम्मानित किया गया जिनके अंतर्गत नकद पुरस्कार और ट्रॉफी प्रदान की गई।

इस मेले में महिला कलाकारों द्वारा पारंपरिक लोक नृत्यों की भी शानदार प्रस्तुतियाँ दी गईं। इस दो दिवसीय प्रदर्शनी में 5,000 से अधिक लोगों ने भाग लिया जिसका कुल परियोजना व्यय 15.41 लाख रहा। मुख्य अतिथियों में तिरुपुर के मेयर एन. दिनेश कुमार और डीजी बी. धनसेकर शामिल थे। ■

सम्मेलन के कुछ पल

ऊपर: रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो और उनकी पत्नी आना मारिया संपादक को रोटरी न्यूज़ की एक प्रति दिखाते हुए।

नीचे: अध्यक्ष अरेज़ो के सहायक जॉन डी जॉर्जियो रो ई निदेशक क्रिस्टीन ब्यूरिंग, उनकी पत्नी मोनिक चेम्बर्स और अध्यक्ष अरेज़ो के साथ सेल्फी लेते हुए।

बाएँः तमिलनाडु के उप मुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन, (दाएँ से) स्कूल शिक्षा मंत्री अन्बिल महेश पोय्यमोळी, लीड25 सह-संयोजक आरआईडी के पी नागेश और कार्यक्रम अध्यक्ष पीडीजी जॉन डेनियल की मौजूदगी में दीप प्रज्वलित करते हुए।

दाएँः अध्यक्ष अरेज़ो और आना लीड25 संयोजक रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम और सुमती के साथ। पीडीजी डेनियल भी चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

नीचेः अध्यक्ष अरेज़ो रो ई मंडल 3234 के पिंक ऑटो प्रोजेक्ट के उद्घाटन पर ऑटो रिक्शा से उतरते हुए।

बाएँः (बाएँ से) टीआरएफ ट्रस्टी भरत पांड्या, पीआरआईडी ए एस वेंकटेश, आरआईडी क्रिस्टीन और विनिता वेंकटेश।

पीआरआईडी सी भास्कर और उनकी पत्नी माला।

ऊपर: आरआईडी गण मुरुगानंदम और नागेश लीड कमेटी के सदस्यों के साथ।

दाएँ: अध्यक्ष अरेज़ो हाउस ऑफ फ्रेंडशिप में क्रिकेट खेलते हुए।

मित्रता: आरआईडी मुरुगानंदम, अध्यक्ष अरेज़ो, आना, आरआईडी नागेश, उनकी पत्नी उमा, सुमती और डी जॉर्जियो और मोनिक।

नीचे: उमा और आरआईडी नागेश।

दाएँ: आरआईडी मुरुगानंदम और सुमती। पीडीजी जे श्रीधर और विनिता वेंकटेश भी चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

बाएँ: ट्रस्टी पांड्या अध्यक्ष अरेज़ो और आना का अभिवादन करते हुए।

दाएँ: अध्यक्ष अरेज़ो रोटरी क्लब कोडाइकानाल के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार रामन और उनकी पत्नी मीरा को आदिवासियों के लिए घर बनाने के लिए सम्मानित करते हुए, आना भी चित्र में शामिल हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

(ISRO अध्यक्ष वी नारायणन और अभिनेता कमल हासन के सत्र नवंबर अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।)

मेरे प्रिय मित्र सांगकू युन की स्मृति में

के आर रवीन्द्रन

आज रोटरी शोकमग्न है। दुनिया ने न केवल एक असाधारण संभावनाओं वाले नेता को खोया है बल्कि सबसे बढ़कर एक ऐसे व्यक्ति को खोया है जो विरले ही मिलते हैं – जिनमें भलाई और गरिमा कूट-कूटकर भरी थी।

सांगकू मेरे अत्यंत प्रिय मित्र थे। जैसे-जैसे अंत निकट आ रहा था, मैं उनके परिवार के संपर्क में था। और सुबह जब मैंने वहाँ फ़ोन किया तो उनके बेटे ने यह हृदय विदारक ख़बर दी कि उनके पिताजी महज दस मिनट पहले ही इस दुनिया को अलविदा कह गए। उस क्षण का दर्द मैं जीवनभर नहीं भूल पाऊंगा।

उन्हें 2026-27 के लिए रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष के रूप में सेवा देने हेतु चुना गया था लेकिन नियति को कुछ और ही मंज़ूर था। अब वह कभी उस पद को औपचारिक रूप से धारण नहीं कर पाएंगे – लेकिन सच तो यह है कि सांगकू पहले ही हम सभी का नेतृत्व कर रहे थे – अपने आदर्शों से, अपने दूरदृष्टिकोण से, अपनी विनम्रता से और अपनी निःस्वार्थ सेवा से।

वह एक कुलीन परिवार में जन्मे थे – उनके पिता कोरिया के पहले राष्ट्रपति थे। उन्होंने उस विरासत को कभी भी घमंड के साथ नहीं बल्कि हमेशा अनुशासन के साथ निभाया। उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका से शिक्षा प्राप्त की, सिरैक्यूज़ विश्वविद्यालय से आर्किटेक्चर में मास्टर डिग्री और एडिनबर्ग विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्राप्त की। उन्होंने निर्माण सामग्री और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक अत्यंत सफल कंपनी स्थापित की। ब्रिटेन की महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय ने उन्हें ऑर्डर ऑफ एक्सीलेंट ऑफिसर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर से सम्मानित किया। उन्हें मंगोलिया के राष्ट्रपति द्वारा फ्रेंडशिप मेडल से नवाजा गया और कोरिया के राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री ने भी उन्हें विशिष्ट सेवा सम्मान प्रदान किया। उन्होंने सेना में अपने देश को सेवा दी और अंदोंग प्रेसबिटेरियन चर्च में वरिष्ठ एल्डर के रूप में अपने धर्म के लिए सेवा कार्य किया।

पीआरआईपी के आर रवीन्द्रन (दाएँ) सांगकू यून के साथ।

लेकिन इन सभी सम्मानों और उपलब्धियों के पीछे एक असाधारण रूप से सरल व्यक्ति था। वह किसी दूरदराज़ के गांव में जाकर चटाई पर बैठकर सादगी से भोजन कर लेते थे और उतनी ही सहजता से राजाओं और वैश्विक नेताओं के सामने टक्सीडो पहनकर एक भव्य मंच की शोभा भी बन सकते थे। उन्होंने पूर्व और पश्चिम की श्रेष्ठताओं को एक सुंदर संतुलन में पिरोया और वे जहाँ भी गए उन्होंने लोगों को सम्मानित महसूस कराया।

रोटरी के प्रति उनका समर्पण असीम था। उन्होंने परियोजनाओं का संचालन एवं उनका स्थायी होना सुनिश्चित करने के लिए 36 देशों की व्यक्तिगत यात्रा की। जब हमने श्रीलंका में स्तन कैंसर की अपनी सफल परियोजना को विस्तारित किया तो सांगकू ने अपना सहयोग दिया और स्वयं वहां पहुँचकर उसकी प्रगति को देखा। वह इतने समर्पित थे कि उत्तर श्रीलंका के एक दूरदराज़ क्षेत्र में जहाँ रोटरी के बाहर कोरियाई संस्थानों के साथ साझेदारी में एक परियोजना चल रही थी उसका संचालन देखने के लिए उन्होंने ट्रेन की छह घंटे की लंबी यात्रा की। उनका मानना था कि सेवा का अर्थ केवल धन देना या रिपोर्ट पढ़ना नहीं है बल्कि स्वयं उपस्थित रहकर उन लोगों के साथ चलना है जो सेवा कर रहे हैं और उनके साथ खड़ा होना है जो कष्ट में हैं।

उन्होंने रोटरी में एक अद्वितीय व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व क्षमता जोड़ी। जब वे कोरिया में आयोजित रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के होम ऑर्गेनाइजिंग कमेटी के अध्यक्ष बने तो उन्होंने उसे इतनी दक्षता से संचालित किया कि इस कार्यक्रम से 2.5 मिलियन डॉलर से अधिक का लाभ हुआ – एक

सांगकू, पीआरआईपी रवीन्द्रन, टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष होल्गर नेक, सुज़ैन नेक और वनाती रवीन्द्रन (बाएँ से तीसरी, पहली पंक्ति)।

ऐसी उपलब्धि जो शायद पहले कभी नहीं मिली और पता नहीं फिर कभी मिले या नहीं। ऐसे ही थे सांगकू युन – सिद्धांतों पर अडिग, सक्षम, दृढ़निश्चयी और उदार। वह कभी अपने लिए नहीं बल्कि हमेशा रोटरी और मानवता की भलाई के लिए काम करते थे। मैंने उन्हें कन्वेंशन के आयोजन में पूरी स्वतंत्रता दी – सिर्फ तीन 'छोटी' शर्तों के साथ: संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की-मून को लाना, कोरियन पॉप स्टार 'साई (Psy)' से परफ़ॉर्म करवाना और मंच पर पॉल हैरिस का होलोग्राम प्रस्तुत करना। उन्होंने हँसते हुए कहा – तीन छोटी बातें! और फिर अपना सिर पकड़ लिया लेकिन अंततः उन्होंने यह सब कर दिखाया।

मुझे लगा था कि उनकी यह अडिग और अपराजेय आत्मा जो जीवनभर हर चुनौती से लड़ती रही उससे यह कैंसर भी हार जाएगा जो अंदर ही अंदर उन्हें खाए जा रहा था। लेकिन नहीं, ऐसा हो न सका।

उनकी प्रिय पत्नी यूनसुन के प्रति मैं अपनी गहरी संवेदनाएं प्रकट करता हूँ जिन्होंने उनके संघर्षों और सफलताओं में अटूट समर्पण के साथ उनका साथ दिया। उनके बच्चों और परिवार के प्रति, जिन्होंने उन्हें दुनिया के साथ साझा किया आपको यह जानकर सांत्वना मिले कि उन्होंने एक उद्देश्यपूर्ण जीवन जिया और एक ऐसी विरासत छोड़ी जो बहुत कम लोग छोड़ पाते हैं। और उनके मार्गदर्शक एवं गुरु, पूर्व रोटरी इंटरनेशनल अध्यक्ष डी के ली के प्रति, मैं आपके दुख में सहभागी हूँ, एक ऐसे शिष्य के निधन पर जो आपके लिए पुत्र के समान थे।

अलविदा, प्रिय राजकुमार। हजारों फरिश्ते आपको आपकी शाश्वत नींद में सुलाएं। और हम जो पीछे रह गए हैं आपको केवल शब्दों से नहीं बल्कि सेवा, विनम्रता और करुणा के उस मार्ग पर चलकर सम्मान दें – जो आपने हमें दिखाया है।

सांगकू और पीआरआईपी रवीन्द्रन अपनी पोतियों के साथ।

लेखक रो ई के पूर्व अध्यक्ष हैं

सांगकू युन की याद में

शेखर मेहता

सांगकू यून कोलकाता में पीआरआईपी शेखर मेहता के साथ पानी पुरी का आनंद लेते हुए।

राशि और मुझे, बाकियों की तरह, इस बात का डर था, लेकिन हमने कभी नहीं सोचा था कि यह इतनी जल्दी हो जाएगा। संगकू के निधन से न केवल रोटरी जगत में, बल्कि उन्हें जानने वाले हज़ारों लोगों के जीवन में भी गहरा खालीपन आ गया है। हम भी इससे अछूते नहीं रहे। वह वास्तव में अद्भुत इंसान थे।

जब मैं बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स में था, तब वह अक्सर पीछे बैठते थे और वहीं से हमारी दोस्ती की शुरुआत हुई। धीरे-धीरे हमारा रिश्ता और गहरा होता चला गया और मैंने उन्हें अपने क्लब के स्थापना समारोह में आमंत्रित किया। वह आए और सबका दिल जीत लिया। कोलकाता में उनके साथ बिताया समय बेहद खास था। अगले तीन दिन जो हमने साथ बिताए, जिनमें खूबसूरत रिसॉर्ट राजबाड़ी बावली में बिताया गया दिन भी शामिल है, वाकई यादगार रहे। हमने उन्हें कोलकाता शहर दिखाया और उन्हें वहाँ का स्ट्रीट फूड, खासकर डोसा बहुत पसंद आया। इससे उन्हें अपने पसंदीदा कोरियाई व्यंजन की याद आ गई और उसके बाद जब भी हम मिले, उन्हें वह ज़रूर याद आया। और मुझे हैरानी हुई जब उन्होंने भी मुझे सियोल, कोरिया में डोसा खाने के लिए ले गए!

बाएँ से: सांगकू और उनकी पत्नी यून्सुन, पीआरआईपी मेहता और राशी के साथ।

हम दोनों के पास प्रेसिडेंशियल कॉन्फ्रेंस की उस यात्रा की बहुत सुंदर यादें हैं। संगकू उस कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष थे, और कोविड महामारी के बावजूद, उन्होंने अगले पाँच दिनों में पूरे कोरिया में कई कार्यक्रम आयोजित किए। उन्होंने हमें अलग-अलग परियोजनाओं और दर्शनीय स्थलों का दौरा कराया और अपने प्यारे घर में ले गए जहाँ यून सन ने हमारी बहुत ही शानदार मेज़बानी की। हम देख सकते थे कि कोरिया में रोटेरियन और अन्य लोग उनका कितना सम्मान करते थे, चाहे वह पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून के साथ रात्रिभोज हो या भारतीय राजदूत द्वारा दोपहर का भोजन। रोटरी कोरिया में वे निश्चित रूप से अग्रणी दावेदार थे; इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उन्हें रो ई अध्यक्ष चुना गया – और इस पद पर पहुँचने वाले वे कोरिया से केवल दूसरे व्यक्ति थे।

मुझे अपने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संचालक के रूप में उनका स्वागत करने का सौभाग्य मिला। हम उस स्थान पर आयोजित होने वाले पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की टोह लेने के लिए ऑरलैंडो के शिंगल क्रीक गए थे। इतनी सारी तैयारी बैठकों के बावजूद, अंततः अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को वर्चुअल रूप से आयोजित करना पड़ा। उस समय भी मुझे एहसास हुआ कि सांगकू अपनी योजना बनाने में कितने सजग थे।

हमने उनके साथ हज़ारों यादें बनाईं हैं। और हम सब उनके अध्यक्ष बनने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। लेकिन दुर्भाग्य से, नियति को कुछ और ही मंज़ूर था।

उनका व्यक्तित्व रोटरी की सच्ची भावना का उदाहरण था और करुणा के साथ सेवा की उनकी विरासत हमें सदैव प्रेरित करती रहेगी...

प्रिय संगकू, आपको याद किया जा रहा है और आपकी बहुत कमी महसूस हो रही है शांति से विश्राम करें।

लेखक रो ई के पूर्व अध्यक्ष हैं

Rotary PEOPLE OF ACTION

कोलकाता में एक महिला शौचालय परिसर

वी मुत्तुकुमारन

डीजी रमेंदु होमचौधरी (दाएँ), परियोजना अध्यक्ष राकेश भाटिया, (दाएँ से दूसरे) रोटरी क्लब बेलूर के सदस्यों के साथ शौचालय और शिशु देखभाल केंद्र के सामने।

कोलकाता के बीचों-बीच स्थित मिर्ज़ा ग़ालिब स्ट्रीट पर राहगीरों को साइनेज पर लिखे बड़े-बड़े बंगाली शब्द पढ़कर खुशी हो सकती है: 'बंगाल में अपनी तरह का एक महिला शौचालय और शिशु देखभाल केंद्र।' रोटरी क्लब बेलूर, रो ई मंडल 3291 और कोलकाता नगर निगम की साझेदारी में एक विशेष महिला शौचालय परिसर और शिशु देखभाल केंद्र का उद्घाटन किया गया।

परियोजना अध्यक्ष राकेश भाटिया ने बताया कि तीन साल के अनुबंध के तहत, क्लब नगर निकाय द्वारा निर्मित 700 वर्ग फुट के शौचालय परिसर सह स्तनपान केंद्र का रखरखाव करेगा। इस अवधि के बाद भी स्तनपान कराने वाली माताओं और उनके शिशुओं के लिए एक सुरक्षित क्षेत्र प्रदान करने के हमारे प्रयास को जारी रखने के लिए इसे नवीनीकृत किया जाएगा।

कोलकाता की महिलाओं के लिए 'यह अपनी तरह की पहली स्वच्छता सुविधा है' बताते हुए, परियोजना अध्यक्ष ने कहा, ''शौचालय परिसर में किसी भी पुरुष को प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। इसमें बच्चों के पालने और स्तनपान के लिए स्टूल के साथ दो कक्ष बनाए गए हैं, और यह महिलाओं के लिए पूरी तरह सुरक्षित क्षेत्र है।'' यह सुविधा रविवार को छोड़कर, सभी दिनों में सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक खुली रहेगी। इसमें दो भारतीय शौचालय, एक पश्चिमी शैली का शौचालय, एक स्नानघर और एक चेंजिंग रूम शामिल है। ''कुल मिलाकर हमारे पास सात कमरे हैं, जिन्हें माताओं और उनके शिशुओं के आराम के लिए अच्छी तरह से विभाजित किया गया है।''

जल्द ही यहाँ एक सैनिटरी वेंडिंग मशीन लगाई जाएगी। फ़िलहाल, क्लब में दो महिला केयरटेकर कार्यरत हैं। ''कम से कम 100-120 महिलाएँ इस सुविधा का प्रतिदिन उपयोग करेंगी।''

हमने शौचालयों में नल का पानी उपलब्ध कराया है। मासिक देखभाल के लिए क्लब ₹30,000 खर्च करता है, जो सदस्यों द्वारा दिया जाता है।

उद्घाटन के दौरान, डीजी रामेंदु होमचौधरी ने कहा कि निगम के एक शौचालय को महिलाओं के लिए एक आधुनिक, गरिमापूर्ण स्वच्छता केंद्र में बदलकर, ''रोटरी क्लब बेलूर ने सार्वजनिक सेवा में एक नया मानदंड स्थापित किया है - बंगाल का पहला आधुनिक महिला शौचालय। यह परियोजना महिलाओं के लिए स्वच्छता, आराम और सम्मान सुनिश्चित करती है, और इसने कोलकाता के हृदय में रोटरी के लिए एक मज़बूत सार्वजनिक छवि अर्जित की है,'' उन्होंने कहा।

क्लब के अध्यक्ष शरद दुगर ने कहा, हम मातृ स्वास्थ्य और शिशु देखभाल के लिए स्वच्छता परियोजना को दीर्घकालिक रूप से एक स्थायी पहल के रूप में बनाए रखेंगे। उद्घाटन के दौरान कुछ लाभार्थियों को वेलनेस सेंटर के माहौल का अनुभव करने का मौका दिया गया। आगे चलकर, क्लब वयस्क साक्षरता परियोजना के तहत माताओं के लिए पुनर्चक्रित अभ्यास पुस्तकें, डायरी के पन्ने और कम इस्तेमाल होने वाली स्टेशनरी वितरित करने की योजना बना रहा है। ■

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए। आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए।**WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।**

पुणे के गाँवों में सौर ऊर्जा की नई रोशनी

रशीदा भगत

***बाएँ से:** प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ मीना बोराटे, ग्राम स्वयंसेवक विकास जाधव, कॉर्पोरेट साझेदार इमर्सन इलेक्ट्रिक कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी अभय बंसोड़, अश्विनी बंसोड़ और प्रोजेक्ट कोषाध्यक्ष अदिति रहाणे उस गाँव के घर की छत पर जहाँ सोलर पैनल लगाए गए।*

रोटरी क्लब पुणे हिलसाइड और रोटरी क्लब पुणे युवा ने शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और जल संरक्षण जैसी कई सामुदायिक सेवा परियोजनाएं सफलतापूर्वक पूरी करने के बाद अब ग्रामीण स्कूलों और घरों को सौर ऊर्जा उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। सीएसआर निधि की मदद से इस परियोजना के अंतर्गत पुणे से लगभग 60 किमी के दायरे में स्थित 42 से अधिक ग्रामीण और अर्ध-शहरी स्कूलों तथा 300 से अधिक गरीब और वंचित परिवारों के घरों में सोलर पैनल लगाए गए हैं।

₹1.61 करोड़ से अधिक की लागत वाली इस परियोजना के लिए सीएसआर निधि इमर्सन इलेक्ट्रिक कंपनी इंडिया द्वारा प्रदान की गई। ''पिछले वर्ष हमारे क्लबों ने पुणे से लगभग 42 किलोमीटर दूर स्थित हाटवे बुद्रुक गांव में एक सौर ऊर्जा परियोजना पूरी की थी और उसकी सफलता ने बड़े पैमाने पर अन्य परिवारों को भी इसी तरह की परियोजना की मांग करने के लिए प्रेरित किया। इसलिए हमने उसी कॉर्पोरेट से संपर्क किया जिसने पहले भी अन्य परियोजनाओं में हमारी सहायता की थी ताकि इस बार हमें और अधिक राशि मिल सके क्योंकि हम एक अधिक महत्वाकांक्षी परियोजना की योजना बना रहे थे,'' पुणे हिलसाइड की पूर्व अध्यक्ष, परियोजना निदेशक और इन परियोजनाओं की प्रेरक शक्ति डॉ मीना बोराटे कहती है।

उन्होंने इस बड़ी वित्तीय सहायता का श्रेय इमर्सन कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी, अभय बंसोड़ को

> **पिछले साल हमारे क्लबों ने पुणे से लगभग 42 किमी दूर हतवे बुड़रुक गांव में एक सौर ऊर्जा परियोजना पूरी की, और उसकी सफलता ने अन्य घरों को बड़े पैमाने पर इसी तरह की परियोजना की मांग करने के लिए प्रेरित किया।**
>
> **मीना बोराटे**
> परियोजना निदेशक

दिया, ''जिनके शब्द उस संगठन में वास्तव में बहुत मायने रखते है। साल दर साल वह रोटरी की सेवा परियोजनाओं के लिए बड़ी धनराशि लाते रहे हैं लेकिन हमेशा पर्दे के पीछे रहना पसंद करते हैं।''

मीना, जिनके जल संरक्षण के प्रति गहरे जुनून की वजह से उन्हें 'पुणे की जलपरी' की उपाधि मिली है, पर्यावरण को लेकर भी उतनी ही उत्साही और संवेदनशील हैं। उन्हें यह तथ्य बहुत चिंतित करता है कि भारत की ऊर्जा आवश्यकता का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा कोयला जलाकर पूरा किया जाता हैं, जो पर्यावरण के लिए एक बहुत बड़ी आपदा है।

अतिरिक्त निधि की उपलब्धता ने इस रूफटॉप सोलर परियोजना को एक बड़ी प्रेरणा दी, ''जिसे हम न केवल अपने देश बल्कि पूरे विश्व के पर्यावरण के लिए अपनी ओर से एक उपहार मानते हैं। डॉ मीना कहती हैं, इस परियोजना का अधिक ठोस और प्रत्यक्ष लाभ उन परिवारों को मिला है, जिनमें लगभग सबकुछ कृषि पर आधारित हैं। पहले उनका मासिक बिजली बिल करीब ₹700 से 800 आता था जो अब घटकर 0 हो गया है।'' बेशक अब भी घरों को मीटर के लिए ₹120 प्रति माह का शुल्क देना होगा।

इन ग्रामीण घरों में बिजली की खपत के तरीकों के बारे में वह कहती हैं कि इन गांवों के अधिकांश घरों में एक रसोई और एक कमरा होता है इसलिए वहाँ कम से कम दो बल्ब, एक पंखा, एक छोटा टीवी सेट, रसोई के लिए एक इलेक्ट्रिक मिक्सी और कुछ अधिक संपन्न घरों में एक छोटा फ्रिज भी होता है। अधिकांश घरों की मासिक बिजली खपत 1 किलोवाट होती है और रोटेरियनों द्वारा इनकी छतों पर लगाए गए सोलर एनर्जी सिस्टम उनकी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त हैं।

जब बात ज़िला परिषद स्कूलों की आती है, जिनकी छतों पर रोटेरियनों ने सोलर पैनल लगाए हैं, तो मीना कहती हैं कि उनके सीएसआर साझेदार ने सोलर ऊर्जा समाधान के लिए धनराशि देने पर यह शर्त रखी कि लाभार्थियों के रूप में चाकण-तलेगांव क्षेत्र के ज़िला परिषद स्कूलों को चुना जाए, जहाँ उस कंपनी की सुविधाएं स्थित हैं।

यह कहना जितना आसान था करना उतना ही मुश्किल। रोटेरियनों को इन स्कूलों की छतों पर सोलर पैनल लगाने में बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। समस्या यह थी कि ''जैसा अधिकतर सरकारी स्कूलों में होता है कि अधिकांश स्कूल जर्जर हालत में हैं और एक-दो साल तक अपने बिजली बिलों का भुगतान नहीं करते अक्सर इसलिए क्योंकि सरकारी अनुदान देर से मिलता है। हमें यह समस्या सुलझानी पड़ी और हमने स्कूलों से कहा कि वे किसी तरह पैसे का इंतजाम करें और अपने बकाया बिल का भुगतान करें।''

पैनल लगाने से पहले ही रोटेरियनों और विक्रेताओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस परियोजना के लिए केवल उन्हीं स्कूलों और घरों को चुना गया जिनके पास MSEDCL (महाराष्ट्र स्टेट इलेक्ट्रिसिटी डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड) का कनेक्शन और व्यक्तिगत मीटर थे। इन स्कूलों और घरों की औसत बिजली खपत सोलर सिस्टम द्वारा उत्पन्न की जाने वाली बिजली से कम हैं। हर इंस्टॉलेशन से उत्पन्न सौर ऊर्जा को सीधे MSEDCL ग्रिड में भेजा जाएगा, जिससे इन स्कूलों और घरों को कोई बिजली बिल नहीं देना होगा। इन सोलर प्लांट्स की औसतन उम्र लगभग 25 वर्ष की होती है और अगर रखरखाव से जुड़ी कोई समस्या आती है तो रोटेरियन मदद के लिए उपलब्ध रहेंगे।

इसके अलावा, MSEDCL को सोलर नेट मीटर के आवेदन स्वीकार करने के लिए उपभोक्ता के स्वीकृत लोड - कम से कम 1 किलोवाट - की आवश्यकता होती है। कई छोटे स्कूलों के स्वीकृत लोड केवल 0.2, 0.3 या 0.6 किलोवाट थे। इसलिए उन्हें पहले MSEDCL पोर्टल पर जाकर अपना लोड बढ़ाने के लिए आवेदन करना पड़ा। एक बार आवेदन करने के बाद, यह बदलाव दिखने में 2-3 बिलिंग साइकिल का समय लगता है। लेकिन इस कठिन प्रक्रिया में हमारे रोटरी मित्रों की समन्वय क्षमता बहुत काम आई, - इस परियोजना की एक और अहम सदस्य अदिति राहाणे कहती है।

स्कूलों की बिजली आवश्यकता के अनुसार इस परियोजना के लिए सोलर सिस्टम पर खर्च होने वाली राशि तय करने के बारे में मीना कहती हैं कि ज़िला परिषद स्कूलों का आकार बड़े से छोटे तक बहुत भिन्न होता है। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ बड़े स्कूलों को 14-15 किलोवाट तक बिजली की आवश्यकता थी, जबकि छोटे स्कूलों को केवल 1-3 किलोवाट की। यहाँ रोटेरियनों को समझदारी से

निर्णय लेते हुए संतुलन बनाना पड़ा – इसलिए उन्होंने अधिकतर छोटे स्कूलों को प्राथमिकता दी ताकि उनके पास जो सीमित धनराशि थी, वह ज़्यादा से ज़्यादा स्कूलों तक पहुँच सके।

छतों पर स्टैंड के साथ सोलर पैनल लगाने के अलावा, जनरेशन मीटर/नेट मीटर और बिजली गिरने से सुरक्षा के लिए एंटी-लाइटनिंग रॉड भी लगाए गए और अर्थिंग की व्यवस्था भी की गई।

रोटेरियन इस बात से खुश थे कि उन्होंने यह परियोजना तीन महीने में पूरी कर ली। अब अगले वर्ष के लिए इस परियोजना के नेतृत्वकर्ता 250 और घरों में सोलर बिजली व्यवस्था शुरू करना चाहते हैं क्योंकि इस क्षेत्र की और भी ग्रामीण बस्तियाँ उनसे सौर ऊर्जा उपलब्ध कराने का अनुरोध कर रही हैं।

उन्होंने इस अतिरिक्त वित्तीय ज़िम्मेदारी को पूरा करने की योजना भी बनाई। घरों के लिए सोलर सिस्टम की लागत लगभग ₹70,000 प्रति सिस्टम है जिसके लिए केंद्र सरकार की पीएम सूर्यघर योजना के अंतर्गत ₹30,000 की सब्सिडी मिलती है। लेकिन यह राशि केवल सोलर सिस्टम लग जाने के बाद रिफंड के रूप में मिलती है। हमने परिवारों से स्पष्ट रूप से कहा कि यह सब्सिडी की राशि आपकी नहीं हमारी है क्योंकि पूरा खर्च हम उठा रहे हैं। और आपको यह पैसा हमें 'दान' के रूप में लौटाना होगा ताकि और लोगों को भी इसका लाभ मिल सके। जो परिवार यह राशि पहले से दे सकते थे उन्होंने एडवांस में भुगतान कर दिया। और जो नहीं दे सकते थे उन्हें भरोसे पर उधार दिया गया। हमें एहसास हुआ कि जो लोग सब्सिडी की रकम पहले नहीं दे सकते थे, वही वास्तव में ज़रूरतमंद हैं और उन्हें हमारी मदद की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। इसलिए हमने उनसे कहा – हम तुम पर पूरा भरोसा करके यह सोलर सिस्टम लगा रहे हैं लेकिन जब तुम्हें सब्सिडी मिले तो हमारे साथ बेईमानी न करें।

मैं यह जानने के लिए उत्सुक थी कि जिन्हें उधार पर सोलर सिस्टम मिले थे, क्या उन्होंने सब्सिडी मिलने के बाद पैसे लौटा दिए। ''ओह हाँ, बिल्कुल! आप यह जानकर हैरान होंगे कि ये लोग कितने ईमानदार हैं; सभी ने पूरी राशि चुका दी है। इन गांवों के लोग आपस में बहुत जुड़े हुए और छोटे समुदायों में रहते हैं। ऐसे में अगर कोई भुगतान नहीं करता तो पूरे गांव में उसकी चर्चा हो जाती और कोई भी व्यक्ति यह नहीं चाहता कि उसे एहसान फरामोश या बेईमान समझा जाए।''

जब सब्सिडी की राशि इन सेवा परियोजनाओं को लागू करने वाले रोटरी ट्रस्ट के पास वापस आएगी तो उससे अतिरिक्त 250 घरों में भी सोलर सिस्टम लगाए जा सकेंगे। मीना गर्व से बताती हैं कि यही एक मुख्य कारण है कि कॉर्पोरेट्स रोटरी के साथ काम करना पसंद करते हैं। न केवल इसलिए कि

ऊपर: मीना, पुणे के पास हटवे बुद्रुक गाँव में रोटेरियनों और ग्रामीणों के साथ।

नीचे: बंसोड़ और मीना, रोटरी क्लब राजगुरुनगर के अध्यक्ष राजन जांभळे और उसके सदस्यों के साथ महात्मा गांधी स्कूल में सोलर पैनल स्थापना के समय।

रोटरी एक प्रतिष्ठित वैश्विक संस्था है बल्कि इसके सदस्य विभिन्न पेशों से आते हैं और उनके पास विविध प्रकार की विशेषज्ञता होती है, जिसे वे बिना किसी शुल्क के सेवा कार्यों में लगाने के लिए तैयार रहते हैं। अगर समुदाय की जीवन-शैली की बेहतरी के लिए किसी परियोजना में पैसों की कमी हो जाए तो कई बार सदस्य अपना निजी धन भी लगाते हैं।

अदिति राहाणे बताती हैं कि इस परियोजना में कोई प्रशासनिक शुल्क नहीं लिया जाता और रोटेरियन

लाभान्वित स्कूल बिजली बिलों में बचाए गए पैसे का उपयोग बेहतर शैक्षणिक ढांचा उपलब्ध कराने में कर सकेंगे और घर-परिवार इस बचत को अपने बच्चों के बेहतर पोषण और शिक्षा पर खर्च कर सकेंगे।

स्वयं अपनी विशेषज्ञता और समय का स्वेच्छा से योगदान देते हैं। विक्रेताओं से समन्वय करके बेहतर कीमत पर सामान उपलब्ध कराते हैं, लगाए गए सोलर सिस्टम के उचित उपयोग की निगरानी करते हैं, सोलर सिस्टम द्वारा उत्पन्न बिजली की जानकारी एकत्रित कर रिपोर्ट बनाते हैं और रखरखाव या छोटे-मोटे मरम्मत कार्यों में भी मदद करते हैं। सीएसआर निधि प्राप्ति के लिए समय पर सही अकाउंट्स और सभी आवश्यक जानकारी जमा करना अनिवार्य होता है। हालांकि ये कार्य कभी-कभी कठिन हो जाते हैं क्योंकि इसमें उन्हें सरकारी तंत्र और ग्रामीणों के साथ काम करना पड़ता है - फिर भी ये सब बहुत ही सावधानी और जिम्मेदारी के साथ किया जाता है। वरना कॉर्पोरेट्स के साथ साझेदारी टिक नहीं सकती, वह आगे कहती हैं।

लाभार्थी स्कूलों की पहचान करने और अन्य समन्वय आधारित कार्यों में इस परियोजना को स्थानीय रोटरी क्लबों - जैसे रोटरी क्लब चाकण, रोटरी क्लब राजगुरुनगर और रोटरी क्लब तलेगांव दाभाड़े - के रोटेरियनों से सहयोग मिला। इन रोटेरियनों ने स्वयं जाकर उन सभी स्कूलों का दौरा किया जो या तो सरकारी थे या फिर किसी प्रतिष्ठित ट्रस्ट द्वारा संचालित किए जाते है। उन्होंने प्रत्येक स्कूल की कक्षाओं की संख्या, छात्रों की संख्या, कक्षाओं के स्तर आदि की विस्तृत रिपोर्ट तैयार की। कुछ ऐसे स्कूल भी इस योजना में शामिल किए गए जो शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग छात्रों को सेवाएं दे रहे हैं या फिर नर्सिंग जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रदान कर रहे हैं।

मीना प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहती हैं कि शुरुआत में केवल 50 घरों के लिए शुरू की गई यह परियोजना अब काफी बड़ी हो चुकी है और लगातार विस्तारित हो रही है - इसका श्रेय सामाजिक और मीडिया द्वारा इसपर दिए गए ध्यान को भी जाता है। चुने गए कई घरों में अभी भी काम जारी है। हमें उम्मीद है कि जिन स्कूलों को इसका लाभ मिला है, वे बिजली बिल भुगतान से बचने वाली राशि का उपयोग अपने शैक्षणिक ढांचे को बेहतर बनाने में करेंगे और घरेलू परिवार उस बचत का इस्तेमाल अपने बच्चों को बेहतर पोषण और शिक्षा प्रदान करने के लिए कर सकेंगे।

वह आगे कहती हैं कि यह परियोजना राज्य की बिजली ग्रिड की विश्वसनीयता, सुरक्षा और लचीलेपन को बढ़ाने में मदद करेगी, ऊर्जा उत्पादन से होने वाले कार्बन उत्सर्जन और वायु प्रदूषण को कम करेगी और ग्रामीण स्कूलों तक स्वच्छ ऊर्जा की पहुंच को बढ़ाएगी। सीएसआर साझेदार भी इस बात से बहुत संतुष्ट हैं कि जो धन उन्होंने दिया वो पूरी तरह वास्तविक परियोजना पर खर्च हुआ और किसी भी प्रकार के प्रशासनिक खर्च या परियोजना स्थल पर जाने का यात्रा व्यय इस अनुदान से नहीं लिया गया।

अश्विनी बांसोड़ और अभय बांसोड़ इस परियोजना के दो अन्य मजबूत स्तंभ हैं। यह परियोजना अभी क्रियान्वयन चरण में है और वित्तीय वर्ष 2025-26 तक जारी रहेगी। इस अवधि के अंत में नियमानुसार अनिवार्य रूप से एक ऑडिट की गई उपयोग रिपोर्ट कॉर्पोरेट साझेदार को प्रस्तुत की जाएगी।

रोटेरियन अब जिस अगली बड़ी परियोजना पर काम करने की योजना बना रहे हैं वो है - ''सुनियोजित कचरा निपटान; अगर आप पुणे शहर से सिर्फ एक मील बाहर निकलकर छोटे कस्बों व गांवों की ओर जाएंगे तो देखेंगे कि वहाँ कचरा निपटान की कोई व्यवस्था नहीं है। हम आने वाले दिनों में इस क्षेत्र में भी बदलाव लाने की उम्मीद रखते हैं,'' मीना आगे कहती है। ■

आशावादी

डायना शॉबर्ग

अपनी संस्था को बंद करने की शुरुआत करते हुए, बिल गेट्स ने अपनी अब तक की सबसे बड़ी योजनाएँ बनाईं

मई में, बिल गेट्स ने अपने लिए एक साहसिक नई चुनौती और एक कठिन समयसीमा तय की: अगले 20 वर्षों में अपनी लगभग पूरी संपत्ति दान कर देना और अपने लंबे समय से चल रहे परोपकारी संगठन को बंद कर देना। वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल में रोटरी के सहयोगियों में से एक, गेट्स फाउंडेशन, अपने पहले 25 वर्षों में ही 100 बिलियन डॉलर से अधिक का दान कर चुका है। लेकिन फाउंडेशन को पूरी तरह से बंद करने से पहले उसे अपनी क्षमता और बढ़ानी होगी - ताकि 31 दिसंबर 2045 को अपने दरवाजे बंद करने से पहले वह इस राशि से दोगुने से भी अधिक खर्च कर सके।

पोलियो अभी भी एक प्राथमिकता बनी हुई है। कैलगरी, अल्बर्टा में आयोजित 2025 के रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में, रोटरी और गेट्स फ़ाउंडेशन ने पोलियो उन्मूलन के लिए अगले तीन वर्षों में 450 मिलियन डॉलर तक की राशि प्रदान करने की संयुक्त प्रतिबद्धता की घोषणा की, जो उनकी दीर्घकालिक साझेदारी का नवीनीकरण है। रोटरी प्रति वर्ष 50 मिलियन डॉलर जुटाना जारी रखेगी, जिसमें प्रत्येक डॉलर के साथ गेट्स फ़ाउंडेशन अतिरिक्त दो डॉलर का योगदान देगा।

उनके इस फैसले, फाउंडेशन की विरासत को लेकर उनके नज़रिए और भविष्य की संभावनाओं के बारे में और जानने के लिए, *Rotary* पत्रिका ने गेट्स से, जो इस महीने 70 साल के हो रहे हैं, कुछ सवाल पूछे। ये उनके द्वारा भेजे गए सभी जवाब हैं।

गेट्स फाउंडेशन अपनी 25वीं वर्षगांठ मना रहा है, ऐसे में आपको किस बात पर सबसे अधिक गर्व है?

पिछले 25 वर्षों में हमने उससे कहीं अधिक प्रगति देखी है और उसमें योगदान दिया है, जितना हमने कभी सोचा भी नहीं था।

मुझे उन साझेदारियों पर गर्व है जिन्होंने जीवन बचाने में योगदान दिया है - न केवल वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल, बल्कि एड्स, क्षय रोग और मलेरिया से लड़ने के लिए वैश्विक कोष तथा वैक्सीन गठबंधन, गावी पर भी। इन कार्यक्रमों की बदौलत, जीवनरक्षक स्वास्थ्य सेवा नवाचारों - जैसे टीके, उपचार, मच्छरदानी और निदान - की लागत में उल्लेखनीय कमी आई है।

इसका प्रभाव अद्भुत है: अब तक, इन सहयोगों के माध्यम से 1.1 अरब बच्चों को जीवनरक्षक टीके लगाए जा चुके हैं, वैश्विक बाल मृत्यु दर को आधा करने में मदद की है, और 80 मिलियन से ज़्यादा लोगों की जान बचाई है। साथ ही, करोड़ों लोग गरीबी से बाहर निकलकर बेहतर जीवन जीने लगे हैं।

अगले 20 सालों में जब आप अपनी फ़ाउंडेशन को बंद कर रहे हैं, तो आपको क्या लगता है कि आपका पैसा सबसे ज़्यादा असर कहाँ डालेगा? आपको किन मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है?

अब तक की प्रगति के बावजूद, हमारा फाउंडेशन अपने इतिहास की सबसे कठिन चुनौतियों का सामना कर रहा है। कई देश वैश्विक विकास निधियों

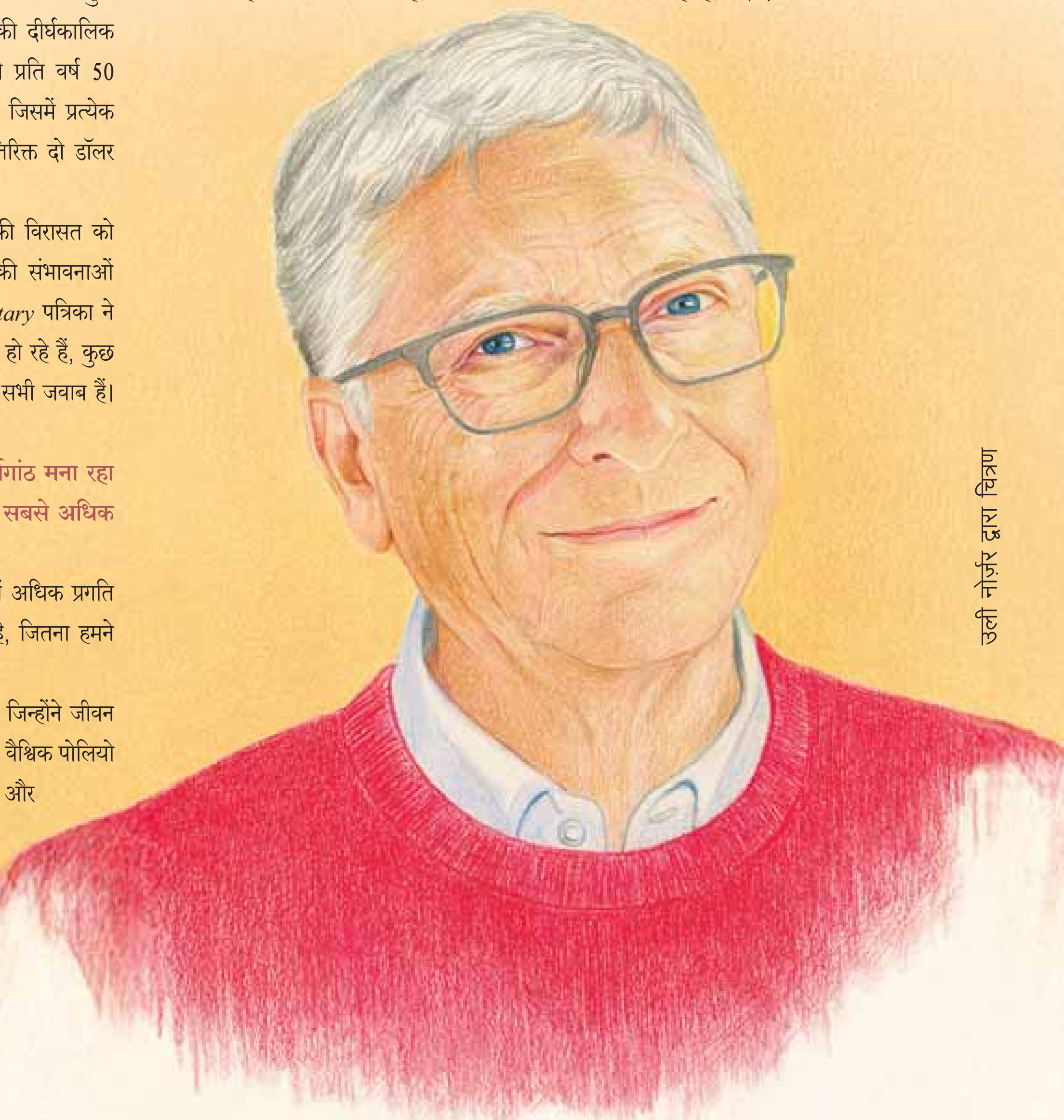

उली नोर्ज़र द्वारा चित्रण

में अरबों डॉलर की कटौती कर रहे हैं, और इसके परिणाम घातक सिद्ध होंगे। वास्तव में, नई सहस्राब्दी में यह पहला अवसर होगा जब दुनिया भर में मरने वाले बच्चों की संख्या घटने के बजाय बढ़ेगी - एक अकल्पनीय त्रासदी।

हमें ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो प्रगति के लिए प्रतिबद्ध हों - रोटेरियन की तरह - जो इन घातक कटौतियों के खिलाफ खड़े होकर हमें फिर से प्रगति के पथ पर वापस लाने में मदद करें।

हम अपनी ओर से अगले 20 वर्षों में तात्कालिक समस्याओं का समाधान करने और ज़्यादा लोगों की ज़िंदगी बचाने व बेहतर बनाने के लिए अपने प्रयासों को और तेज़ करेंगे। हमारा पूरा ध्यान उन क्षेत्रों पर होगा जहाँ हम सबसे गहरा प्रभाव डाल सकते हैं: 1) बाल मृत्यु दर में कमी, 2) संक्रामक रोगों का नियंत्रण और उन्मूलन, तथा 3) लाखों और लोगों को गरीबी से बाहर निकालकर समृद्धि की राह पर लाना।

हम मानवीय प्रतिभा पर दांव लगा रहे हैं-वैज्ञानिकों, स्वास्थ्यकर्मियों, शिक्षकों और किसानों पर, जिनके अथक परिश्रम ने मानव इतिहास में कुछ सबसे अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हासिल की हैं। उन्होंने हार नहीं मानी है, और न ही हम हार मानेंगे।

आप स्थायित्व कैसे सुनिश्चित करते हैं?

गेट्स फ़ाउंडेशन में हमारा लक्ष्य हमेशा समस्याओं का समाधान करना रहा है, न कि उन्हें केवल प्रबंधित करना। इसका अर्थ है कि हम समुदायों को उनकी सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करने में मदद करना। अगले 20 वर्षों तक यही हमारी प्राथमिकता रहेगी, और हमें उम्मीद है कि यह अगली पीढ़ी के उत्प्रेरक परोपकारी लोगों के लिए भी प्राथमिकता होगी जो अपने समय की चुनौतियों का सामना करेंगे।

नए नवाचार इन समुदायों को अपने स्वास्थ्य और समृद्धि में निवेश करने के लिए पहले से कहीं बेहतर साधन प्रदान करते रहेंगे। इसलिए, हमारे सामने आने वाली चुनौतियों के बावजूद, मैं आशावादी हूँ। पिछले 25 वर्ष इतिहास में मानव प्रगति के सबसे महान कालखंडों में से एक रहे हैं, और मेरा मानना है कि हम अगले 20 वर्षों को और भी अधिक परिवर्तनकारी बना सकते हैं।

2024 में जंगली पोलियोवायरस मामलों की संख्या में वृद्धि होगी। आपको क्या आशा है कि पोलियो उन्मूलन अभी भी संभव है?

मुझे पहले की तरह पूरा विश्वास है कि वैश्विक पोलियो कार्यक्रम पोलियो को हमेशा के लिए समाप्त कर देगा।

कुछ चुनौतियों के बावजूद, जो बात मुझे आशावादी बनाए रखती है, वह है नवाचार, अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ता और वैश्विक प्रतिबद्धता जो इस प्रयास को आगे बढ़ा रही है। अगली पीढ़ी का पोलियो टीका, nOPV2, प्रकोप को रोकने में मदद कर रहा है और कम टीकाकरण वाले समुदायों में बच्चों को लकवाग्रस्त होने से बचा रहा है। जुलाई 2025 तक 1.6 अरब से ज़्यादा खुराकें दी जा चुकी हैं - यह इस विनाशकारी बीमारी से सुरक्षित बच्चों की एक अविश्वसनीय संख्या है। और अब हमारे पास इस नए टीके की पर्याप्त आपूर्ति है ताकि जहाँ भी यह टीका पहुँचाया जाए, बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

जिन देशों में जंगली पोलियो अभी भी स्थानिक है, जैसे अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान, वहां कार्यक्रम बाधाओं से निपटने, सीमा पार समन्वय को बेहतर बनाने और सभी बच्चों तक टीके पहुंचाने के लिए सामुदायिक विश्वास को मजबूत करने के लिए स्थानीय अधिकारियों के साथ मिलकर काम किया जा रहा है।

हाल के मामलों में वृद्धि के बावजूद, हमें व्यापक प्रगति को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए, जो वाकई उल्लेखनीय है: वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल ने दुनिया के लगभग हर देश में जंगली पोलियोवायरस को उन्मूलन कर दिया है, जिससे पोलियो के मामलों की संख्या में 99 प्रतिशत से ज़्यादा की कमी आई है। दुनिया भर के रोटेरियन सहित निरंतर प्रतिबद्धता और सहयोग से, मुझे विश्वास है कि हम यह काम पूरा कर पाएँगे।

वर्तमान राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता को देखते हुए पोलियो कार्यक्रम किस दिशा में आगे बढ़ रहा है? क्या पोलियो उन्मूलन के लिए आपके फाउंडेशन के काम करने के तरीके में कोई बदलाव आया है?

पोलियो कार्यक्रम का इतिहास इस बात का साक्षी है कि उसने विश्व की सबसे जटिल परिस्थितियों में भी पोलियो को रोकने के लिए लगातार अनुकूलन किया है-सरकारों और समुदायों के साथ मिलकर नियमित टीकाकरण की प्रगति की रक्षा की है और उन्मूलन पर ध्यान केंद्रित रखा है।

उदाहरण के लिए, पाकिस्तान को ही लीजिए। कभी-कभी सुरक्षा बल संघर्ष क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते हैं ताकि टीका लगाने वाले सुरक्षित रूप से अपना काम कर सकें। लेकिन खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के उन इलाकों में, जहाँ संघर्ष बढ़ रहा है, सुरक्षा बलों की मौजूदगी परिवारों को टीका लगवाने के लिए पर्याप्त सुरक्षित महसूस करने से रोक रही थी। इसलिए स्थानीय प्रभावशाली लोगों ने सुरक्षा बलों की मदद के बिना ही टीका लगाने वालों को सुरक्षित रखने के लिए कदम उठाया। यह तरीका प्रभावी साबित हो रहा है और बताया गया है कि अब तक लगभग 80 प्रतिशत बच्चों तक पहुँच बनाई जा चुकी है। आगे यह ज़रूरी होगा कि कार्यक्रम इन क्षेत्रों की स्वतंत्र रूप से निगरानी करे ताकि हम परिणामों को लेकर आश्वस्त हो सकें।

आज, स्वास्थ्य संबंधी प्रतिस्पर्धी प्राथमिकताओं और बढ़ते राजनीतिक एवं वित्तीय दबावों के बीच, हम जानते हैं कि आगे कठिन चुनौतियाँ हैं। कुछ प्रमुख दानदाता वैश्विक स्वास्थ्य के लिए अपना समर्थन कम कर रहे हैं, लेकिन नए दानदाता भी योगदान के लिए आगे आ रहे हैं, जो इस समय बहुत महत्वपूर्ण है। और हम अपनी क्षमता के अनुसार अनुकूलन जारी रख रहे हैं, जो कारगर है उस पर पूरी तरह केंद्रित रहते हुए और वित्तीय तथा मानव संसाधनों का उपयोग वहाँ कर रहे हैं जहाँ उनका पोलियो को हमेशा के लिए समाप्त करने में सबसे अधिक प्रभाव पड़ेगा।

रोटरी और उसके साझेदारों की मदद करें ताकि हर बच्चे तक पोलियो का टीका पहुँच सके। गेट्स फाउंडेशन के धन्यवाद से, आपका योगदान तीन गुना हो जाएगा। अपना दान करें: *my.rotary.org/polioplus-fund.*

पोलियो उन्मूलन पर काम करते हुए आपने सबसे बड़ी सीख क्या सीखी?

प्रगति निरंतर सहयोग पर निर्भर करती है। सफलता तभी संभव है जब पोलियो कार्यकर्ता, सरकारी अधिकारी, साझेदार और दानदाता - रोटरी सहित - सभी मिलकर बच्चों तक जीवन रक्षक टीके पहुँचाने के लिए काम करें, चाहे वे दुनिया के सबसे दुर्गम इलाकों में ही क्यों न हों।

हाल ही में हमने मेडागास्कर में वैरिएंट पोलियोवायरस के प्रकोप के दौरान ऐसे सहयोग की शक्ति देखी। सरकार ने प्रसार को रोकने के लिए मज़बूत राजनीतिक नेतृत्व के साथ काम किया; सामुदायिक सहयोगियों ने टीकाकरण अभियानों को मज़बूत करने के लिए तेज़ी से काम किया; और यूनिसेफ और विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों ने इन प्रयासों को समर्थन देने के लिए तुरंत सहयोग किया। सभी ने मिलकर देश के कुछ सबसे दूरस्थ और अलग-थलग इलाकों में बच्चों तक टीके पहुँचाकर उन्हें सुरक्षित रखा और वे प्रकोप को रोकने में सफल रहे।

पोलियो को हमेशा के लिए खत्म करने के लिए, जहाँ और जब भी यह बीमारी उभरे, ऐसे सहयोग की और अधिक आवश्यकता होगी। वैश्विक अधिवक्ताओं और नागरिक नेताओं के रूप में रोटरी सदस्यों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि पोलियो उन्मूलन सर्वोच्च वैश्विक प्राथमिकता बना रहे।

गेट्स फाउंडेशन

गेट्स फ़ाउंडेशन ने पिछले दो दशकों से पोलियो टीकों के तकनीकी नवाचारों को वित्तपोषित किया है, जिसमें nOPV2 का विकास और वितरण भी शामिल है। वर्तमान में अनुसंधान और विकास की पाइपलाइन में क्या चल रहा है, और उसमें आपको सबसे अधिक किस बात से उत्साह मिलता है?

नवाचार में निरंतर निवेश हमेशा की तरह महत्वपूर्ण है। जैसा कि मैंने बताया, nOPV2 पहले से ही प्रकोपों को कम करने में मदद कर रहा है, और हम आने वाली पीढ़ियों को विभिन्न पोलियोवायरस से सुरक्षित रखने के लिए अधिक आनुवंशिक रूप से स्थिर टीकों में निवेश जारी रख रहे हैं। ये प्रगतियाँ हमें संक्रमण को और तेज़ी से रोकने और अधिक सटीकता के साथ अधिक बच्चों की सुरक्षा करने में मदद कर रही है।

हम हेक्सावेलेंट वैक्सीन को लेकर भी उत्साहित हैं, जो एक ही खुराक में बच्चों को छह बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करती है: डिप्थीरिया, काली खांसी, टिटनेस, हीमोफिलस इन्फ्लुएंजा टाइप बी, हेपेटाइटिस बी, और पोलियो। यह टीकाकरण कार्यक्रम को सरल बनाता है और बच्चों के लिए प्रारंभिक सुरक्षा को मज़बूत करता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ स्वास्थ्य सेवा संसाधन सीमित हैं। दरअसल, जुलाई में, सेनेगल और मॉरिटानिया, वैक्सीन एलायंस, गावी के सहयोग से इस वैक्सीन को शुरू करने वाले पहले देश बने।

ये नवीन टीके अग्रिम पंक्ति के स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ताओं को प्रत्येक बच्चे तक पहुंचने तथा पोलियो के सभी रूपों के संचरण को हमेशा के लिए रोकने के लिए बेहतर साधन प्रदान कर रहे हैं।

आपने गेट्स फ़ाउंडेशन को रोटरी के साथ साझेदारी करने के लिए क्यों चुना? रोटरी क्या योगदान देती है?

रोटरी पहला संगठन था जिसने पोलियो मुक्त विश्व की कल्पना की थी, और चार दशकों से अधिक समय से इस वैश्विक प्रयास को आगे बढ़ाने में उसके सदस्यों का नेतृत्व आवश्यक रहा है।

रोटरी पहला संगठन था जिसने पोलियो मुक्त विश्व की कल्पना की थी, और चार दशकों से अधिक समय से इस वैश्विक प्रयास को आगे बढ़ाने में उसके सदस्यों का नेतृत्व आवश्यक रहा है।

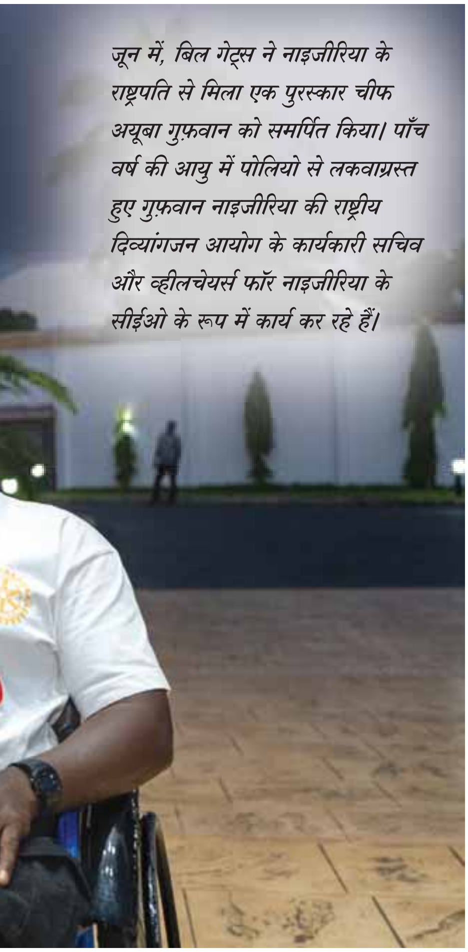

जून में, बिल गेट्स ने नाइजीरिया के राष्ट्रपति से मिला एक पुरस्कार चीफ अयूबा गुफ़वान को समर्पित किया। पाँच वर्ष की आयु में पोलियो से लकवाग्रस्त हुए गुफ़वान नाइजीरिया की राष्ट्रीय दिव्यांगजन आयोग के कार्यकारी सचिव और व्हीलचेयर्स फॉर नाइजीरिया के सीईओ के रूप में कार्य कर रहे हैं।

जीपीईआई के संस्थापक भागीदार के रूप में, रोटरी ने 1985 से अब तक सैकड़ों देशों में लगभग 3 अरब बच्चों का टीकाकरण करने में मदद की है। रोटरी सदस्यों ने अनगिनत स्वयंसेवा घंटे और महत्वपूर्ण धनराशि का योगदान दिया है, और उनकी वकालत ने उन्मूलन प्रयासों के समर्थन के लिए सरकारों से अरबों डॉलर की अतिरिक्त धनराशि प्राप्त करने में मदद की है। उनका वैश्विक नेटवर्क उन्हें भारत से लेकर फिलीपींस और यूक्रेन तक, सबसे कठिन परिस्थितियों में भी टीके वितरित करने और समुदायों को जोड़ने में सक्षम बनाता है।

रोटरी के नेतृत्व के कारण, हम अपने साझा लक्ष्य के और भी करीब पहुंच गए हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि परिवारों को इस बीमारी से फिर कभी डरना न पड़े।

आप गेट्स फाउंडेशन की रोटरी के साथ 2-से-1 फंडिंग मैच को क्यों बढ़ा रहे हैं?

हम मिलकर अगले तीन वर्षों में 450 मिलियन डॉलर तक की नई धनराशि जुटाने की उम्मीद करते हैं। यह धनराशि टीकाकरण वितरण, प्रकोपों से निपटने, सामुदायिक सहभागिता, और प्रभावित क्षेत्रों में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रमों के क्रियान्वयन व रखरखाव में उपयोग की जाएगी।

यह विस्तार एक महत्वपूर्ण समय पर हुआ है। पिछले एक साल में, हमने अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान जैसे अंतिम स्थानिक देशों में पोलियो के मामलों की संख्या में तेज़ी से वृद्धि देखी है। साथ ही, पहले से पोलियो-मुक्त क्षेत्रों में नए मामले सामने आना इस बात की सख़्त चेतावनी है कि कहीं भी पोलियो होना, हर जगह के लोगों के लिए ख़तरा है। हालाँकि कुल मिलाकर संक्रमण कम बना हुआ है, लेकिन हमारी कड़ी मेहनत से हासिल की गई प्रगति ख़तरे में है। वैश्विक सहायता में कमी, टीकों के बारे में गलत जानकारी, और बढ़ते संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता, ये सभी पोलियो के निरंतर प्रसार में योगदान दे रहे हैं।

रोटरी के साथ हमारी साझेदारी जारी रखने से हम इन चुनौतियों का समाधान कर सकेंगे और दुनिया भर के बच्चों तक जीवनरक्षक टीके पहुंचा सकेंगे।

पोलियो उन्मूलन का काम पूरा करना बेहद ज़रूरी है। यह सुनिश्चित करने का एकमात्र तरीका है कि जारी चुनौतियाँ आज के बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के लिए कोई ख़तरा न बनें।

2009 में, आपके पिता, बिल गेट्स सीनियर ने सिएटल रोटेरियन्स को मलेरिया उन्मूलन पर काम करने का सुझाव दिया था। वर्षों से, उनका काम रोटरी हेल्दी कम्युनिटीज़ चैलेंज के रूप में विकसित हुआ है, जिसे गेट्स फ़ाउंडेशन 13 मिलियन डॉलर के दान, तकनीकी सहायता और मार्गदर्शन के माध्यम से समर्थन देता है। यह परियोजना मलेरिया उन्मूलन और बाल मृत्यु दर को रोकने की आपकी समग्र रणनीति में कैसे फिट बैठती है?

रोटेरियनों के साथ हमारी दीर्घकालिक साझेदारी हाल के दशकों में मलेरिया के विरुद्ध हमने जो प्रगति देखी है, उसके लिए महत्वपूर्ण रही है - और आज यह साझेदारी पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि एजेंडा में बदलाव और वित्तपोषण की अनिश्चितता के कारण यह प्रगति खतरे में पड़ गई है।

पिछले 25 वर्षों में, नवाचार, उदार सहायता और राजनीतिक प्रतिबद्धता की बदौलत मलेरिया के 2.2 बिलियन मामले और 12.7 मिलियन मौतें टाली जा चुकी हैं। पहली बार, मलेरिया उन्मूलन हमारे ध्यान में है, और इस लक्ष्य को साकार करने के लिए अगली पीढ़ी के उपकरणों की व्यवस्था पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूत है।

रोटरी का काम सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का नेटवर्क बनाने के लिए ज़रूरी है जो इन उपकरणों को ज़रूरतमंद लोगों तक पहुँचाएँगे। स्वस्थ समुदाय चुनौती के माध्यम से, रोटरी कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, मोज़ाम्बिक, नाइजीरिया और ज़ाम्बिया में हज़ारों सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने में मदद कर रहा है जो अपने समुदायों में मलेरिया, निमोनिया और दस्त का इलाज कर रहे हैं। ये सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता अपने समुदायों को उस तरह से जानते हैं जैसा कोई और नहीं जान सकता। यही लोग हमें सबसे कठिन क्षेत्रों में मलेरिया को हराने में अंतिम लक्ष्य तक पहुँचाएँगे-और इस प्रक्रिया में, वे स्वस्थ और अधिक लचीले समुदायों की नींव रखेंगे जो कई स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

एआई विकास को कैसे प्रभावित करेगा? हमें बताइए कि 20 साल बाद स्वास्थ्य सेवा, कृषि, शिक्षा आदि कैसी दिखेंगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में दुनिया की कुछ सबसे कठिन चुनौतियों को हल करने की क्षमता है। यह भविष्य को आकार देने में अहम भूमिका निभा रही है, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, किसानों और शिक्षकों सहित अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करते हुए, ताकि वे लोगों तक अधिक कुशल और प्रभावी ढंग से पहुँच सकें।

वैश्विक स्वास्थ्य के क्षेत्र में, एआई-संचालित उपकरण स्वास्थ्य समस्याओं के निदान और बेहतर, अधिक प्रभावी देखभाल प्रदान करने में अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं की सहायता करके, अत्यधिक बोझ से दबी स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों पर दबाव को उल्लेखनीय रूप से कम कर सकते हैं। कल्पना कीजिए कि एक ग्रामीण क्लिनिक में एक नर्स एआई उपकरण

सितंबर 2000 की यह तस्वीर गेट्स को भारत में एक बच्चे को पोलियो का टीका लगाते हुए दिखाती है, जो इस बीमारी को समाप्त करने के प्रति उनकी लंबे समय से चली आ रही प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

का उपयोग करके रोगी के लक्षणों का विश्लेषण करती है, उच्च जोखिम वाले मामलों को चिह्नित करती है, और सटीक निदान और उपचार सुझाव प्रदान करती है। इस प्रकार की वास्तविक समय की नैदानिक सहायता सटीकता और पहुँच दोनों में सुधार कर सकती है, देखभाल में लंबे समय से चली आ रही कमियों को पाट सकती है और उन लोगों तक जीवन रक्षक क्षमताएँ पहुँचा सकती है जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

रोटेरियनों के साथ हमारी लंबे समय से चली आ रही साझेदारी हाल के दशकों में मलेरिया के खिलाफ हुई प्रगति में महत्वपूर्ण रही है।

और यह तो बस शुरुआत है। कृषि में, एआई छोटे किसानों को उनकी ज़रूरतों के अनुरूप सलाह देकर उत्पादन बढ़ाने में मदद कर रहा है। कक्षाओं में, एआई-संचालित उपकरण शिक्षकों को छात्रों के लिए पाठों को वैयक्तिकृत करने और सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने में मदद कर रहे हैं।

यदि विश्व समानता और पहुंच को प्राथमिकता देता रहेगा, तो एआई विकास के लिए एक शक्तिशाली बल गुणक साबित हो सकता है - अवसरों का विस्तार करेगा, असमानता में घटाएगा, और लाखों लोगों के जीवन को बेहतर बनाएगा।

रोटरी अपनी परियोजनाओं में मापनीय प्रभाव पर लगातार ज़ोर दे रही है। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो लंबे समय से डेटा संग्रह पर केंद्रित रहा है, क्या आप हमारे सदस्यों को कोई सलाह दे सकते हैं?

एआई-समर्थित उपकरणों के विकास से लेकर टीकाकरण वितरण और वकालत तक, हर क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण और समय पर डेटा बेहद महत्वपूर्ण है। वैश्विक स्वास्थ्य डेटा के संग्रह और विश्लेषण में शोधकर्ताओं द्वारा की गई प्रगति के चलते अब हम बहुत कुछ जानते हैं, किस कारण से बच्चों की मृत्यु होती है, ये मौतें कहाँ होती हैं, और कुछ बच्चे दूसरों की तुलना में अधिक असुरक्षित क्यों हैं। इन्हीं जानकारियों का उपयोग करके, हमने पिछले 25 वर्षों में बाल मृत्यु दर कम करने और जीवन बचाने में अविश्वसनीय प्रगति हासिल की है। समय के साथ, बेहतर डेटा ने स्वास्थ्य चुनौतियों को समझने, संसाधनों को लक्षित करने और प्रभाव को मापने के हमारे तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव किया है - और यह भविष्य की प्रगति को तेज़ करने के लिए हमारे पास मौजूद सबसे शक्तिशाली उपकरणों में से एक बना हुआ है।

डेटा में निवेश प्रभाव उत्पन्न करने का एक स्मार्ट और किफ़ायती तरीका है। डेटा-संग्रह में निरंतर सुधार और गुणवत्तापूर्ण जानकारी में निवेश हमें यह समझने में सक्षम बनाएगा कि हमारे कार्यक्रम और संसाधन कहाँ सबसे अधिक असर डालेंगे। इससे दुनिया की कुछ सबसे कठिन स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान खोजने में भी मदद मिलेगी। प्रभाव को मापने और कार्यक्रमों को डिज़ाइन करने के लिए गुणवत्तापूर्ण डेटा से शुरुआत करना रोटरी की पहलों को और अधिक प्रभावी बनाएगा।

रोटरी सदस्यों के लिए आपका क्या संदेश है?

सबसे महत्वपूर्ण बात, पोलियो उन्मूलन में आपके अटूट समर्थन के लिए धन्यवाद। रोटरी के नेतृत्व, वकालत और निरंतर प्रतिबद्धता ने दुनिया को पोलियो उन्मूलन के कगार पर ला खड़ा किया है - जिसे कभी असंभव माना जाता था।

दुनिया भर के रोटेरियन के लिए: दशकों के समर्पण और साझेदारी के लिए धन्यवाद। आपके अथक प्रयासों की बदौलत, वह दिन दूर नहीं जब हम ऐसी दुनिया में रहेंगे जहाँ हर बच्चा इस बीमारी से सुरक्षित होगा। हमें विश्वास है कि 2045 में अपने फाउंडेशन के बंद होने से बहुत पहले ही पोलियो इतिहास बन जाएगा।

रोटरी *से पुनः प्रकाशित*

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

मुरादाबाद में डिजिटल मैमोग्राफी मशीन

रोटरी क्लब संस्कृति मुरादाबाद, रो ई मंडल 3100 ने रोटरी क्लब मुरादाबाद अचीवर्स और रोटरी क्लब डेगू नॉर्थ, रो ई मंडल 3700, कोरिया के सहयोग से कांठ रोड स्थित कॉसमॉस हॉस्पिटल में एक डिजिटल मैमोग्राफी मशीन स्थापित की। कोरिया की पीडीजी ली सांग चुल की उपस्थिति में शुरू की गई इस पहल से वंचित पृष्ठभूमि की महिलाओं के लिए उन्नत स्क्रीनिंग सुविधाएँ सुलभ हो सकेंगी।

आईपीडीजी दीपा खन्ना (बाएँ) परियोजना के उद्घाटन के बाद कोरिया और मुरादाबाद के रोटेरियन के साथ।

वाराणसी में रक्तदान वैन का शुभारंभ

रोटरी क्लब वाराणसी डाउनटाउन, रो ई मंडल 3120 ने रोटरी क्लब रुद्रमती काठमांडू, नेपाल के साथ साझेदारी में एक वैश्विक अनुदान परियोजना के तहत पूर्वांचल स्थित होमी भाभा कैंसर अस्पताल को ₹56 लाख की लागत का एक रक्त संग्रह वाहन प्रदान किया। यह वाहन दूर-दराज के इलाकों तक पहुँचकर सुरक्षित और कुशल रक्त संग्रह को संभव बनाएगा। आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से सुसज्जित यह वाहन कैंसर रोगियों की सहायता करेगा।

***बाएँ से चौथे:** आईपीडीजी परीतोश बाजाज और डीजी डॉ अशुतोष अग्रवाल मोबाइल रक्त संग्रह सुविधा के सामने।*

मुंबई में नेत्र देखभाल में सुधार

रोटरी क्लब बॉम्बे अपटाउन, रो ई मंडल 3141 ने अपना *प्रोजेक्ट आईहोप* पूरा कर लिया है, जिसके तहत लोकमान्य तिलक म्युनिसिपल जनरल हॉस्पिटल, मुंबई को 108,561 डॉलर मूल्य के उन्नत नेत्र शल्य चिकित्सा उपकरणों से सुसज्जित किया गया है। इस परियोजना को संडे फ्रेंड्स (एमके गांधी और के गांधी चैरिटेबल ट्रस्ट), रोटेरियन राजेंद्र बरवाले, रोटरी क्लब बॉम्बे मिडटाउन और मुंबई एलिगेंट, तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोगी रोटरी क्लब लिपेटल (जर्मनी) का समर्थन प्राप्त हुआ है।

आईपीडीजी चेतन देसाई (दाएँ से तीसरे) और रोटरी क्लब बॉम्बे अपटाउन के आईपीपी सुमन अग्रवाल (दाएँ) लोकमान्य तिलक अस्पताल में उपकरण के उद्घाटन के समय।

एचपीवी टीकाकरण अभियान

रोटरी क्लब गणदेवी, रो ई मंडल 3060 ने निराली अस्पताल के साथ साझेदारी में गिफ्ट ऑफ लाइफ परियोजना के तहत 9-14 वर्ष की आयु की 900 लड़कियों को एचपीवी टीके लगाए, जिसका लक्ष्य 1,000 लाभार्थियों तक पहुँचना है। ₹26 लाख की लागत वाली यह परियोजना सी एस आर के दानदाताओं द्वारा समर्थित है और इसमें टीके की दो खुराकें प्रदान की जाती हैं। क्लब ने अमृतम अस्पताल को एक अल्ट्रासाउंड (सोनोग्राफी) मशीन भी दान की है। सी एस आर के दानदाताओं द्वारा वित्त पोषित ₹16 लाख की यह परियोजना ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के लिए किफायती निदान सेवाएँ प्रदान करेगी।

गिफ्ट ऑफ लाइफ प्रोजेक्ट *के तहत स्कूल के छात्रों का टीकाकरण किया जा रहा है।*

चलो सीखें कचरा प्रबंधन

किरण ज़ेहरा

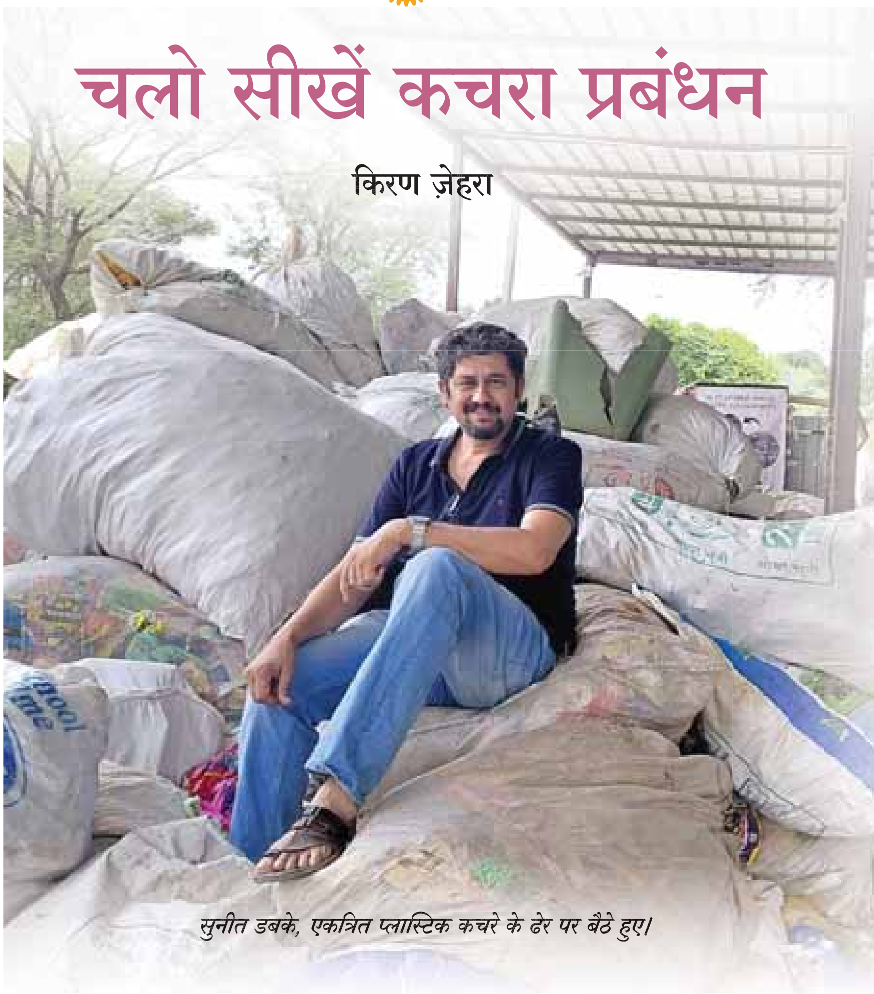

सुनीत डबके, एकत्रित प्लास्टिक कचरे के ढेर पर बैठे हुए।

जब आप एक कचरा प्रबंधन विशेषज्ञ, सुनीत डबके से उस परियोजना के बारे में पूछते हैं, जिसे उनका क्लब रोटरी क्लब बड़ौदा ग्रीन्स, रो ई मंडल 3060 और उनका कचरे से आज़ादी फाउंडेशन मिलकर गुजरात के वडोदरा से 30 किमी दूर स्थित असोज़ गाँव में चला रहे हैं, तो उनकी आवाज़ में एक उत्साह और तात्कालिकता साफ़ झलकती है।

कचरा प्रबंधन में डॉक्टरेट की डिग्री और सरकार के साथ काम करने के अनुभव के साथ उन्होंने देखा कि पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी नीतियाँ न तो सख्त थीं और न ही व्यापक - ''एक ऐसी खामी जिससे समुदाय-आधारित पहलों की अहमियत और बढ़ जाती है।'' उनकी संस्था का उद्देश्य है गाँवों को अनियंत्रित ''कचरे के बोझ से मुक्त करना, जिसके लिए वे कचरा पृथक्करण, रीसायक्लिंग और टिकाऊ सामुदायिक प्रथाओं को बढ़ावा देते हैं।''

''यह सिर्फ़ हमारे गाँवों की शुद्ध भूमि को बचाने या वहाँ का पर्यावरण स्वस्थ बनाए रखने की परियोजना नहीं है, वह कहते हैं।'' वह आगे कहते हैं कि शहरी क्षेत्र कृषि के लिए गाँवों पर बहुत निर्भर है। ''हाल के वर्षों में लोग एक सरल जीवनशैली और मानसिक शांति की तलाश में फिर से गाँवों की ओर लौटने लगे हैं। शहरों में हरियाली केवल पार्कों तक सीमित है लेकिन एक गाँव की आत्मा ही उसकी हरियाली में है। वहाँ की हवा शुद्ध होती है और ताज़ा भोजन मिलता है। हमें इस शुद्ध पर्यावरण को सँभालने की ज़िम्मेदारी निभानी चाहिए। गाँव ही हमारे शहरों की आत्मा हैं।''

शैम्पू के सैशे, चिप्स और बिस्किट के रैपर, PET बोतलें - प्लास्टिक कचरा धीरे-धीरे ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रवेश कर गया है। ''कचरा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के प्रमुख कारणों में से एक है और जहाँ शहरी कचरा प्रबंधन पहले से ही संघर्ष कर रहा है, वहीं ज़्यादातर गाँवों में तो कोई व्यवस्था ही नहीं है। लोग बस अपना कचरा घर के पीछे फेंक देते हैं, जिससे इतने वर्षों में कचरे के ढेर बन गए हैं। घरों के पास जमा हुआ यह प्लास्टिक किसी बिन बुलाए मेहमान जैसा लगने लगा है जो गाँव के हर कोने में फैल गया हो। जो कुछ फेंके हुए थैले और रैपर से शुरू हुआ था, वह अब एक ऐसी ज़िद्दी समस्या बन चुका है, जिसका हल किसी को समझ नहीं आ रहा,'' डबके कहते हैं।

इस समस्या का समाधान खोजने के संकल्प के साथ उन्होंने 2014 में 'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत मंजूसर गाँव में एक प्रायोगिक कचरा प्रबंधन परियोजना की शुरुआत की जिसमें उन्हें बांसवाड़ा सिंटेक्स का सहयोग मिला। यह परियोजना घर-घर जाकर कचरा एकत्र करने, घर पर ही सरल तरीके से कचरा पृथक्करण करने और जैविक अपघटन जैसी गतिविधियों से शुरू हुई। इसका उद्देश्य था एक ऐसा कम लागत वाला, समुदाय-अनुकूल मॉडल तैयार करना जिसे अन्य गाँव भी अपनाकर उदाहरण बना सकें।

2016 में इस मॉडल को बड़े स्तर पर लागू करने के लिए उन्होंने कचरे से आज़ादी फाउंडेशन की स्थापना की। साझेदारियों के माध्यम से यह मॉडल दुमद, सकारिया, नर्मदापुरा और गुलाबपुरा जैसे गाँवों तक फैल गया। 2019 में, एलएंडटी टेक्नोलॉजी सर्विसेज द्वारा दुमद गाँव में गीले और सूखे कचरे के पृथक्करण को बढ़ावा देने के लिए एक प्रोत्साहन-आधारित कार्यक्रम शुरू किया गया। साथ ही रो ई मंडल 3060 के ESRAG (एनवायरनमेंट सस्टेनेबिलिटी रोटरी एक्शन ग्रुप) के निरंतर सहयोग ने टिकाऊ प्रथाओं को मजबूत किया। गुजरात रिफाइनरी में इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन द्वारा शेष ऑयली स्लज और पॉलिमर कचरे के निपटान को लेकर किए गए प्रयासों ने भी योगदान दिया। इन सम्मिलित प्रयासों के परिणामस्वरूप दुमद को कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में गुजरात का नंबर एक गाँव घोषित किया गया।

रोटरी क्लब बड़ौदा ग्रीन्स भी जागरूकता साझेदार के रूप में इस पहल से जुड़ा, जिसने स्कूलों में अभियान चलाए, गाँवों में स्टॉल लगाए और कचरा पृथक्करण पर सीधे ग्रामीणों से संवाद किया। Polycab, NISOL और Apollo Tyres जैसी कंपनियों से मिली सीएसआर सहायता ने इस अभियान को और व्यापक बनाने में मदद की। इस प्रणाली को सतत बनाए रखने के लिए उनकी संस्था ने ₹34 लाख के ई-वाहन में निवेश किया जिसे कचरा संग्रहण के लिए प्रयोग किया

जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह प्रणाली जितनी सामुदायिक है उतनी ही भविष्य के लिए भी तैयार है, वह कहते हैं।

पिछले वर्ष रोटरी क्लब बड़ौदा ग्रीन्स के सहयोग से इस मॉडल को असोज़ गाँव में लागू किया गया। गाँववासियों को प्रोत्साहित किया गया कि वे अपने पृथक किए गए प्लास्टिक कचरे के बदले में साबुन, डिटर्जेंट और नोटबुक्स प्राप्त करें। हर 500 किलोग्राम एकत्रित प्लास्टिक को बेंचों और कुर्सियों में बदला गया, जिन्हें स्कूलों और सामुदायिक स्थलों के लिए ग्राम पंचायत को दान कर दिया गया। आज असोज़ गाँव प्लास्टिक मुक्त बन चुका है। अब क्लब इस पहल को कुनपाड़ गाँव तक विस्तारित कर रहा है।

''गाँववासी अब कचरा-मुक्त समुदायों के निर्माण में भागीदार बन चुके हैं,'' डबके कहते हैं। वह बताते हैं कि पारंपरिक जैविक अपघटन, स्थानीय मरम्मत समाधान और प्रोत्साहन आधारित कचरा पृथक्करण जैसी विधियाँ इस मॉडल को व्यावहारिक और विस्तार योग्य बनाती हैं। स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार समाधान खोजने की उनकी क्षमता के चलते उन्हें 2010 में नॉर्थ कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी में अध्ययन के लिए फुलब्राइट स्कॉलरशिप भी मिली। वहाँ उनका शोध प्रबंध वर्मी-टेक्नोलॉजी की मदद से औद्योगिक स्लज को विषमुक्त खाद में बदलने (बायो-कनवर्ज़न) पर आधारित था।

उनकी रोटरी यात्रा की शुरुआत 2014 में हुई, जब रोटरी क्लब बड़ौदा सयाजीनगरी ने उन्हें नीदरलैंड्स में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए प्रायोजित किया। इसी अनुभव ने उन्हें क्लब का सदस्य बनने के लिए प्रेरित किया। बाद में वह अपनी पर्यावरण केंद्रित पहलों के कारण रोटरी क्लब बड़ौदा ग्रीन्स से जुड़े। ''हमारे क्लब की परियोजनाएँ सिर्फ़ पेड़ लगाने तक सीमित नहीं हैं। पौधा लगाना केवल पहला कदम है लेकिन असली स्थिरता उनके जीवित रहने और समुदाय की भागीदारी पर निर्भर करती है। अगर पेड़ों की देखभाल न की जाए या उनके गिरे हुए पत्तों को जला दिया जाए तो पेड़ लगाने का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है क्योंकि जलाने से मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसें निकलती हैं। इसके बजाय उन पत्तों का उपयोग जैविक खाद निर्माण या पलवार के लिए किया जा सकता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। सिर्फ़ पेड़ लगाकर न भूल जाएँ; लोगों को उनकी देखभाल में शामिल करें और यह सुनिश्चित करें कि यह चक्र पूरा हो।''

कचरे के प्लास्टिक से बनी एक कुर्सी।

वैश्विक अध्ययनों और नेटफ्लिक्स डॉक्यूमेंट्री *कार्बन* का हवाला देते हुए वह ज़ोर देते हैं कि मिट्टी का स्वास्थ्य सीधे तौर पर जलवायु लचीलापन और खाद्य सुरक्षा से जुड़ा हुआ है।

''शुरुआत अपने ही घर से करें। कचरा फेंकने से पहले उसका पृथक्करण करें। जब हम ऐसा करते हैं तो हर चीज़ को कचरा मानना बंद कर देते हैं। खाने के बचे हुए टुकड़े खाद बन जाते हैं, पुन:चक्रण योग्य वस्तुएँ नए उत्पादों में बदल जाती हैं और केवल एक छोटा हिस्सा ही फेंकने योग्य रह जाता है। यह किसी भी आम परिवार द्वारा उठाया जा सकने वाला सबसे आसान कदम है, जो हमारे शहर को और अधिक स्वच्छ, हरित और स्वस्थ बना सकता है,'' वह ज़ोर देकर कहते हैं। क्लब ने अपने सदस्यों को इस अभ्यास के लिए प्रेरित करने हेतु एक मज़ेदार तरीका अपनाया - विशेष स्टॉल्स पर फ्री पानी पुरी की प्लेट! ''भला बड़ौदा में कौन फ्री की पानी पुरी नहीं चाहेगा?'' वह मुस्कराते हुए कहते हैं।

इस अगस्त चेन्नई में हुए लीड25 कॉन्क्लेव में क्लब ने अपनी परियोजना को प्रस्तुत किया, जिसने बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित किया और वास्तविक रुचि जगाई। ''यह एक ऐसे उद्देश्य की शानदार शुरुआत है, जो कचरे को मूल्यवान बनाने का काम करता है,'' वह कहते हैं। ■

क्लब अध्यक्ष राजेश चौबे (दाएँ), डबके और क्लब सचिव विवेख श्रीवास्तवा एक बच्चे को कॉपियाँ और साबुन देते हुए।

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

किश्तवार पीड़ितों के लिए रोटरी राहत

किश्तवाड़ में बादल फटने की त्रासदी के कुछ ही दिनों के भीतर, डीजी रोहित ओबेरॉय द्वारा गठित आपदा प्रबंधन समिति ने जम्मू-कश्मीर के इस कस्बे में हुए नुकसान का आकलन किया और एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसमें पीड़ितों, जिनमें ज़्यादातर तीर्थयात्री थे, और उन स्थानीय लोगों के लिए ज़रूरी राहत सामग्री की पहचान की गई जिनके घर बह गए थे। ओबेरॉय कहते हैं, ''रोटरी क्लब कटरा ने अगले ही दिन आपदा स्थल पर राशन और ज़रूरी सामान भेज दिया। हमारी आठ सदस्यीय टीम राहत कार्यों का समन्वय कर रही है।''

1 जुलाई से, *ऑपरेशन हम फॉर हिमाचल* ने बाढ़ पीड़ितों तक राहत पहुँचाई। ''यह एक व्यापक राहत अभियान था, जिसकी राज्य के अधिकारियों, राजनेताओं, प्रिंट और सोशल मीडिया ने प्रशंसा की। एक महीने में ₹20 लाख से ज़्यादा की राहत किटें बाँटी गईं, और हमारे क्लब अभी भी पीड़ितों की मदद कर रहे हैं।'' ओबेरॉय का लक्ष्य है कि वर्ष के पहले छह महीनों में अपने 121 क्लबों में 25 नए क्लब जोड़ना चाहते हैं, और इस साल के 3,149 रोटेरियन सदस्यों की संख्या में 500 से ज़्यादा नए रोटेरियन शामिल करना चाहते हैं। हम पहले ही 100 से ज़्यादा नए सदस्य जोड़ चुके हैं।

जल्द ही एक रोटरी रिहैब सेंटर (जीजी: ₹1.7 करोड़) शुरू किया जाएगा, जहाँ 30-35 लकवाग्रस्त मरीजों का इलाज किया जाएगा। वहीं, एक मोबाइल मैमोग्राफी क्लिनिक अपने 100 जांच शिविरों में 2,500 ग्रामीण महिलाओं की स्क्रीनिंग करेगा। टीआरएफ योगदान के लिए उनका लक्ष्य 250,000 डॉलर है। डिस्ट्रिक्ट रोटरी एक्शन प्लान चैंपियन (2023-26) के रूप में, वे युवा पेशेवरों को आकर्षित कर रहे हैं, ''जेन ज़ी के लिए रोटरी को लचीला बनाकर।'' ओबेरॉय 2000 में रोटरी से जुड़े थे और कहते हैं कि वे अपने सिल्वर जुबली वर्ष की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अगले वर्ष वे डिस्ट्रिक्ट लर्निंग फ़ैसिलिटेटर की भूमिका निभाएँगे।

रोहित ओबेरोई
शैक्षिक संस्थान
रोटरी क्लब कपूरथला
रो ई मंडल 3070

एम के रविंद्र
सिविल इंजीनियर
रोटरी क्लब चित्रदुर्ग-फोर्ट
रो ई मंडल 3160

जीजी प्रोजेक्ट्स बदलते हैं ज़िंदगियाँ

रो ई के फ़ोकस क्षेत्रों में किए जा रहे ग्लोबल ग्रांट प्रोजेक्ट्स, उत्तर कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के रायलसीमा इलाकों की समुदायों में स्थायी बदलाव ला रहे हैं। ''वर्तमान में हमारे मंडल क्लबों द्वारा 18 सेवा प्रोजेक्ट्स, जिनमें से चार दावणगेरे में हैं, ₹13-15 करोड़ की लागत से लागू किए जा रहे हैं,'' डीजी रविंद्र कहते हैं। चित्रदुर्गा के रोटरी सेवा भवन में 10 डायलिसिस मशीनें (जीजी: ₹1.16 करोड़) स्थापित की गईं, साथ ही फिजियोथेरेपी और कौशल विकास केंद्र भी शुरू किए गए, जिससे ग्रामीण लोगों को लाभ मिला।

उनके होम क्लब ने फिजियोथेरेपी यूनिट के लिए 5,000 डॉलर का डीडीएफ़ योगदान दिया। रविंद्र का लक्ष्य 10 नए क्लब चार्टर करना और मौजूदा 78 क्लबों तथा 2,509 सदस्यों में 500 नए सदस्यों को जोड़ना है। ''मैं साल के अंत तक 3,000 रोटेरियनों की संख्या पार करना चाहता हूँ।'' हाल ही में सांडूर में एक डायग्नोस्टिक लैब (जीजी: ₹60 लाख) और रायचूर में रोटरी ब्लड बैंक (जीजी: ₹70 लाख) स्थापित किए गए। उनकी मंडल टीम सी एस आर ग्रांट प्रोजेक्ट्स के विकल्पों पर विचार कर रही है, जिनमें सरकारी स्कूलों में 15 स्मार्ट क्लासेज़ और एक कार्डियक एम्बुलेंस शामिल हैं, जबकि अनंतपुर में एक ब्लड बैंक (जीजी: ₹70 लाख) की योजना बनाई जा रही है।

रविंद्र का लक्ष्य टीआरएफ को 400,000 डॉलर का योगदान देना है। अपने शुरुआती रोटरी दिनों को याद करते हुए वे कहते हैं, मैंने 1994 में इस संगठन से जुड़ाव किया क्योंकि इसकी ''दोस्ती, सद्भाव और सेवा की परंपराएँ मुझे आकर्षित करती थीं। अब मैं आशावाद नज़रिये के साथ आगे देखता हूँ'' और मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''जीजी प्रोजेक्ट्स दुनिया के इस हिस्से में ज़िंदगियाँ बदल रहे हैं।''

स्वास्थ्य, स्वच्छता और समुदाय पर ध्यान

तीसरी पीढ़ी के रोटेरियन, डीजी कार्तिक को अपने दादा नारायणसामी रेड्डीयार और पिता जयरामन से प्रेरणा मिली, जो उनके घरेलू क्लब के चार्टर सदस्य हैं और उन्होंने 1999 में रोटरी में शामिल हो गए। वे कहते हैं, ''मैं हमारी परियोजनाओं के सामुदायिक प्रभाव से प्रभावित हुआ, और यही मुझे सेवा जारी रखने के लिए प्रेरित करता है।''

उन्होंने स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए एक विशाल सर्वाइकल कैंसर जागरूकता और टीकाकरण परियोजना (जीजी: ₹150,000) के लिए एक मंडल टीम बनाई है। कई जीजी परियोजनाएँ प्रस्तावित हैं, जिनमें सरकारी स्कूलों में 100 शौचालय ब्लॉक (जीजी: प्रत्येक ब्लॉक के लिए ₹7.5 लाख); 100 स्कूलों के लिए 200 इंटरेक्ट बोर्ड (जीजी: ₹2.4 करोड़); और एक सरकारी अस्पताल में 50 डायलिसिस मशीनें लगाने के लिए चल रही बातचीत (जीजी: ₹2.5 करोड़) शामिल हैं। कार्तिक सी एस आर फंड का उपयोग पेरम्बलुर में एक सामुदायिक हॉल (₹2.5 करोड़), एक इनडोर स्पोर्ट्स स्टेडियम (₹1.5 करोड़) और सेमिनार व कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक ऑडिटोरियम (₹2.5 करोड़) के निर्माण में कर रहे हैं।

पचास नए क्लब स्थापित किए जाएँगे और 2,000 नए सदस्य बनाए जाएँगे - जिनमें से अब तक 1,200 नए रोटेरियन शामिल हो चुके हैं। जब उन्होंने कार्यभार संभाला था, तब मंडल में 150 क्लब और 5,850 रोटेरियन थे। टीआरएफ दान के लिए उनका लक्ष्य 15 लाख डॉलर है। कोडईकनाल में जल्द ही एक विशाल चार दिवसीय RYLA आयोजित किया जाएगा, जिसमें नाइजीरिया, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और न्यूज़ीलैंड के 50 कॉलेज छात्र भाग लेंगे। वे मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''नेतृत्व कौशल के साथ-साथ, हम सफल जीवन के लिए नैतिक मूल्यों पर भी ध्यान केंद्रित करेंगे।''

जे कार्तिक
परिवहन
रोटरी क्लब पेरम्बलूर
रो ई मंडल 3000

मोटापे और ऑटिज़्म से लड़ाई

जी एन रमेश
गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट
रोटरी क्लब कोचीन मेट्रोपोलिस
रो ई मंडल 3205

इस नवगठित मंडल में रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देने के लिए कुछ चिकित्सा परियोजनाओं पर काम चल रहा है। शुरुआत में यहाँ 103 क्लब और 3,600 सदस्य हैं। डीजी रमेश की योजना अपने कार्यकाल के दौरान 20 नए क्लब स्थापित करने और सदस्यता में 20 प्रतिशत की शुद्ध वृद्धि हासिल करने की है।

प्रोजेक्ट ROCCO — (रोटरी कॉम्बैटिंग चाइल्डहुड ओबेसिटी) — के तहत 10,000 बच्चों को इस जीवनशैली संबंधी बीमारी के प्रति जागरूक किया जाएगा, जिसके लिए विभिन्न कार्यक्रम और अभियान आयोजित किए जाएंगे। वे कहते हैं, ''हम उन बच्चों की पहचान करेंगे जिन्हें चिकित्सकीय हस्तक्षेप की आवश्यकता है और उन्हें चिकित्सा सहायता प्रदान करेंगे। सभी क्लब फंड एकत्र करेंगे और आरओसीसीओ अभियान में भाग लेंगे। दूसरे चरण में, ऑटिज़्म से पीड़ित बच्चों के माता-पिता और देखभालकर्ताओं को कोच्चि, त्रिश्शूर और मूवट्टुपुळा में विशेष सत्रों के लिए आमंत्रित किया गया है। हम कम से कम 50 ऑटिज़्म और डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों के लिए स्किलिंग कक्षाएँ आयोजित करेंगे। व्यावहारिक प्रशिक्षण से इन विशेष बच्चों को भविष्य में नौकरी पाने में मदद मिलेगी।''

प्रोजेक्ट ROCCO **– रोटरी कॉम्बैटिंग चाइल्डहुड ओबेसिटी – 10,000 बच्चों में इस जीवनशैली रोग के प्रति जागरूकता पैदा करता है।**

डीजी जी एन रमेश
रो ई मंडल 3205

एक अन्य प्रोजेक्ट के तहत डायबिटीज़ से पीड़ित लोगों को इंसुलिन सहायता (जीजी: 40,000 डॉलर) उपलब्ध कराई जाएगी, जो बेलिवर्स हॉस्पिटल, तिरुवल्ला और अमृता हॉस्पिटल, कोच्चि के सहयोग से किया जा रहा है। शुरुआत में हम 50 मरीजों को विशेष पंप, उपकरण, दवाइयाँ आदि सहित सभी मदद उपलब्ध कराएंगे। इसके अलावा, कोच्चि में पालतू और आवारा पशुओं के लिए एक श्मशान (सी एस आर फंड: ₹40 लाख) भी स्थापित किया जाएगा। उनका लक्ष्य टीआरएफ योगदान के लिए 1.5 मिलियन डॉलर है। 2001 में रोटरी से जुड़े कार्तिक का मानना है कि ''नेटवर्किंग और सेवा अधिक युवाओं को रोटरी से जोड़ेंगी।'' उद्योगपति और प्रतिष्ठित रोटेरियन कोचुसेफ़ चिट्टिलप्पिली उनके आदर्श हैं। ■

परिवर्तन की शक्ति

पांडिचेरी के स्कूलों में नेत्र शिविर

रोटरी क्लब पुदुचेरी विशन, रो ई मंडल 2981, एक सतत परियोजना के रूप में स्कूलों में नेत्र जांच शिविर आयोजित कर रहा है। क्लब इन स्कूलों में नेत्रदान पर जागरूकता व्याख्यान भी देता है। साथ ही, एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय को एक स्मार्ट टीवी दान किया गया है, जो छात्रों को अपना ज्ञान बढ़ाने में मदद करेगा।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर स्तनपान कराने वाली माताओं को स्तनपान के महत्व पर पर्चे वितरित किए गए। साथ ही, क्लब विशेष बच्चों को नियमित रूप से भोजन उपलब्ध कराता है। ■

एक स्कूल में नेत्र जांच शिविर।

सेलम के स्कूलों में WASH परियोजनाएँ

सेलम (रो ई मंडल 2982) में लगभग नौ वर्ष पहले जिन 16 विद्यालयों में वाश से संबंधित जीजी परियोजनाएं लागू की गई थीं, उनमें से 11 विद्यालयों के दौरे के दौरान पीडीजी गणेश भट्ट ने पाया कि शौचालय, मूत्रालय, हैंडवाश स्टेशन, और पानी के नल सहित सभी सुविधाएँ स्वच्छ स्थिति में बनाए रखी जा रही हैं।

उन्हें मकाती, फिलीपींस में 20 रोटेरियनों के लिए आयोजित टीआरएफ प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान इस WASH परियोजना का दौरा करने के लिए आमंत्रित किया गया था। पीडीजी भट्ट ने स्कूल के प्रधानाचार्यों, शिक्षकों, छात्रों, जिला शिक्षा अधिकारियों, अभिभावकों और सामुदायिक नेताओं के साथ बातचीत की। WASH परियोजना ने छात्रों, अभिभावकों और हाथ धोने की आदतों को अपनाने वाले समुदाय के व्यवहार में बदलाव लाया है। गाँव अब खुले में शौच से मुक्त हैं। ■

पीडीजी गणेश भाट (बाएँ से चौथे), अध्यापकों, रोटेरियन और छात्रों के साथ, पंचायत यूनियन मिडिल स्कूल, कपारुथमपट्टी में।

पुणे के स्कूलों के लिए डिजिटल टैबलेट

डिजिटल विभाजन को पाटने के उद्देश्य से, शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में रोटरी क्लब पुणे हेरिटेज, रो ई मंडल 3131 ने चार ग्रामीण स्कूलों के कक्षा 8 और 9 के 250 छात्रों को शैक्षिक टैबलेट प्रदान किए।

शैक्षणिक सॉफ्टवेयर और प्रेरक सामग्री से युक्त ये टैबलेट छात्रों के पास उनकी पढ़ाई पूरी होने तक रहेंगे। ₹50 लाख की यह डिजिटल लर्निंग परियोजना कूका इंडिया, टर्क ऑटोमेशन, फेस्टो इंडिया, शगुन इंडस्ट्रीज़ और शाक्षी मेडटेक की संयुक्त कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सी एस आर) पहल से संभव हुई है। *Ask Didi* ऐप छात्रों को विभिन्न विषयों पर स्पष्ट और सटीक उत्तर प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा, जिससे डिजिटल तकनीक और शिक्षा के बीच की खाई को पाटा जा सकेगा। ■

छात्र अपने शैक्षिक टैबलेट के साथ।

इरोड में एक मानव दूध बैंक

अपनी मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पहल के तहत, रोटरी क्लब इरोड नेक्सस, रो ई मंडल 3203 ने लोटस अस्पताल में *वरम* नामक एक मानव दूध बैंक की स्थापना की। डीजी बी धनशेखर और ए के एस सदस्य के श्रीनिवासन ने इस सुविधा (₹2 लाख) का उद्घाटन किया, जो उपचाराधीन शिशुओं के लिए स्तन दूध का एक सुरक्षित और विश्वसनीय स्रोत सुनिश्चित करेगी। उद्घाटन के दौरान क्लब अध्यक्ष एस भरणीधर, सचिव आर मधुमती, परियोजना अध्यक्ष श्रुति राजेंद्रन, पीडीजी ई के सगादेवन, आरआरएफसी एन धवमणि और एजी के रामलिंगम उपस्थित थे।

क्लब ने एक गैर-सरकारी संगठन इरोड पेरेंटिंग हब के सहयोग से स्तनपान कराने वाली और गर्भवती माताओं के लिए इ़मॉम कनेक्टफ नामक एक व्हाट्सएप सहायता समूह शुरू किया। ■

लोटस अस्पताल की डॉ उषा सगादेवन एक लाभार्थी को मानव दूध का पैकेट भेंट करती हुई। (दाएँ से) रोटरी क्लब इरोड नेक्सस की सचिव आर मधुमति और परियोजना अध्यक्ष डॉ श्रुति राजेन्द्रन भी चित्र में शामिल हैं।

Membership & TRF contribution summary

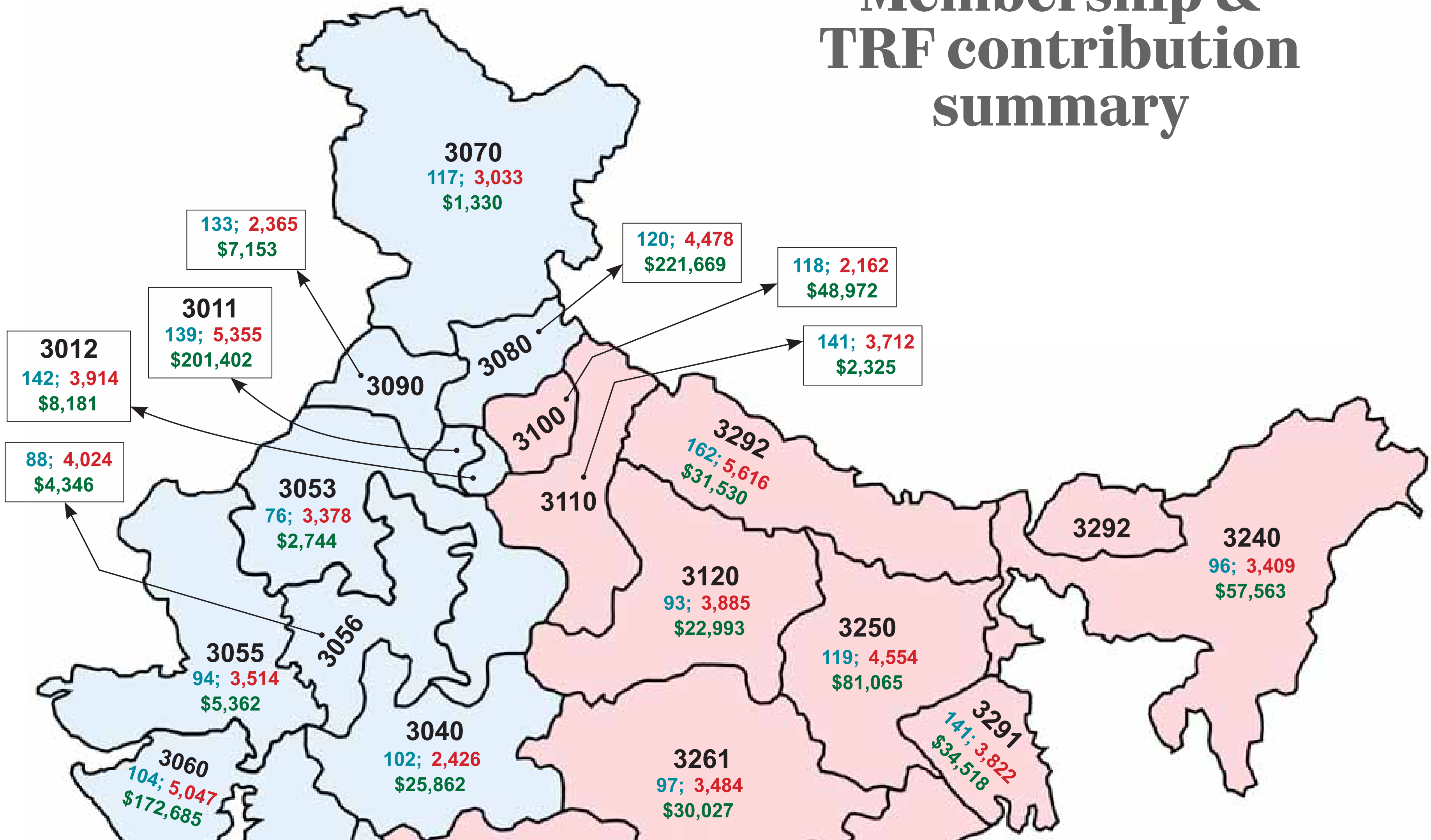

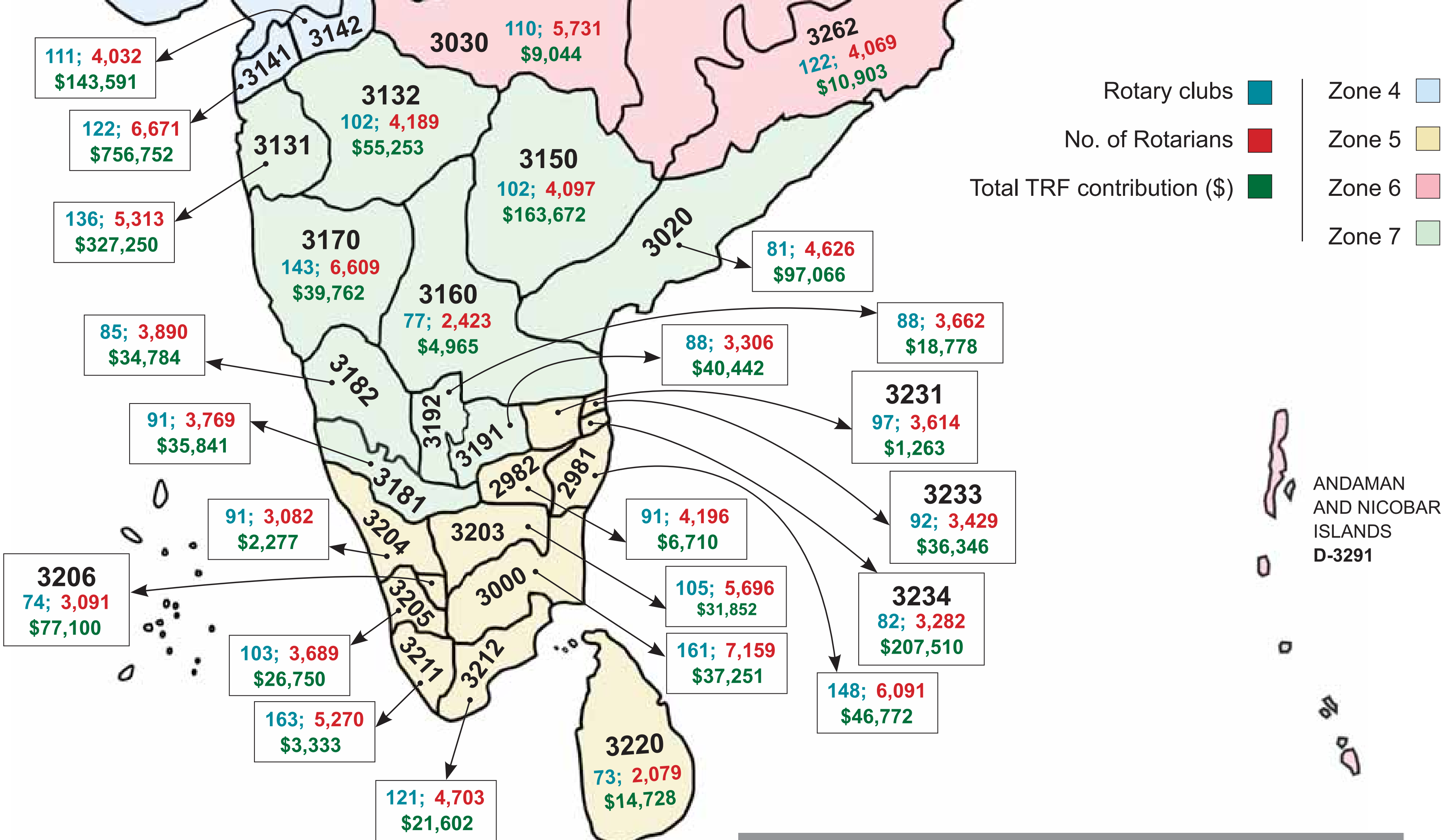

Rotary worldwide

Rotaract clubs :	9,680	Rotaract members :	136,499
Interact clubs :	18,041	Interact members :	415,081
RCCs :	14,191		
		As on September 23, 2025	

*Membership figures as on September 1, 2025.
*TRF contribution figures as on August 31, 2025.

रो ई मंडल 3030

रोटरी क्लब नागपुर ईशान्या

रोटरी फाउंडेशन इंडिया के माध्यम से VICCO प्रोडक्ट्स बॉम्बे के सी एस आर फंड के माध्यम से इंदिरा गांधी सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, नागपुर में तीन डायलिसिस मशीनें स्थापित की गईं।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3080

रोटरी क्लब अंबाला इन्डस्ट्रीयल एरिया

क्लब के सदस्यों ने अपने हरियाली मिशन के तहत छावनी क्षेत्र स्थित रेड क्रॉस वृद्धाश्रम में पौधे लगाए।

रो ई मंडल 3090

रोटरी क्लब समाना

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मर्दाहेड़ी में एक वाटर कूलर स्थापित किया गया, जिससे लगभग 130 विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा। इस परियोजना का नेतृत्व नरेश मित्तल ने किया।

रो ई मंडल 3131

रोटरी क्लब खोपोली

मंडल इंटरेक्ट असेंबली में डीजी संतोष मराठे मुख्य अतिथि थे। इस बैठक में 220 इंट्रैक्टर्स और शिक्षकों ने भाग लिया। इस अवसर पर एक नाटक का मंचन किया गया, जिसमें बताया गया कि इंटरेक्ट मीटिंग को रोचक तरीके से कैसे संचालित किया जाए।

रो ई मंडल 3060

रोटरी क्लब अमरेली गिर

अमरेली स्थित मूक-बधिर विद्यालय के व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र को पांच सिलाई मशीनें दान की गईं, ताकि श्रवण एवं वाणी बाधित महिलाओं को सिलाई कौशल प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाया जा सके।

रो ई मंडल 3142

रोटरी क्लब नवी मुंबई हिल साइड

मानसून के दौरान वाहनों के आवागमन को नियंत्रित करने में उनके योगदान सराहना करते हुए, तलोजा में ड्यूटी पर तैनात यातायात पुलिसकर्मियों को रेनकोट वितरित किए गए। इस पहल का नेतृत्व परियोजना अध्यक्ष विजयराव शिंदे ने किया।

रो ई मंडल 3132

रोटरी क्लब सोलापुर स्मार्ट सिटी

गुलवांची गांव में शिवगंगा मेंडार्गी द्वारा स्वयं सहायता समूहों की 100 महिलाओं के लिए एक विशेष सत्र आयोजित किया गया, जिसमें उन्हें अपने उत्पादों के विपणन और ब्रांडिंग के बारे में मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

आपकी हथेली क्या कहती है?

गीता मथाई

हस्तरेखा शास्त्र ने लोगों को लंबे समय से आकर्षित किया है। क्या वे सचमुच भविष्य बता सकते हैं? इस विद्या ने शौकिया, पेशेवर और स्वयं-शिक्षित उत्साही लोगों को अपनी ओर खींचा है। इस विषय पर अनगिनत किताबें उपलब्ध हैं, और यहाँ तक कि ऑनलाइन हस्तरेखा सेवाएँ भी सुलभ हैं।

सच तो यह है कि हमारी हथेलियाँ और तलवे पहचान के अकाट्य प्रमाण होते हैं। हथेली और उंगलियों के निशान, जिनमें अनोखे घुमाव, मेहराब और लूप होते हैं, पूरी तरह व्यक्तिगत होते हैं और कभी भी एक जैसे नहीं होते, यहाँ तक कि जुड़वाँ बच्चों में भी नहीं। डीएनए विश्लेषण से बहुत पहले ही, उंगलियों के निशान पहचान के सबसे शुरुआती और सबसे विश्वसनीय बायोमेट्रिक तरीकों में से एक माने जाते थे।

जादूगरों और भविष्यवक्ताओं ने देखा कि हथेलियों की रेखाएँ, हाथों का आकार और उंगलियों की लंबाई हर व्यक्ति में अलग-अलग होती है। धीरे-धीरे हस्तरेखा शास्त्र ज्योतिष की तरह एक आकर्षक पेशा बन गया। अनुभवी हस्तरेखाविद् अक्सर पढ़े-लिखे और चौकस होते हैं, और शरीर की भाषा और रूप-रंग का चतुराई से आकलन कर लेते हैं। हथेली देखने से पहले ही, वे किसी व्यक्ति की मानसिक स्थिति, चरित्र या स्वास्थ्य का अंदाज़ा सिर्फ़ उसके चलने और हाव-भाव देखकर लगा सकते हैं।

उदाहरण के लिए, जिस तरह से हम अपने हाथ रखते हैं, वह अक्सर हमारे बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) को दर्शाता है। 30 से अधिक बीएमआई वाले (मोटे) लोग अक्सर अपने अंगूठे पीछे की ओर करके खड़े होते हैं। अधिक वजन वाले व्यक्ति (बीएमआई 25-30) अक्सर अपने अंगूठे बगल की ओर रखते हैं, जबकि सामान्य वजन वाले लोग (बीएमआई 20-25) स्वाभाविक रूप से अपनी हथेलियों को आगे की ओर रखते हैं। मोटापे और अस्वस्थता से ग्रस्त व्यक्ति के लंबे समय तक जीवित रहने की संभावना कम हो जाती है, जबकि एक चिंतित, बेचैन मुद्रा छिपे हुए मनोवैज्ञानिक तनाव का संकेत देती है।

दिलचस्प बात यह है कि आधुनिक चिकित्सा अब उस बात को स्वीकार करती है, जिससे हस्तरेखाविद् सदियों से लाभ उठाते रहे हैं, कि हथेलियों और हाथों का सावधानीपूर्वक अध्ययन वास्तव में चिकित्सा इतिहास, निदान, जीवनशैली और यहां तक कि जीवन प्रत्याशा के बारे में भी बहुमूल्य जानकारी प्रदान कर सकता है।

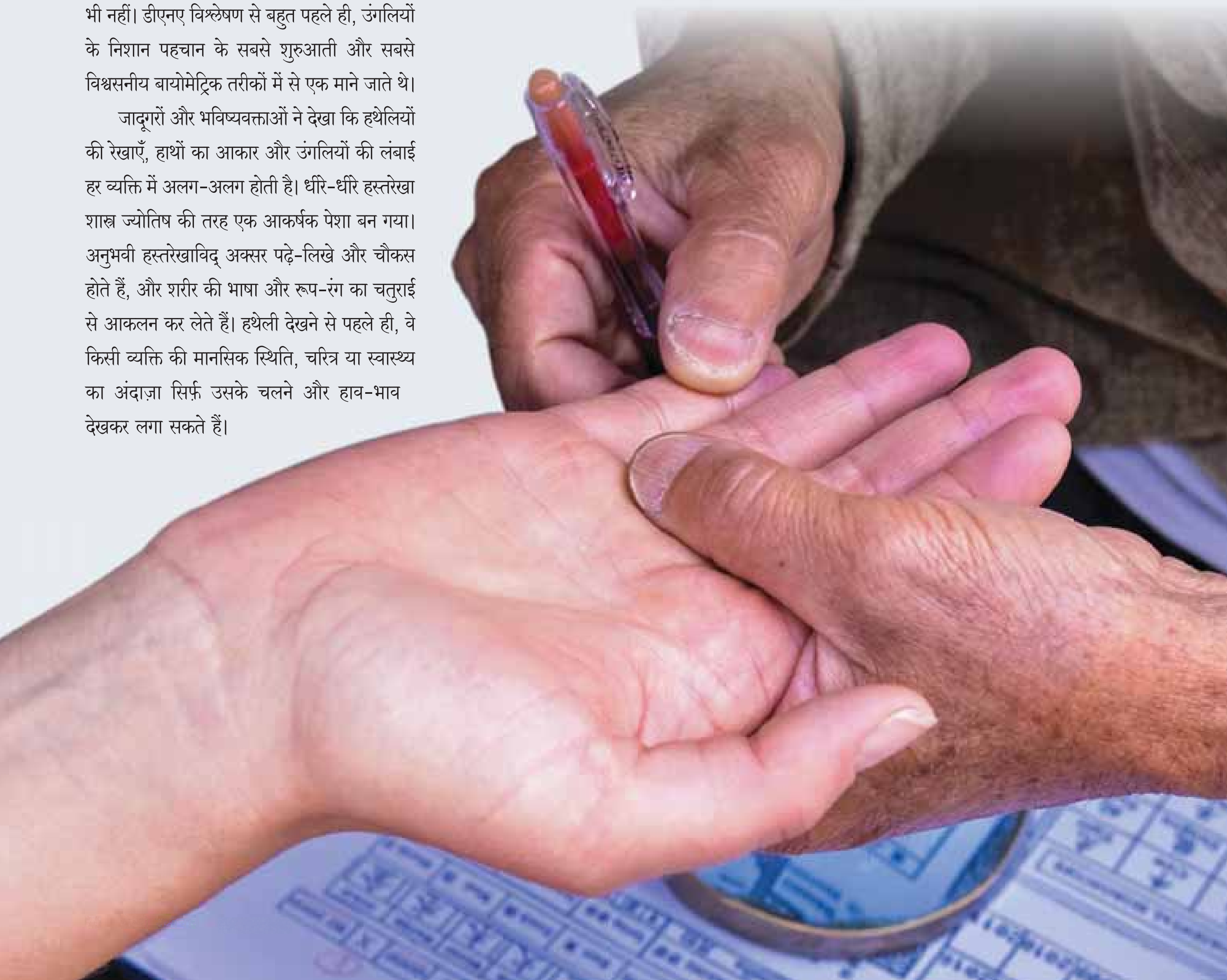

गर्भावस्था के 12वें हफ़्ते के आसपास, जब गर्भ में पल रहा शिशु अपने हाथों को मजबूती से जकड़े रहता है, हथेली पर झुर्रियाँ बनने लगती हैं। आमतौर पर, प्रत्येक हथेली पर तीन अलग-अलग झुर्रियाँ विकसित होती हैं।

इस महत्वपूर्ण पहली तिमाही के दौरान भ्रूण को कोई भी शारीरिक, चिकित्सीय, बीमारी या दवा से होने वाली चोट स्थायी निशान छोड़ सकती है, जिससे इन सिलवटों का निर्माण प्रभावित हो सकता है। ऐसी असामान्यताएँ कभी-कभी गर्भावस्था के 12वें सप्ताह के बाद अल्ट्रासाउंड स्कैन में देखी जा सकती हैं। यदि असामान्य हथेली की सिलवटें दिखाई दें, तो गुर्दे, हृदय या अन्य अंगों में संबंधित विकासात्मक असामान्यताओं के लिए भ्रूण की सावधानीपूर्वक निगरानी की जानी चाहिए। जन्म के बाद, गर्भ में बंद मुट्ठियों के कारण बनने वाली ये असामान्य हथेली की सिलवटें शिशु की खुली हथेलियों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

कभी-कभी, हथेली के ऊपरी हिस्से की दो सिलवटें मिलकर हथेली पर एक सिलवट बना लेती हैं, जिसे *सिमियन* रेखा कहते हैं। यह विशेषता अक्सर गुणसूत्र संबंधी असामान्यताओं से जुड़ी होती है। इससे जुड़ी सबसे आम स्थिति डाउन सिंड्रोम (ट्राइसोमी 21) है, जहाँ गुणसूत्र 21 पर अतिरिक्त आनुवंशिक सामग्री विकासात्मक और शारीरिक अंतरों का कारण बनती है। अन्य ट्राइसोमी, जैसे कि गुणसूत्र 13 और 8 से जुड़ी, असामान्य हथेली संबंधी सिलवटों के साथ भी मौजूद हो सकती हैं।

दिलचस्प बात यह है कि हर 30 सामान्य व्यक्तियों में से एक में भी हथेली की एक ही सिलवट दिखाई दे सकती है। यह पुरुषों में ज़्यादा आम है और आमतौर पर केवल एक हाथ को प्रभावित करता है, जबकि दूसरे हाथ में तीन सिलवटें दिखाई देती हैं। कुछ मामलों में, एक या दोनों माता-पिता की एक ही हथेली पर भी यह सिलवट हो सकती है।

हालाँकि यह बदलाव अक्सर हानिरहित होता है, फिर भी इसे एक मामूली विसंगति माना जाता है और इस पर सावधानीपूर्वक नज़र रखी जानी चाहिए। कुछ बच्चों में आगे चलकर अन्य अंगों में भी सूक्ष्म असामान्यताएँ दिखाई दे सकती हैं, और अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि ल्यूकेमिया या अन्य रक्त कैंसर होने का जोखिम लगभग 50 प्रतिशत तक बढ़ जाता है।

मार्फन सिंड्रोम एक आनुवंशिक विकार है, जिसकी विशेषता है *एराक्नोडैक्टाइली* - असामान्य रूप से लंबी और पतली उंगलियाँ जो मकड़ी जैसी दिखती हैं। इस स्थिति का पता कभी-कभी जन्म से पहले ही अल्ट्रासाउंड द्वारा मध्यमा उंगली और हाथ की लंबाई मापकर लगाया जा सकता है। मार्फन सिंड्रोम अक्सर हृदय, आँखों, रक्त वाहिकाओं और कंकाल की असामान्यताओं से भी संबंधित होता है।

त्रिपक्षीय हाथ, जिसमें तर्जनी, मध्यमा और अनामिका उंगलियां लगभग समान लंबाई की होती हैं, जन्मजात हाइपोथायरायडिज्म, कुछ गुर्दे संबंधी विकारों और बौनेपन के विशिष्ट प्रकारों से संबंधित पाया जाता है।

शोध से पता चलता है कि कुछ मानसिक बीमारियों से ग्रस्त व्यक्तियों की उंगलियों पर सामान्य लोगों की तुलना में अधिक खुले लूप और कम कुंडलियां पाई जाती हैं।

असामान्य हथेली की सिलवटें हमेशा वंशानुगत या आनुवंशिक विकारों के कारण नहीं होतीं। गर्भावस्था के दौरान शराब पीने वाली महिलाओं के बच्चे भ्रूणीय अल्कोहल सिंड्रोम से पीड़ित हो सकते हैं, जिसकी पहचान हथेली पर केवल एक सिलवट की उपस्थिति से की जा सकती है।

सिगरेट पीने वालों, दीर्घकालिक श्वसन समस्याओं से पीड़ित व्यक्तियों या जन्मजात हृदय रोग से ग्रस्त लोगों में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, जिसके कारण उनके नाखून नीले पड़ जाते हैं।

कुछ फेफड़ों की स्थितियाँ, जैसे ब्रोन्किइक्टेसिस, और पुरानी आंतों की बीमारियाँ, उंगलियों के क्लबिंग का कारण बन सकती हैं। इस स्थिति में नाखून गोल और उभरे हुए हो जाते हैं तथा तोते की चोंच जैसे दिखने लगते हैं। उत्साहजनक बात यह है कि अंतर्निहित बीमारी का सफलतापूर्वक इलाज हो जाने पर नाखूनों का क्लबिंग अक्सर ठीक हो जाता है। यहाँ तक कि उंगलियों की लंबाई का अनुपात भी गर्भ में हार्मोन के संपर्क से प्रभावित होता है। लिंग चाहे जो भी हो, अनामिका की तुलना में छोटी तर्जनी उंगली वाले व्यक्ति जन्म से पहले टेस्टोस्टेरोन के उच्च स्तर के संपर्क में थे, जबकि लंबी तर्जनी उंगली वाले व्यक्ति एस्ट्रोजन के संपर्क में अधिक थे। यह अंतर केवल 2-3 प्रतिशत जितना कम हो सकता है, लेकिन इसे व्यक्तित्व लक्षणों और करियर के रुचियों से जोड़ा गया है।

अध्ययनों से पता चलता है कि पेशेवर महिलाओं और महिला वैज्ञानिकों में अक्सर जन्मपूर्व टेस्टोस्टेरोन का स्तर अधिक होता है, जिसके कारण उनमें कुछ ऐसे संज्ञानात्मक लक्षण विकसित हो सकते हैं जो सामान्यतः पुरुषों में देखे जाते हैं। इसके विपरीत, उच्च सापेक्ष एस्ट्रोजन स्तर वाले पुरुष अक्सर ललित कला और सामाजिक विज्ञान जैसे क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

थोड़े से अभ्यास और सावधानीपूर्वक अवलोकन से आप भी हथेलियों की रेखाओं में छिपे आकर्षक रहस्यों को पहचानना सीख सकते हैं।

लेखिका बाल रोग विशेषज्ञ हैं और उन्होंने स्टेइंग हेल्दी इन मॉडर्न इंडिया *पुस्तक लिखी है*

Rotary PEOPLE OF ACTION

जोधपुर के रोटेरियन ने किलीमंजारो शिखर पर लहराया रोटरी ध्वज

किरण ज़ेहरा

अफ्रीका के तारों से सजे आकाश के नीचे डॉ डुंगर सिंह राठौड़ ने किलीमंजारो की अंतिम चढ़ाई के लिए अपने जूते कसकर बाँधे। ''हवा अंधेरे को चीरती हुई चल रही थी, मेरी साँसें जमी हुई धुंध की तरह हवा में तैर रही थीं और हर कदम पहले से भारी लग रहा था,'' वह याद करते हैं। फिर भी अपने बैग में सावधानी से रखे राष्ट्रीय ध्वज और रोटरी ध्वज के साथ दिल में अटूट हौसला लिए वह अपने गाइड और पाँच अन्य भारतीय पर्वतारोहियों के साथ आगे बढ़ते रहे। कुछ घंटे बाद 19,341 फीट की ऊंचाई पर अफ्रीका की सबसे ऊँची चोटी उनके पैरों के नीचे थी।

रोटरी क्लब जोधपुर मिडटाउन, रो ई मंडल 3053 के सचिव, राठौड़ के लिए ट्रेकिंग जीवनभर का जुनून रहा है। लेकिन किलिमंजारो की चढ़ाई केवल एक और रोमांच नहीं था, ''यह अब तक की मेरी सबसे साहसिक चुनौती थी,'' वह कहते है। ऊँचाई से होने वाली बीमारी, कड़ाके की ठंड और बेहद कठिन चढ़ाई से जूझते हुए उन्होंने उस भावना को साकार किया जिसे वे रोटरी रिदम - अनुशासन, निरंतरता और आगे बढ़ते रहने का साहस - कहते हैं।

2022 में 17,598 फीट की ऊँचाई पर स्थित एवरेस्ट बेस कैंप तक पहुँचने के बाद भी राठौड़ ने खुद को वहीं नहीं रोका और इस वर्ष उन्होंने आगे बढ़ते हुए 19,341 फीट ऊँचाई वाली किलिमंजारो की उहुरु चोटी को जीत लिया - जो एवरेस्ट बेस कैंप से लगभग 1,800 फीट ऊँची है। किलिमंजारो सिर्फ शारीरिक सहनशक्ति की बात नहीं है। यह खुद पर विश्वास करने की और उन मूल्यों पर विश्वास करने की यात्रा है जो रोटरी ने मुझे सिखाए - जैसे कि लगातार प्रयास करना, साथ मिलकर आगे बढ़ना और सकारात्मक सोच रखना, वह कहते है।

जोधपुर में अपने घर लौटने पर वह अपनी हर सुबह की शुरुआत रोटरी के एक छोटे से वॉकिंग ग्रुप के साथ वॉक करके करते है। पीडीजी प्रीयेश भंडारी, एजी सौरभ राठी, क्लब अध्यक्ष राजेश नरूला, क्लब सदस्य ललित गर्ग और डॉ सुशील नाहर - हर सुबह राठौड़ के साथ तेज़ चाल में टहलने, हँसी-मज़ाक और आपसी मेलजोल के

रोटेरियन डुंगर सिंह राठौड़ अन्य पर्वतारोहियों के साथ।

लिए इकट्ठा होते हैं। पहाड़ पर जब थकावट ने उन्हें रोकने की कोशिश की, ''तो मेरे इन मित्रों का अदृश्य साथ ही मेरी ताकत बन गया। मुझे जैसे उनकी आवाज़ें सुनाई दे रही थी जो मुझे प्रोत्साहित कर रही थीं और मुझमें हिम्मत बनाए रखे हुए थीं। जो ऊर्जा हम हर सुबह साथ में बाँटते हैं, वही मुझे शिखर तक ले गई,'' वह कहती है।

चढ़ाई का सबसे कठिन हिस्सा अंतिम चरण में था - आधी रात को शुरू हुई चढ़ाई, जब तापमान शून्य से काफी नीचे था और चारों ओर घना अंधकार छाया हुआ था। स्टेला प्वाइंट की ओर बढ़ते हुए हर कदम थकान और ठंडी हवा से जंग लड़ने जैसा था। फिर भी राठौड़ खुद को उहुरु चोटी पर खड़ा पाते हैं, जहाँ वे थकावट, कृतज्ञता और एक शांत आनंद के मिले-जुले भावों से अभिभूत हो उठते हैं, जब उन्होंने पहले राष्ट्रीय ध्वज और फिर रोटरी का झंडा वहाँ लहराया।

ऊपर: राठौड़ किलिमंजारो शिखर पर रोटरी ध्वज के साथ।

बाएँ: शिखर पर भारतीय ध्वज दिखाते हुए।

उनके क्लब के लिए यह चढ़ाई केवल व्यक्तिगत विजय नहीं थी। राजेश नरूला कहते हैं, ''राठौड़ ने कुछ असाधारण किया है - उन्होंने न केवल एक पर्वत को फतह किया बल्कि यह भी सिद्ध किया कि रोटरी का आदर्श वाक्य 'स्वयं से ऊपर सेवा' आत्म-विजय पर भी लागू होता है। वह हम सभी के लिए एक सच्ची प्रेरणा हैं। उनकी इस उपलब्धि ने जोधपुर में रोटरेक्टरों और युवा सदस्यों के बीच फिटनेस, दृढ़ मानसिक और अपनी सीमाओं को लांघने जैसे विषयों पर चर्चाओं की एक नई लहर शुरू कर दी है।''

अन्य कई पर्वतारोहियों की तरह अब राठौड़ की निगाहें माउंट एवरेस्ट पर टिकी हैं। ''यह सफर सिर्फ चोटियों को जीतने का नहीं है। जब आप किसी शिखर पर खड़े होकर क्षितिज की ओर देखते हैं, तब समझ में आता है कि हर पर्वत - चाहे वह प्रकृति का हो या जीवन का - एक ही तरीके से चढ़ा जाता है। एक-एक कर के दृढ़ निश्चय से उठाए गए कदमों से। और जब ये कदम रोटरी परिवार के सहयोग से उठते हैं,'' तब असंभव भी संभव हो जाता है, वह मुस्कराते है। ■

राठौड़ (बाएँ) सह-पर्वतारोही एस एस शेखावत के साथ।

परदेस में

एक यात्रा-वृत्तांत-सह-संस्मरण और एक उपन्यास; दोनों ही इस समय में अलग-अलग तरीकों और अलग-अलग स्थानों पर अपनी पहचान और परायापन की अनुभूति का वर्णन कर रहे हैं।

संध्या राव

आतिश तसीर के यात्रा-वृत्तांत-सह-संस्मरण *ए रिटर्न टू सेल्फ: एक्सकर्शन इन एक्साइल* में एक बिंदु पर वह बोलिविया की यात्रा का वर्णन करते हैं, जहाँ वे कोपाकबाना में फीस्ट ऑफ द वर्जिन में भाग लेने जाते हैं। वे बोलिविया, मंगोलिया और इराक - इन तीन देशों में तीर्थयात्रा की भावना और प्रकृति का विश्लेषण करते हैं और साथ ही इस बात पर भी विचार करते हैं कि इन देशों का वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य उनके अतीत पर किस प्रकार आधारित है। जब वे राजधानी शहर ला पाज़ को पीछे छोड़ते हैं और पहली बार एंडीज़ पर्वत श्रृंखला की झलक देखते हैं, तो उन्हें अपने एक मित्र का संदेश याद आता है, जो दक्षिण अमेरिका से भलीभांति परिचित है। उनके मित्र का कहना था - वे सच्चे हिंदू हैं। वे सब कुछ आत्मसात करके भी अपनी तरह बने रहते हैं। यह टिप्पणी उस सांस्कृतिक मिश्रण की ओर इशारा करती है जिसे उनके मित्र ने अल्टिप्लानो क्षेत्र में देखा था - जो आकार में तिब्बत के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उच्चभूमि पठार है। इसका अधिकांश भाग बोलिविया में स्थित है जबकि कुछ हिस्से पेरू, चिली और अर्जेंटीना के अंतर्गत आते हैं। इसके उत्तर में टिटिकाका झील है और दक्षिण में सालार दे उयूनी के नमक के मैदान। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यही वो क्षेत्र है जहाँ अनेक संस्कृतियाँ एक साथ रहती हैं।

सब कुछ आत्मसात करके भी स्वयं बने रहना - क्या यही एक खरे हिंदू की परिभाषा है? इस असाधारण लेखन-संग्रह में बहुत कुछ है जो उकसाता है, सोचने को बाध्य करता है और भीतर तक छू जाता है। यह संग्रह वर्णन और उपमाओं में जीवंत, दर्शन में चिंतनशील और मानव अस्तित्व के प्रति संवेदनशील है। इसीलिए, यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे आप बस यूँ ही पढ़ डालें, भले ही इसकी लंबाई महज़ 200 पृष्ठों के लगभग हो मगर इसे एकाग्रता और सजगता से पढ़ने की आवश्यकता है।

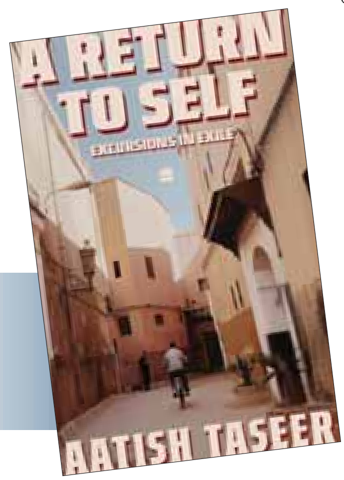

ये लेखन आतिश तसीर के जीवन के उस विशेष अनुभव-क्षेत्र का है जो केवल उनका अपना है। उनके पिता, पाकिस्तानी राजनेता सलमान तसीर, जो पाकिस्तान में ईशनिंदा क़ानूनों का विरोध करने के कारण अपने ही अंगरक्षक द्वारा मारे गए थे, आतिश के जीवन में लगभग एक अजनबी ही थे। आतिश का पालन-पोषण उनकी नानी और उनकी माँ, पत्रकार तवलीन सिंह - जो भारत की उन पहली महिला पत्रकारों में से एक हैं जिन्होंने संघर्षों को कवर किया - द्वारा भारत में किया गया। उन्होंने भारत, ब्रिटेन और अमेरिका - तीनों जगहों पर शिक्षा प्राप्त की। 2019 में भारत सरकार द्वारा उनका OCI दर्जा रद्द कर दिया गया, जिससे उन्हें अपने ही देश में फिर कभी प्रवेश की अनुमति नहीं रही - जबकि तब तक वह पाँच किताबें लिख चुके थे, जिनमें से चार भारत पर आधारित थीं। उस समय चालीस वर्षीय तसीर के लिए यह निर्णय एक गहरा व्यक्तिगत आघात था। इस बारे में वह लिखते हैं: अपने देश को खो देना, अत्यंत शर्मिंदगी भरा है आपका देश आपके आत्मबोध से इतना जुड़ा होता है कि जब तक वह छिन नहीं जाता, आपको यह अहसास नहीं होता कि वह आपके अस्तित्व के लिए कितना मजबूत सहारा था। यह उन कुछ चीज़ों में से एक है जिन्हें हम बिना-सोचे समझे अपना मान लेते है - और यही वो चीज़ है जिसकी वजह से हम बाकी दुनिया के प्रति जिज्ञासु होते हैं।

वह अपने देश को खोने के दर्द का जिक्र इस किताब की हालिया यात्राओं में भी करते हैं; हालाँकि, यह दर्द उनके दिल में एक चुप्पी की तरह छुपा रहता है - जैसे एक मौन विलाप - और वह नई जगहों, नए लोगों की खोज करते हैं और उनकी कहानियों व इतिहासों को आपस में बुनते हैं। इस किताब की यात्रा इस्तांबुल से शुरु होती है, जहाँ व्यक्ति लगातार सांस्कृतिक झटकों की स्थिति में जीता है। वह 15 साल पहले की अपनी इस्तांबुल यात्रा को याद करते हैं, जब उनके भीतर ही कई अंतर्विरोध और असमंजस मौजूद थे। इस आंतरिक संघर्ष को व्यक्त करने के लिए वह ऑस्कर वाइल्ड को उद्धृत करते हैं: एक आदमी जिसकी इच्छा होती है कि वह खुद से कुछ अलग बन जाए और वह जो बनना चाहता है, वह बन भी जाता है। और यही उसकी सज़ा बन जाती है। जो लोग मुखौटा पहनना चाहते हैं, उन्हें फिर वही पहनना पड़ता है। लेकिन इस बार इस्तांबुल की यात्रा में वह मुखौटा उतर चुका है - और वे खुद को एक सच्चे पारदर्शी स्थान पर पाते हैं, जहाँ भीतरी और बाहरी जीवन एक हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि इस यात्रा में आतिश तसीर अपने वास्तविक स्वरूप तक लौटने में सफल हुए हैं।

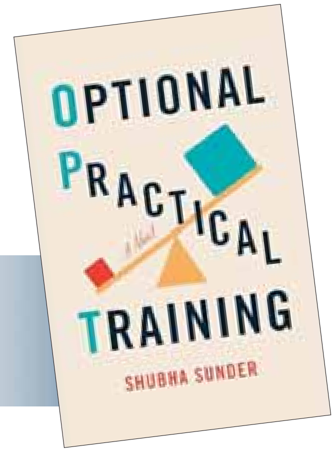

इस संग्रह में इस्तांबुल अध्याय सबसे अधिक व्यक्तिगत और आत्ममंथन से भरा हुआ है। लेकिन आतिश की यात्राएँ यहीं नहीं रुकतीं – वह उज्बेकिस्तान, मोरक्को, स्पेन, मैक्सिको, श्रीलंका, बोलिविया, मंगोलिया और इराक की भी यात्रा करते हैं। हर यात्रा को वह एक विशेष दृष्टिकोण, एक खास संवेदना या प्रिज़्म के ज़रिए देखने की कोशिश करते हैं। और एक बेहद दिलचस्प विवरण में वह अपनी इंद्रियों के माध्यम से भी सामाजिक-राजनीतिक खोज करते हैं – जैसे परफ्यूम (सुगंध) के माध्यम से। मैक्सिको में वह चावल की तलाश में जाते हैं जिसे वे हिस्पैनिक उपनिवेशवाद के बाद की पहचान मानते हैं। लेकिन वहाँ पहुँचते ही उन्हें एक साधारण लेकिन गहरा सवाल पूछा जाता है: चावल क्यों? श्रीलंका में वह कमल का पीछा करते हैं – एक ऐसा फूल जो वहाँ हर जगह दिखाई देता है जबकि उस देश का राष्ट्रीय फूल असल में जल-कुमुदिनी (वाटर लिली) है। मोरक्को में, अल्जीरिया सीमा के पास के आखिरी कस्बे ममहामिद में, वह जैतून और खजूर के पेड़ों के बीच एक बाग़ में होटल की मालकिन, परु के साथ बैठे होते हैं। परु उन्हें एक दरवाज़े की ओर इशारा करती हैं: मैंने दरवाज़ा खोला, और वहाँ उस कच्चे दरवाज़े की चौखट में, अर्धचंद्राकार रेत के टीलों का अनंत विस्तार था, जिनके किनारे काले, नुकीले अर्धचंद्राकार शीशों से घिरे थे। यह दृश्य बेहद अद्भुत, अवर्णनीय रूप से सुंदर था मगर फिर भी मुझे एक अजीब सी घबराहट महसूस हुई – खुद को इस वीरान, लगभग अमेरिका के आकार के रेगिस्तान के किनारे बने खाली होटल में पाकर।

अपना देश खो देना एक गहरी लज्जा को जानना है आपका देश आपकी पहचान से इस कदर जुड़ा होता है कि जब तक वह चला नहीं जाता, तब तक आपको एहसास ही नहीं होता कि वह आपके लिए कितना सहारा रहा है

कहा जाता है कि यात्रा आपको खुद को बेहतर समझने में मदद करती है। आतिश तसीर के विचारों और भावनाओं का यह सुंदर, पारदर्शी और सहज लेख हमें भी प्रेरित करता है कि हम न केवल बाहरी दुनिया की यात्रा करें बल्कि अपने भीतर भी एक यात्रा शुरू करें। *ए रिटर्न टू सेल्फ* की पंक्तियाँ पढ़ते हुए आपसे यह अपेक्षा की जाती कि आप इसके हर पृष्ठ को धीरे-धीरे, ध्यानपूर्वक पलटें, ठहरें, सोचें और खुद से भी सवाल करें।

शुभा सुंदर लघु कथाओं की अपनी पहली किताब *बूमटाउन गर्ल* (जिसका ज़िक्र *रोटरी न्यूज़* के मार्च 2024 संस्करण में हुआ था) के बाद एक बार फिर लेखन में अपने पहले उपन्यास ऑप्शनल *प्रैक्टिकल ट्रेनिंग* के साथ लौटी हैं। अगर इसका शीर्षक देखकर आपको लगे कि यह कोई स्व-सहायता संबंधी किताब होगी तो आप ग़लत है क्योंकि असल में इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है। ओपीटी एक अमेरिकी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय छात्र अपनी डिग्री पूरी करने के बाद अमेरिका में एक साल तक काम कर सकते हैं। इलेक्ट्रिक लिट् के लिए एक ऑनलाइन इंटरव्यू में सारा अंजुम बरी से बात करते हुए शुभा सुंदर कहती हैं: यह एक प्रवासी की कहानी है लेकिन ऐसा नहीं है कि इसमें कोई प्रवासी अपनी कहानी सुना रहा है – बल्कि यह अमेरिका की कहानी है, जो उस युवा महिला से कही गई बातों में परिलक्षित होती है। वह बहुत युवा है... और लोग उससे जो बातें कहते हैं वो ही उसकी नई पहचान को गढ़ने लगती हैं। और वे बातें अमेरिका के चेहरे को भी दिखाती हैं। कई आवाज़ों/दृष्टिकोणों से बुने गए इस उपन्यास में नायिका पवित्रा बोस्टन के एक स्कूल में पढ़ाने के अपने उस एक साल के अनुभव के दौरान बार-बार सूक्ष्म आक्रमणों, सांस्कृतिक रूढ़ियों और गलतफहमियों का सामना करती है।

असल में, शुभा सुंदर खुद इस उपन्यास को लगभग 25 वर्षों के शिक्षण अनुभव के बाद लाती हैं और यही अनुभव उनके उपन्यास के पात्रों – जिनमें से कई शिक्षक हैं – और उनकी शिक्षण-शैली को आकार देता है। भारत की स्थिति की तुलना में वह अमेरिका के शिक्षा-तंत्र के बारे में एक महत्वपूर्ण बात कहती हैं: अमेरिका में शिक्षा एक अधिकार है, जिसे समाज एक शिक्षित नागरिक समाज तैयार करने के उद्देश्य से प्रदान करता है। उपन्यास में भी कोई पात्र यही बात कहता है। मैं अकसर सोचती हूँ कि ये दो दृष्टिकोण (भारत और अमेरिका के) एक-दूसरे से कितने विपरीत हैं। और मुझे लगता है कि यही बात शिक्षकों को काफी तनाव में डालती है।

इस उपन्यास में पवित्रा एक महत्वपूर्ण बात पर ध्यान देती है: ओल्गा को एक बेहतरीन शिक्षक उसकी कुशलता नहीं बल्कि उसका आकर्षण बनाता है – उसका *ब्रांड* – उसके लिए यह कितना अद्भुत है और इसलिए उसका अंदाज़ दूसरों को लुभाता है। मारिसा ने मुझे यह बात समझाई कि शिक्षण का स्वरुप असल में एक किरदार होता है जिसे शिक्षक निभाते हैं और वह किरदार जितना किसी की असली शख्सियत का विस्तारित रूप होता है, उतना ही सहज और प्रभावशाली उसका प्रदर्शन लगता है। पवित्रा इस विचार को सही ठहराते हुए कहती है, आप दर्शकों के सामने खड़े होते हैं – जो कई बार शत्रु भी लग सकते हैं और फिर वह आगे कहती है और जो किरदार मैंने निभाया – जिसे मैंने नहीं चुना था बल्कि सिर्फ़ अपनी नौकरी निभाने की कोशिश में अपनाया – उसे मेरा 'दर्शक वर्ग' अपनाने से हिचक रहा था।

संक्षिप्त, स्पष्ट, निर्विवाद और गूंजदार – ये शब्द उस सुव्यवस्थित, सधे हुए उपन्यास के लिए एकदम उपयुक्त हैं, जो नायिका के जीवन के एक पूरे वर्ष की यात्रा को प्रस्तुत करता है। यह यात्रा उस बिंदु पर समाप्त होती है जब उसका वीज़ा समाप्त हो जाता है – और फिर... क्या?

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

रो ई मंडल 3150

रोटरी क्लब ग्रेटर हैदराबाद

स्थानीय रोटेरियन और लायंस क्लब के सहयोग से विजयवाड़ा के विभिन्न स्कूलों के छात्रों को यूनिफ़ॉर्म वितरित किए गए, जिनका प्रायोजन जगीसा अपैरल्स ने किया।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3203

रोटरी क्लब पोलाची

डॉक्टर्स डे पर पेथानायकनुर गाँव के एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को ₹1.65 लाख मूल्य के चिकित्सा उपकरण और आवश्यक सामग्री दान की गई। इस परियोजना से लगभग 10,000 लोगों को लाभ मिलेगा।

रो ई मंडल 3211

रोटरी क्लब अलेप्पी ग्रेटर

कारगिल विजय दिवस (26 जुलाई) के अवसर पर क्लब ने रोटरी पार्क में आयोजित एक रंगारंग कार्यक्रम में 21 पूर्व सैन्यकर्मियों को सम्मानित किया, जिससे पड़ोस में क्लब की सार्वजनिक छवि बेहतर हुई।

रो ई मंडल 3212

रोटरी क्लब ईस्ट कोस्ट रामनाद

प्रोजेक्ट रोटरी व्हील्स ऑफ़ लव के तहत 125 व्हीलचेयर सरकारी अस्पतालों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, वृद्धाश्रमों और रेलवे स्टेशनों पर वितरित की गईं, जिसमें 120 रोटरी क्लबों ने भाग लिया। इस परियोजना का शुभारंभ डीजी दिनेश बाबू ने किया।

रो ई मंडल 3170

रोटरी क्लब कर्चोरेम संवोर्देम

60 से ज़्यादा दिव्यांग बच्चों ने अपने शिक्षकों और अभिभावकों के साथ स्थानीय थिएटर में हिंदी फिल्म *सितारे ज़मीन पर* का आनंद लिया। इस फिल्म प्रदर्शन का प्रायोजन क्लब अध्यक्ष बालकृष्ण होदरकर ने किया।

रो ई मंडल 3231

रोटरी क्लब गुडियाथम

अपने रोटरी कम्युनिटी कोर के माध्यम से, क्लब ने बच्चों को मिट्टी के बर्तनों से खिलौने और अन्य वस्तुएँ बनाना सिखाया। सभी प्रतिभागियों को पौधे और प्रमाण पत्र दिए गए।

रो ई मंडल 3240

रोटरी क्लब दुर्गापुर एलीट

पर्यावरण परियोजनाओं के एक भाग के रूप में क्लब द्वारा गोद लिए गए पार्क, जिबानानंदा दास शिशु उद्यान, कविगुरु में पक्षियों के घोंसले और दाना-पानी के लिए ट्रे स्थापित की गईं।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

पर्यावरण-अनुकूल उत्सव

प्रीति मेहरा

इस त्यौहार के मौसम में अपनाइए हरित राह।

दुनिया भर में त्योहार अपने स्वभाव से ही उत्सवपूर्ण होते हैं। लोग इन मौकों पर सजते-संवरते हैं, खुलकर आनंद लेते हैं, अपनी चिंताओं को भूल जाते हैं और खुशियाँ बाँटते हैं। भारत में हम अपने त्योहारों को बहुत गंभीरता से मनाते हैं और उन्हें उल्लासपूर्ण और आत्मीय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। और हम साल के उस दौर में हैं जब हमारे सामने तीन बड़े त्योहार हैं: दीपावली, क्रिसमस और नया वर्ष।

यहाँ तक कि 50 साल पहले भी, अगर किसी ने त्योहारों को पर्यावरण-अनुकूल बनाने के बारे में लिखा होता, तो उसे ख़ुशी को बिगाड़ने वाला और उत्सव का मज़ा कम करने वाला कहा जाता। लेकिन आज हम जानते हैं कि उत्सव का आनंद लेते समय हमें माता प्रकृति के बारे में भी सोचना चाहिए और उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। इसलिए, इस आत्मविश्वास के साथ कि हमारे पास अब एक अधिक जागरूक और जिम्मेदार नागरिक समाज है, मैंने सोचा कि यह साझा करना उपयोगी होगा कि हम किस तरह साफ़-सुथरे और हरित तरीके से उत्सव मना सकते हैं।

आगे बढ़ने से पहले, मैं यह ज़रूर कहना चाहूँगा कि मुझे त्योहार और उनसे मिलने वाला शुद्ध आनंद और सौहार्द बहुत पसंद है। पिछले महीने गणेश चतुर्थी का पर्व था, और चेन्नई में जिस कॉलोनी में मैं रहता हूँ वहाँ यह अवसर बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। कई दिनों तक गणेश पूजा हुई और एक पंडाल में गणेश जी की मूर्ति स्थापित की गई। बाद में मूर्ति को शोभायात्रा में निकालकर समुद्र में विसर्जित किया गया।

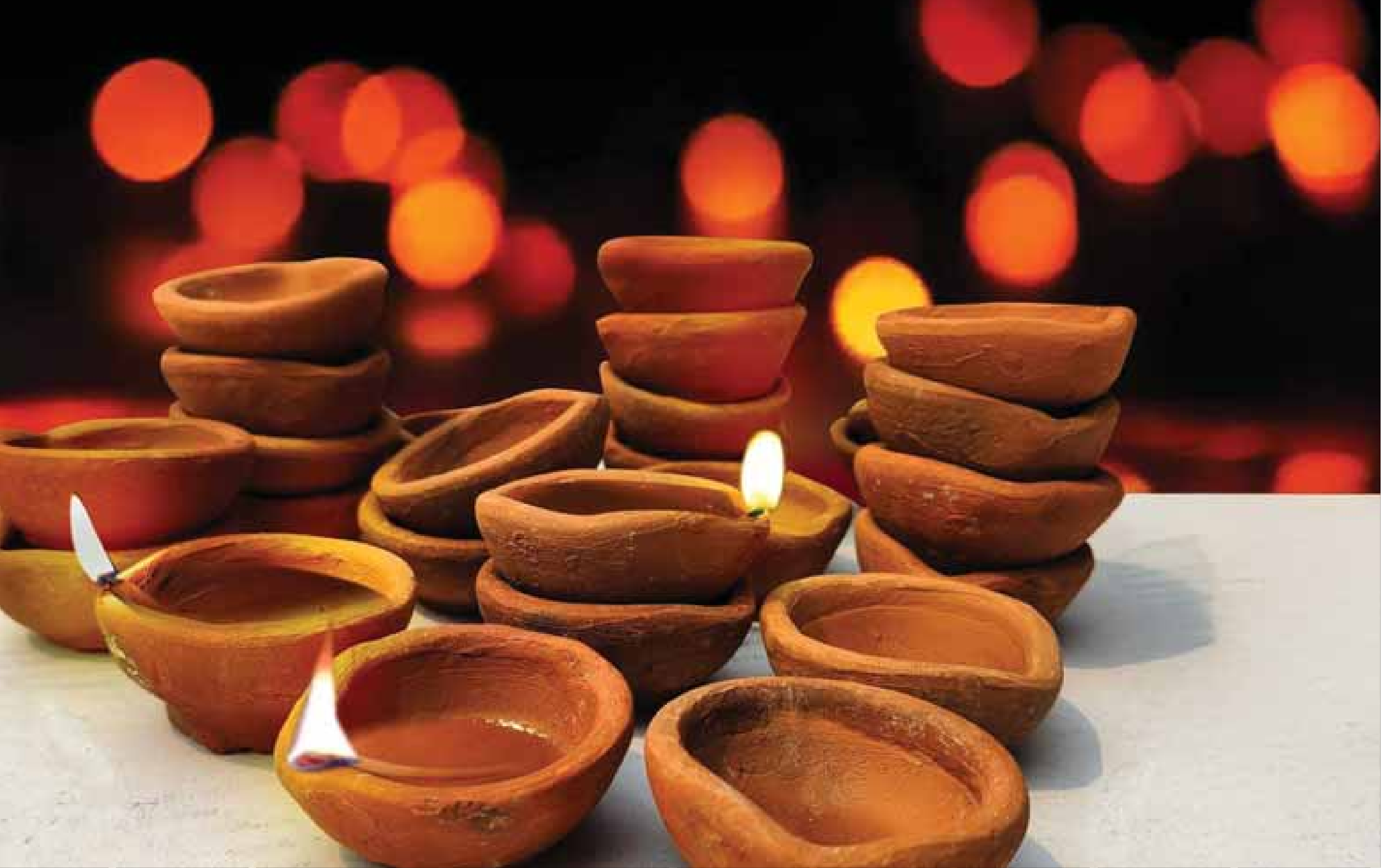

इस पूजा ने मुझे दिल्ली में अपनी एक दोस्त द्वारा मनाई जाने वाली गणेश चतुर्थी की याद दिला दी। वह हर साल घर पर गणेश जी की मूर्ति स्थापित करती थी, लेकिन हमेशा बाज़ार से सबसे पर्यावरण-अनुकूल और सही आकार की मूर्ति भी चुनती थी। वह उसे फूलों और पत्तियों से सजाती थी, रोज़ाना आरती के लिए मिट्टी के दीयों का इस्तेमाल करती थी, और दोपहर के भोजन के लिए सबको मिट्टी के बर्तनों में परोसती थी। विसर्जन के दिन वह अपनी प्रिय मूर्ति को बाल्टी में विसर्जित करती थी। लगभग दस मिनट में, मूर्ति विलीन हो जाती थी। इसके बाद वह पानी पौधों के लिए इस्तेमाल करती, जिससे उसके बगीचे और घर में खुशियाँ छा जाती थीं।

यही छोटे-छोटे विचारशील प्रयास एक पर्यावरण-रक्षक योद्धा को दूसरों से अलग बनाते हैं। थोड़े से प्रयास से, इस महीने हम एक पर्यावरण-अनुकूल दिवाली मना सकते हैं। तो, इसे कैसे करें? पहला कदम यह समझना है कि धुआँ छोड़ने वाले पटाखे वायु की गुणवत्ता में गिरावट का एक बड़ा कारण हैं और शिशुओं, बच्चों, बीमारों और बुजुर्गों के लिए एक गंभीर स्वास्थ्य खतरा पैदा करते हैं। अगर हम ऐसे पटाखे खरीदने से बचें और अपने बच्चों को पर्यावरण और स्वास्थ्य पर इनके प्रभाव के बारे में समझाएँ, तो हम आधी पर्यावरण-युद्ध पहले ही जीत चुके होंगे।

हमारे शहरों में ध्वनि प्रदूषण बढ़ाने वाले तेज़ आवाज़ वाले पटाखों के इस्तेमाल से बचने या उन्हें कम करने पर भी विचार किया जाना चाहिए। पालतू जानवरों, अन्य पशु और पक्षियों को अचानक और लगातार होने वाले शोर से बेहद परेशानी होती है। दिल्ली आए एक थके हुए विदेशी जोड़े ने मुझे बताया कि दिवाली की रात उनके लिए बेहद कठिन और जागरण से भरी रही और उन्हें ऐसा लगा जैसे वे किसी युद्ध क्षेत्र में हों!

इस त्यौहार को एक स्थायी त्यौहार बनाने में मदद करने वाले अन्य उपायों में अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनना और नए कपड़े न खरीदना शामिल है, क्योंकि दिवाली पर अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करना देवी लक्ष्मी को दिया जाने वाला सबसे सुंदर उपहार है। अगर आप घर में रोशनी के लिए केवल मिट्टी के बर्तन या मोमबत्तियों का इस्तेमाल करते हैं, *प्रसाद* के लिए पत्तों की थाली और भोजन परोसते समय पत्तों या गन्ने की खोई से बनी बड़ी थाली और लकड़ी के चम्मच का इस्तेमाल करते हैं, तो यह पृथ्वी के लिए बहुत बड़ा उपकार होगा। यह नियम ओणम, ईद और अन्य त्यौहारों पर भी लागू होता है। हालाँकि भारत में सिंगल-यूज़ प्लास्टिक पर प्रतिबंध है, फिर भी देश भर में सस्ते प्लास्टिक के कटलरी का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। एक दुखद सच्चाई।

यदि आपकी कॉलोनी या संस्थान में बहुत बड़ा समारोह हो रहा हो, तो पानी के लिए PET बोतलों का इस्तेमाल करने से बचना ही समझदारी होगी। हालाँकि, अगर ऐसा करना ज़रूरी हो, तो उन्हें इकट्ठा करने और ज़िम्मेदारी से निपटाने की व्यवस्था करना सबसे अच्छा होगा। मॉल, रेलवे स्टेशनों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लगाई गई बायोक्रक्स द्वारा निर्मित स्वचालित बोतल फ्लेकिंग मशीनें बहुत उपयोगी हैं। आपको बस खाली PET बोतल को मशीन में डालना है; यह विघटित हो जाती है, और

बचे हुए फ्लेक को अन्य उत्पाद बनाने के लिए रीसायकल किया जाता है।

क्रिसमस भी वास्तव में एक पर्यावरण-अनुकूल त्योहार बन सकता है। इसके लिए बस इतना करना है कि हर साल अपने क्रिसमस ट्री पर वही सजावट इस्तेमाल करें (मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो ऐसा करते हैं) और आप प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने से बचेंगे। यहाँ भी, दिवाली की तरह, दावत पर्यावरण-अनुकूल बनाया जा सकता है और कपड़े आपके रविवार के सबसे अच्छे विकल्प हो सकते हैं। एक चीज़ जो आपके क्रिसमस को और भी पर्यावरण-अनुकूल बना सकती है, वह है यह सुनिश्चित करना कि आप जो भी क्रिसमस उपहार दें, वह या तो हाथ से बना हो या टिकाऊ सामग्रियों से बना हो। इससे युवा पीढ़ी की सोच और अपेक्षाओं को बदलने में भी काफ़ी मदद मिलेगी।

क्रिसमस का एक आनंद है ऑफिस या क्लासरूम में *सीक्रेट सांता* गेम खेलना। इसमें लॉटरी निकाली जाती है ताकि तय हो सके कि कौन किस सहकर्मी के लिए क्रिसमस का उपहार तैयार करेगा। मुझे याद है, मैंने भी एक बार इसमें हिस्सा लिया था। नियम यह था कि उपहार सादा होना चाहिए, उसकी कीमत ₹100 से कम होनी चाहिए और वह या तो आपकी अपनी रचना हो या फिर 'पर्यावरण' के दायरे में आता हो। इसने वाकई लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया और सहकर्मियों को पर्यावरण के अनुकूल कई विकल्पों के बारे में जागरूक किया। लोगों ने बड़े ही नए-नए उपहार तैयार किए।

नए साल के जश्न में भी ऐसी ही आदतें कारगर साबित हो सकती हैं। इससे पार्टियाँ ज़्यादा साफ़-सुथरी, ज़्यादा स्वस्थ और कम कचरा पैदा करने वाली बन सकती हैं। पार्टी के नियमों में से एक यह भी हो सकता है कि जाने से पहले सफ़ाई कर लें, कूड़े को 'गीले' और 'सूखे' कूड़ेदानों में अलग-अलग कर दें। इससे न केवल मेज़बानों को काफ़ी राहत मिलेगी, बल्कि एक ऐसी आदत भी बनेगी जो लंबे समय तक बनी रह सकती है।

अंतिम, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि नए साल का एक आदर्श खेल यह हो सकता है कि मेहमानों को एक संकल्प के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया जाए (और उसे पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध किया जाए) जो आने वाले वर्ष में उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक होने में मदद करे!

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक दिन में 50,000 पेड़ लगाना

गौतम श्रेष्ठ

जुलाई की एक ठंडी सुबह, मेरा दिल उत्साह से धड़क रहा था जब मैं माउंट एवरेस्ट रोटरी क्लब के रोटेरियन - रवि लामिछाने, चांद एसजेबी राणा और सुमन रत्न तुलाधर - के साथ मध्य नेपाल में पौधे लगाने की यात्रा पर निकला। हम ललितपुर मंडल के दक्षिणी भाग में पाटन से लगभग 23 किलोमीटर (14.2 मील) दूर एक मनमोहक गाँव, दालचोकी की ओर जा रहे थे। यह समुद्र तल से 1,200 से 2,300 मीटर (3,900 से 7,545 फीट) की ऊँचाई पर स्थित एक पहाड़ी इलाका है।

रोटरी मंडल 3292 का बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण का एक गौरवशाली इतिहास रहा है, लेकिन इस वर्ष का "एक दिन में 50,000 पेड़ अभियान" अब तक का हमारा सबसे महत्वाकांक्षी प्रयास था। नेपाल और भूटान के समुदायों, वार्डों, सामाजिक संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और स्थानीय सरकारों को एकजुट करके, हमारा लक्ष्य इसे हमारे इतिहास की सबसे बड़ी और सबसे प्रभावशाली वृक्षारोपण पहल बनाना था।

घुमावदार रास्तों और अद्भुत नज़ारों से होते हुए लगभग एक घंटे की यात्रा के बाद हम दलचोकी पहुँच गए। वहाँ पहुँचकर, हमने अन्य रोटेरियन और स्थानीय समुदाय के सदस्यों के आने का इंतज़ार किया, जैसे-जैसे कोहरा छँटता गया और आसमान साफ़ होता गया, ठंडी हवाएँ हमें सजग बनाए रखती रहीं।

मंडल गवर्नर बिनोद कोइराला के दृष्टिकोण ने माहौल तैयार कर दिया था: हम सब मिलकर अपने समुदायों और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी हरित विरासत बना सकते हैं। यह सिर्फ़ पेड़ लगाने की बात नहीं है; यह आशा का संचार करने और सामुदायिक संबंधों को मज़बूत करने की बात है।

बच्चे और बुज़ुर्ग पौधे लेकर एक-दूसरे को हँसी-मज़ाक से बधाई दे रहे थे और उत्साह से भरे हुए थे। हमने पार्कों और पहाड़ी इलाकों के साथ-साथ स्कूलों, सार्वजनिक स्थलों, पुलिस थानों और राजमार्गों के पास पेड़ लगाए। धीरे-धीरे हमने शहरी और ग्रामीण इलाकों के परिदृश्यों को आशा और हरियाली से भर दिया।

पेड़ लगाने के बाद, रोटरी क्लबों ने पौधों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हितधारकों

के साथ मिलकर काम किया, सुरक्षात्मक बाड़ लगाई, नियमित रूप से पानी दिया और समुदाय के नेतृत्व में निगरानी की। इस प्रकार, हमारी परियोजना में स्थिरता को शामिल किया गया।

हमें राष्ट्रपति के संदेश *यूनाइट फॉर गुड* से प्रेरणा मिली, और प्रयास इस बात का प्रमाण बन कि सामूहिक सहयोग से कैसे एक उज्ज्वल और हरित भविष्य का निर्माण किया जा सकता है। हमारा वृक्षारोपण अभियान केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक आंदोलन था। हर वृक्षारोपण के साथ, हमारे मंडल ने आने वाली पीढ़ियों के लिए आशा, एकता और पर्यावरण संरक्षण की स्थायी विरासत छोड़ी।

लेखक रो ई मंडल 3292 (नेपाल, भूटान) के सहायक गवर्नर तथा रोटरी क्लब याला, नेपाल के पूर्व अध्यक्ष हैं।

नेपाल के रोटेरियन **50,000 ट्रीज़ इन वन डे अभियान** *के तहत डालचोकी गाँव में पौधे लगाते हुए।*

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से

रोटरी फाउंडेशन (भारत) को मिला सीएसआर पुरस्कार

अगस्त 2025 में नई दिल्ली में ब्रांड्सग्लोबल मीडिया द्वारा आयोजित इंडिया सीएसआर एंड सस्टेनेबिलिटी कॉन्क्लेव 2025 में रोटरी फाउंडेशन (भारत) को 'एक्सीलेंस इन नेशनवाइड सीएसआर इम्प्लीमेंटेशन' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान पूरे भारत में विविध समुदायों और विकास क्षेत्रों में लागू की गई रोटरी फाउंडेशन (भारत) की दूरगामी और प्रभावशाली सीएसआर पहलों को मान्यता देता है, जो समाज में स्थायी परिवर्तन लाने में सहायक रही हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों (पीएसयू), सरकारी संस्थानों, कॉरपोरेट्स, सार्वजनिक नीति और सीएसआर के लिए समर्पित एक डिजिटल मंच इंडियन पीएसयू सीएसआर इम्पैक्ट अवॉर्ड्स 2025 में रोटरी फाउंडेशन (भारत) को 'बेस्ट एनजीओ ऑफ द ईयर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रत्येक रोटेरियन, प्रत्येक वर्ष

टीआरएफ वार्षिक कोष को दिया गया आपका योगदान रोटरी सदस्यों को भारत और दुनिया भर के समुदायों में सकारात्मक परिवर्तन लाने और सार्थक कार्यों को अंजाम देने के लिए सशक्त बनाता है। जब आप वार्षिक कोष - SHARE में दान करते हैं तो आपकी दान राशि स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं, छात्रवृत्तियों और अन्य गतिविधियों को समर्थन देने वाले अनुदानों में परिवर्तित हो जाती है। आज ही योगदान दें rotary.org/donate पर अधिक जानकारी के लिए my.rotary.org/annual-fund पर जाएं।

2025-26 ऐन्यूअल फंड एक्सलन्स अवॉर्ड

हम 31 अगस्त 2025 को सम्पन्न हुए ऐन्यूअल फंड अर्ली अचीवर अवॉर्ड में आपकी उत्साहपूर्ण भागीदारी के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। अब हम आपको आगामी अवसर के बारे में बताने के लिए उत्सुक है - ऐन्यूअल फंड एक्सलन्स अवॉर्ड जो विशेष रूप से ज़ोन 4, 5, 6 और 7 के मंडलों के लिए है। योग्यता प्राप्ति के लिए मंडल को या तो वार्षिक कोष में कम से कम 250,000 यूएस डॉलर का योगदान करना होगा या फिर 31 अक्टूबर 2025 तक दिशा के दौरान निर्धारित वार्षिक कोष लक्ष्य का 50 प्रतिशत प्राप्त करना होगा। विजेताओं को नवंबर 2025 में दिल्ली इंस्टीट्यूट में सम्मानित किया जाएगा।

एंडोमेंट फंड चैलेंज अवार्ड्स

अक्षय निधि चुनौती पुरस्कार टीआरएफ न्यासी डॉ भरत पंड्या के मार्गदर्शन में ज़ोन 4, 5, 6 और 7 के अक्षय निधि/प्रमुख योगदान सलाहकारों ने रोटरी वर्ष 2025-26 के लिए चारों ज़ोनों के मंडलों के लिए एक विशेष अक्षय निधि पुरस्कार स्थापित किया है।

1 जुलाई से 31 अक्टूबर 2025 के बीच अक्षय निधि में न्यूनतम 50,000 डॉलर का योगदान करने वाले मंडल, रोलिंग ट्रॉफी तथा ज़ोन-स्तरीय पुरस्कारों के लिए पात्र होंगे। अक्षय निधि में किया गया आपका योगदान विश्वभर के वंचित समुदायों के लिए दीर्घकालिक एवं स्थायी सहयोग सुनिश्चित करता है। अधिक जानकारी के लिए कृपया अपने ज़ोन के अक्षय निधि/प्रमुख योगदान सलाहकार से संपर्क करें। ■

LBW

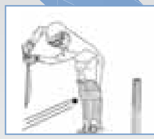

सदमे की घड़ियाँ

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

क्या आपको कभी गाय ने दौड़ाया है? मुझे तो दौड़ाया है। और यकीन मानिए यह बहुत डरावना अनुभव हो सकता है। यह बात 1976 की है। मैं अपनी बहन से उसके सरकारी फ्लैट में मिलने गया था। चूंकि वह एक सरकारी कॉलोनी थी इसलिए आमतौर पर वहाँ सड़कों पर कोई जानवर इधर-उधर घूमते, बैठे या मंडराते नहीं दिखाई देते थे।

मेरी मोटरसाइकिल गेट के बाहर खड़ी थी और जब मैं अपनी बहन को अलविदा कहने के बाद बाहर आया तो मैंने देखा कि एक गाय सड़क के दूसरी तरफ खड़ी थी। वह सड़क लगभग 30 फीट चौड़ी थी और उसके दोनों ओर नालियाँ थीं। गाय शांत भाव से मेरी ओर देख रही थी और कुछ चबा रही थी। उसमें कोई आक्रामकता नहीं थी। मैं अपनी बाइक पर चढ़ा और उसे किक मारकर स्टार्ट करने ही वाला था कि अचानक, बिना किसी कारण के वो गाय मेरी तरफ दौड़ने लगी। मैं पूरी तरह से चौंक गया जैसा कि होता है। घबराहट में मैंने बाइक गियर में डाली और तेजी से निकल गया। लेकिन डर के मारे मैं ईंधन की सप्लाई चालू करना भूल गया।

थोड़ी ही देर में बाइक झटके खाकर बंद हो गई। गाय अब भी मेरी तरफ आ रही थी और मैंने वही किया जो कोई भी आत्म-सम्मान वाला आदमी करता - मैं बाइक से कूद गया, उसे ज़मीन पर गिरने दिया और पास ही की एक पाँच फुट ऊँची झाड़ी को फाँदकर एक अजनबी के बाग़ में जा कूदा। गाय मेरे बगल से निकलकर जल्दी ही गायब हो गई। लेकिन मैं बुरी तरह कांप रहा था और खुद को बेहद मूर्ख महसूस कर रहा था। मेरे घुटने थरथरा रहे थे और डर के मारे मेरे हाथ काँप रहे थे। मुझे कुछ वक्त लगा खुद को संभालने में और फिर मैं बाइक लेकर वहाँ से निकल सका। यह बात 49 साल पहले की है लेकिन आज भी जब मैं उस डर और शर्मिंदगी को याद करता हूँ तो मेरे शरीर में सिहरन दौड़ जाती है। भगवान की इतनी सारी रचनाओं में से मुझे एक गाय ने दौड़ाया!

अगली बार ऐसा 2012 में हुआ। मैं उस समय एक साल के लिए चेन्नई में रह रहा था। मैं रोज़ की तरह सुबह 5 बजे सैर पर निकला था। उस समय तक अंधेरा ही था और सड़कें खाली थी - या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा। मैं अंदर की तरफ एक गली में था, जब अचानक एक घर के अंदर से एक दो-पहिया वाहन तेज़ी से निकला। वो इतनी तेज़ था कि अगर मैं एकदम से रास्ते से न हटता तो मुझे टक्कर लग जाती। 36 साल पहले की उस गाय की तरह ही, यह चालक भी मुझे टक्कर मारकर निकल गया, बिना इस बात की परवाह किए कि मुझे कितना झटका लगा - और यह कि मैं एक कार से टकराकर अपना घुटना चोटिल कर बैठा। मेरा टखना भी बुरी तरह मुड़ गया था और वह अब भी कभी-कभी दर्द करता है। तब से मुझे गायों और खासकर दो-पहिया वाहनों से बहुत डर लगने लगा। नए इलेक्ट्रिक स्कूटर तो बिल्कुल आवाज़ नहीं करते। वे बगल में से सांप की तरह चुपचाप निकल जाते हैं। और अगर उसका चालक फोन को घूरता हुआ चल रहा होगा तो आपको टक्कर लग सकती है।

मुझे हमेशा लगता था कि सड़कों पर असली खतरे बस शांत गायें और बेआवाज़ स्कूटर्स ही हैं - लेकिन कुछ हफ्ते पहले मेरे सामने एक नया खतरा आया: बैकपैक्स (पीठ पर टांगने वाले बैग)। हुआ कुछ यूँ कि मैं एक लिफ्ट में चढ़ने की कोशिश कर रहा था। देखने पर तो उसमें केवल तीन ही लोग थे। यह एक ऑफिस की बड़ी ईमारत थी और लिफ्ट भी काफ़ी बड़ी थी। फिर भी मैं अंदर नहीं जा पा रहा था। मैंने बार-बार धक्का देकर अंदर घुसने की कोशिश की लेकिन मुझे कोई जगह नहीं मिली। लिफ्ट के दरवाज़े बंद हुए और मेरे कंधों को बुरी तरह दबा दिया। मैं जैसे-तैसे अंदर घुस पाया। जब लिफ्ट नीचे जाने लगी तब मुझे असली वजह समझ में आई। लिफ्ट में तीन लोग थे - दो पुरुष और एक महिला - लेकिन उन तीनों ने ऐसे बैकपैक्स पहने हुए थे जो दो फीट बाहर निकले हुए थे। मानो हर व्यक्ति के साथ एक और व्यक्ति जुड़ा हो। तीन लोगों के बैकपैक्स का मतलब हुआ छह और लोग - तो कुल मिलाकर वे तीन लोग मिलकर नौ लोगों जितनी जगह घेर रहे थे। और मैं दसवां था - इसलिए मुझे इतनी मुश्किल हुई अंदर आने में।

तो जब भी आप बाहर निकलें, गायों, इलेक्ट्रिक स्कूटर्स और बैकपैक्स से सावधान रहें। ये वाकई में आपको चोट पहुँचा सकते हैं।■

सम्मेलन के पल

पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी (दाएँ) और पीआरआईडी पी टी प्रभाकर।

***ऊपर:** पीआरआईडी अशोक महाजन और रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम।*

***बाएँ:** रो ई निदेशक के पी नागेश और पीआरआईडी अनिरुद्धा रॉयचौधरी।*

***नीचे:** रो ई निदेशक नागेश और पीआरआईडी राजू सुब्रमणियन।*

***बाएँ से:** रो ई निदेशक नागेश, पीआरआईपी के आर रविंद्रन और रो ई निदेशक मुरुगानंदम।*

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹40
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26